

रमज़ान मुबारक

المختصر في مسائل الصيام

إعداد :

عطاء الرحمن بن عبد الله سعیدی

संकलन:

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

مراجعة : أفروز عالم مدنی حفظه الله

संशोधक : अफ्रोज़ आलम मदनी

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوسيعية الجاليات بالأحساء

العنوان: اہل اہلسنا اسلامیک سنٹر ہو فوکس

Al-Ahsa Islamic center

p.o.Box 2022 Al -Ahsa 31982

फोन: 03-5866672 फेक्स नं: 5874664 सऊदी अरब

भूमिका

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا ،
مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلٌّ لَهُ وَمَنْ يُضْلِلُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ، أَشْهَدُ أَنَّ لَا
إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ، صَلَّى اللَّهُ وَسَلَّمَ

عليه وعلي آلہ و أصحابہ و من تبعہ الي یوم الدین وبعد

رمज़ान मुबारक का सौम(रोज़ा) इस्लाम का चौथा आधार है जिसे अल्लाह पाक ने हमारे ऊपर अनिवार्य तथा फर्ज़ किया है, ताकि हम तक्वा (अल्लाह से भय) का मार्ग अपनायें, और यह उसी समय हो सकता है जब हमें सम्पूर्ण रूप से रमज़ान तथा सौम (रोज़े) के मसायल का अच्छे प्रकार से ज्ञान हो, बहुत खोजने के बाद मुझे हिन्दी भाषा में इस विषय पर कोई ऐसी पुस्तक प्राप्त न हुई जो प्यास बुझा सके तथा प्रत्येक वर्ष रमज़ान के महीने में बहुत से लोग इस प्रकार की पुस्तक माँगते थे विशेषतः नये मुस्लिम भाई इसी कारण मैं ने अल्लाह से प्रार्थना किया तथा उसकी दया से आज यह पुस्तक आपके हाथों में है। इस पुस्तक में सरल हिन्दी भाषा में जिस से सभी वर्ग के लोग लाभ उठा सकते हैं रमज़ान तथा रोज़े के मुख्तसर (संछिप्त) मसायल को विश्वसनीय उलमा की पुस्तकों से इकट्ठा किया है और

इखतेलाफी मसायल में शैख इब्ने बाज़, इब्ने उसैमीन, इब्ने तैमिय्यह रहेमहुमुल्लाह की मत को प्रधानता और तरजीह दिया है। इसी प्रकार सदीसों के सही और जईफ़ के बारे में अल्लामह अल्बानी रहेमहुल्लाह की राय पर ऐतेमाद किया है।

साथ ही साथ इस बात का मैं ने पूरा ध्यान दिया है कि कम पढ़े लिखे पुरुष तथा महिला इस से लाभ उठा सकें।

मैं अपने उन सभी भाइयों का आभारी हूँ तथा दुआ करता हूँ कि अल्लाह पाक उन सब के लिए इसे सदकए जारियह(जारी दान) बनाए तथा संसार और प्रलोक में अच्छे से अच्छा बदला दे जिन्हों ने इसे लोगों तक पुहँचाने में मेरा सहयोग किया है विशेषत : अपने प्रिय मित्र शैख अफ़रोज़ आलम मदनी : दाऊँ एवं आवाहक : इस्लामिक सेंटर अहसा जिन्हों ने पूरी बारीकी से पूरी पुस्तक पढ़ा तथा अपने लाभदायक सलाह एवं सुझाव से सम्मानित किया। और अपनी सपुत्री हमना तथा अपनी वफादार, नेक अपने पति और बच्चों की हितैषी पत्नी का जिन्हों ने इसके लिखने, हदीसैं जमा

करने आदि में मेरा अधिक से अधिक सहयोग किया अल्लाह पाक से दुआ है कि वह मेरे इस कर्म को स्वीकार करले तथा इसे मेरे लिये, मेरे माता पिता, मेरे परिवार, अध्यापकों तथा जिन लोगों ने मेरी तालीम व तरबियत में किसी प्रकार की सहायता किया है तथा सभी सयोगियों के नेकियों में लिख कर नक्क से मुक्ति दे, आमीन।

इस पुस्तक के पढ़ने वालों से अनुरोध है कि वे मुझे और मेरे परिवार को अपने नेक दुआओं में याद रखें।

आपका अपना :

अताउर्रहमान पुत्र अबदुल्लाह सईदी
हरहटा, तुलसीपुर, जिला : बलरामपुर, यु.पी.

271208

आवाहक : इस्लामिक सेंटर अहसा, होफूफ
सऊदी अरब

ataurrahmansayeidi@gmail.com

youtube: ata sayeidi

यह पुस्तक

अल्लाह की निकटता प्राप्ति के लिए (विशेष रूप से) इस युग में सबसे शुभ कार्य अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों एवं सुन्नतों को सरल तथा आसान शैली में लोगों तक पहुँचाना भी है, ताकि प्रत्येक सामान्य व्यक्ति उसको समझ सके और सही ढंग से सुन्नत के अनुसार उपासना कर सके। निः सन्देह सौम (रोजा) एक महत्वपूर्ण उपासना है, अतः इस विषय पर हिन्दी भाषा में एक सरल पुस्तक की अति आवश्यकता को हमारे प्रिय फाजिल शैख अताउर्रहमान सईदी मदनी हफेज़हुल्लाह ने महसूस किया और अपनी व्यस्तता तथा बीमारी के बावजूद इस पुस्तक का सरल हिन्दी भाषा में संकलन किया, जिसको मैं ने शुरू से अन्तिम तक पढ़ा और मुझे अति लाभदायक लगी, वास्तव में यह पुस्तक वर्तमान युग अनुसार रमज़ान और रोज़े के अधिकतर आदेश तथा मसले का संक्षिप्त संग्रह है।

क्यों कि इसे कुरआन करीम तथा सही सदीसों और विश्वसनीय उलम-ए-केराम के राजेहू मतों अनुसार लिखा गया है। अल्लाह से प्रार्थना है कि अल्लाह हमारे फाज़िल शैख की इस परिश्रम को स्वीकार लाभदायक बनाए तथा उनके लिए और उनके माता-पिता, गुरुओं तथा समस्त सहयोगियों के लिए सद्क-ए-जारिया (सदेव पुण्य देनेवाला) बनाये, तथा इस्लाम के प्रचार-प्रसार में लाभदायक साबित करे।

| آمين

जिनके भी हाथ यह पुस्तक लगे उन से अनुरोध है कि पढ़कर अपने साथियों को दें हो सकता है उसे भी लाभ हो।

अफरोज आलम मदनी

दाईः احسان اسلامیک سینٹر ہوٹل ۹۶- ۰۶- ۲۰۱۵ء
(سऊदी अरब | a.alam_m@yahoo.com)

رمज़ाن مہینے کی پرمुख تھاتیاں

کُرْأَنِ تथاً حَدِيْسَ مِنْ رَمَضَانَ كِيَ مَهِينَے کِيَ وِبِّهِ نَلَمَنْ نَلَمَنْ پَرَمُخَتَّاَيَنْ آرَىَ هَيْ هَمَ نِيمَنَ مِنْ كُوچَ مَهَتَّاَ وَ پُورَنْ پَرَمُخَتَّاَيَنْ لِيَخَ رَهَ هَيْ هَيْ |

1- اَللَّٰهُ تَعَالٰٰلَا نے لोگوں کی ہدایت کا سامان کُرآن پاک عتارنے کے لیے سارے مہینوں میں اسی مہینے کی مُبَارک تھا کُدُّ(مَهَتَّاَ) والی رات کو چونا ।

اَللَّٰهُ تَعَالٰٰلَا نے فرمایا:

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى
وَالْفُرْقَانِ (سورۃ بقرۃ: 185)

(رمज़ाن کا مہینا وہ ہے، جس میں کُرآن عتارا گयا । جو لوگوں کے لیے ہدایت (مَارْغِدَرْشَك) ہے، تھا جو ہدایت اور حکم و باتیل (سات्यا سत्य) کے بیچ فَسِيلَا کرنے والा (نِيرْئَيَك) ہے) (سُورَةُ بَقْرَةٍ: 185)

2- اسی مہینے میں اَللَّٰهُ پاک نے دوسری کیتابیں بھی عتاری واسیلہ رجیل لالہ اُنہو بیان کرتے ہیں کہ اَللَّٰهُ کے رسُول سلسلہ لالہ اُلَّٰہیں واسلِلَم نے فرمایا: (إِنَّمَا مَا أَنْزَلْنَا مِنْ قُرْآنٍ إِلَّا هُدًى وَرَحْمَةً لِلنَّاسِ وَمَبْشِّرًا بِالْمُتَّقِينَ)

की पहली रात में उतारे गये, तौरत 6 रमज़ान तथा इन्जील 13 रमज़ान और कुरआन 24 रमज़ान में उतारा गया ।) मुस्नद अहमद, भाग : 4 पेज 107 कुछ लोगों ने इस हदीस को जईफ़ कहा हैं मगर अल्लामह अल्बानी رَحْمَةُ اللَّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَامٌ وَبَرَّهُ اَللَّٰهُ اَكْبَرُ , 1575 में इसकी सनद को हसन कहा है,))

3- रमज़ान के महीने में स्वर्ग(जन्नत)के द्वार खोल दिये जाते हैं । नर्क(जहन्नम) के द्वार बन्द कर दिये जाते हैं । शैतानों तथा सरकश जिन्नातों को जकड़ दिया जाता है । इस महीने में दया तथा रहमत और आकाश के द्वार खोल दिये जाते हैं । इसी महीने में पुकारा जाता है कि हे भलाई के चाहने वाले आगे बढ़, हे बुराई चाहने वाले पीछे हट । रमज़ान की हर रात अल्लाह पाक कुछ लोगों को नर्क से मुक्ति करता है ।

ابو حُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُ أَنَّهُ قَالَ لِلنَّاسِ إِذَا كَانَ أَوَّلُ لَيْلَةٍ مِّنْ رَمَضَانَ صَفَدَتِ الشَّيَاطِينُ وَمَرَدَةُ الْجِنِّ وَغُلَفَتِ

أَبْوَابُ النَّارِ فَلَمْ يَفْتَحْ مِنْهَا بَابٌ وَفُتُحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ فَلَمْ يَغْلُقْ مِنْهَا بَابٌ وَيَنْدِيَ مَنَادٍ يَا بَاغِيَ الْخَيْرِ أَقْبَلَ وَيَا بَاغِيَ الشَّرِ أَقْسَرَ وَلَلَّهُ عَتْقَاءُ مِنَ النَّارِ وَذَلِكَ كُلُّ لَيْلَةٍ

जब रमज़ान की पहली रात होती है : तो शैतान तथा सरकश जिन जकड़ दिये जाते हैं, और नर्क के द्वार बन्द कर दिये जाते हैं अतः उसका कोई द्वार नहीं खुलता है, और स्वर्ग के द्वार खोल दिये जाते हैं तथा उसका कोई द्वार बन्द नहीं रहता है, पुकारने वाला पुकारता है हे भलाई के चाहने वाले आगे बढ़ और हे बुराई के चाहने वाले पीछे हट, तथा हर रात अल्लाह तआला कुछ लोगों को नर्क से मुक्त करता है) और बुखारी में है कि (आकाश के द्वार खोल दिये जाते हैं) और सही मुस्लिम में है कि : रहमत के द्वार खुल जाते हैं ।

(इब्ने माजह, सही बुखारी : ह०न॰ 1898. सही मुस्लिम, ह०न॰ 1899)

यह हदीس पढ़ने के बाद यह प्रश्न आसकता है कि हम रमजान में भी बहुत सारी बुराइयाँ तथा पाप के काम होते हुये देखते हैं तो अगर शैतानों तथा सरकश जिन्नातों को जकड़ बन्द कर दिया जाता है तब ऐसा नहीं होना चाहिये ? तो इसका कई उत्तर उलामा ने दिया है :

ک - **उस(रोज़ादार)सौम** रखने वाले पर शैतानों की चाल नहीं चल पाती है जो सौम की शर्तों तथा आदाब का पुरा ध्यान रखता है ।

ख - या केवल सरकश शैतानों को जकड़ा जाता है सबको नहीं जैसा कि कुछ हृदीसों में इसका व्यान है ।

ग - या इसका अर्थ है कि इस महीने में पाप तथा बुराइयाँ कम हो जाती हैं और इसे हम महसूस भी करते हैं दूसरे महीनों के हिसाब से लोग रमज़ान में पापों से अधिक बचते हैं ।

घ - सारे शैतानों को जकड़ने के बाद बुराइयों के पाये जाने के कारण पापी दिल, बुरी आदतें तथा दुष्ट एवं बुरे मनुश्य भी है क्यों कि हर बुराई तथा पाप की जड़ शैतान ही नहीं है। (शरहनववी, भाग : 7 पेज 149, फतहुल्बारी-इब्ने हजर-भाग : 4 पेज 114)

4- رمज़ान के महीने में एक ऐसी रात है जो हज़ार महीने से बेहतर है :

अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लंबी हृदीस में फरमाया है :

(.....اللّٰهُ كَمَا لَمْ يَرَ هُنَّا فِي أَنْوَارٍ.....) अल्लाह के लिए रमज़ान में एक ऐसी रात है जो हज़ार महीने से बेहतर है, जो इस रात की अच्छाई तथा भलाई से महरूम (असफल) हो गया तो वह असफल हो गया)-इब्ने माजह, हदीस नं 1644, अल्लामह अल्बानी ने सही इब्ने माजहः भाग : 2 पेज 159 में इस हदीस को हसन सही कहा है ।

5- रमज़ान के महीने में दुआयें कुबूल होती हैं : वैसे तो अल्लाह पाक सदेव दुआओं को सुनता और कुबूल करता है प्रन्तु रमज़ान में विषेश रूप से दुआयें कुबूल करता है, अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : [अल्लाह पाक के पास हर इफ्तार के समय कुछ लोग नक्क से मुक्त होने वाले हैं तथा यह (रमज़ान)की हर रात में है] (सही इब्ने माजह, भाग : 2 पेज 59)

यद रहे दुआ इबादत है इसलिए हर प्रकार की दुआ मात्र अल्लाह पाक ही से की जायेगी । किसी नवी, रसूल या वली से दुआ करना शिर्क है जो बहुत बड़ा पाप है । अल्लाह सारे मुसलमानों को शिर्क से बचाये । آمین

6- रमज़ान का सौम(रोज़ा) पापों को मिटा देता है ।

अबूहुरैरह रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है : (पाँच समय की सलातें (नमाज़ें) एक जुमा से दूसरे जुमा तक तथा रमज़ान से रमज़ान तक अपने बीच किए हुये पापों को मिटा देता है जब बड़े पापों से बचा जाये) सही मुस्लिम, हदीس नं 233

7- रमज़ान का महीना बख्शिश तथा क्षमादान का महीना है :

अबूहुरैरह रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है : [जिसने ईमान तथा सवाब के इरादे से रमज़ान का सौम (रोज़ा) रखा तो उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जायेंगे] सही बुखारी, हदीस नं 38 सही मुस्लिम हदीस नं 860-

ईमान तथा सवाब के इरादे का अर्थ यह है कि कुर्�आन तथा हदीस में सौम(रोज़े)के अनिवार्य (फरज़) होने और उसकी फज़ीलत (प्रमुखता) के बारे में जो कुछ बयान आया है उसकी तसदीक(पुष्टि) करते हुए अल्लाह पाक से उसका सवाब चाहे तथा अपने सौम में इखलास

(نیسخوار्थت) پیدا کرے اور سویم کے سارے آداب کا دیکھان رکھے ।

8- پاپوں کے کشما کے لیے رمذان کا مہینا سब سے بہتر مولیٰ سमیٰ ہے :

ابوہُررہ رضیٰ اللہ عَنْہُ انہُ بیان کرتے ہیں کہ رَسُولُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖہ وَسَلَّمَ میمِنْ بَرَ پر چढ़ے تو آپ نے تین بار کہا آمین، آمین، آمین । آپ سے پूछا گیا ہے اُللّاہ کے رَسُولُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖہ وَسَلَّمَ اس سے پہلے اُسے نہیں کرتے تھے ؟ آپ نے اُنکا دیکھا : [جیبیل نے مُعْذن سے کہا کہ اُس آدمی کی ناک دُبُل میمِنی سے بھر جائے جو رمذان پاچے تथا اُس کے پاپ کشما ن کیا جائے، تو میں نے آمین کہا । فیر کہا : کہ اُس آدمی کی ناک دُبُل میمِنی سے بھر جائے جس کے سامنے میرا نام آیا اور وہ مُعْذن پر دُرُد ن بھے، تو میں نے آمین کہا، فیر کہا : کہ اُس آدمی کی ناک دُبُل میمِنی سے بھر جائے جو اپنے ماتا پیتا یا اُنہم سے کسی اک کو پاچے اور سُرگ میں ن دا خیل ہو سکے، تو میں نے آمین کہا]۔ اُللّاہ مُحَمَّدؐ نے سہی اُدبوُلؐ

मुफरद में हसन और सही कहा है-तथा इसकी असल सही मुस्लिम में ह०न० 2551 में है ।

9- उमरह

सवाब में रमज़ान का उमरह नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग हज्ज के बराबर है : अल्लाह के रसूल ने उम्मे सिनान से फरमाया था [रमज़ान का उमरह हज्ज के बराबर या मेरे संग हज्ज के बराबर है] बुखारी, 1782 मुस्लिम, 1256)

10- रमज़ान का सौम रखने वाला सिद्धीक़ तथा शहीद में से होगा :

अमर बिन मुर्रह जुहनी कहते हैं कि : कुज़ाअह कबीले का एक आदमी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया ,और उसने आप से कहा ! हे अल्लाह के रसूल, अगर मैं गवाही दूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं, और आप अल्लाह के रसूल हैं, तथा पाँच समय की سलातें(नमाजें) अदा करूँ, ज़कात दूँ, रमज़ान का सौम रखूँ तथा तरावीह पढ़ूँ तो मैं किन लोगों में से हूँगा ? आप ने फरमाया :सिद्धीक़ तथा शहीदों में

से)- इब्नेखुज़ैमह ह०न० 2212- अल्बानी रहैमहुल्लाह ने सही इब्नेखुज़ैमह भाग : 3 पेज 340 में हसन कहा है।

11- रमज़ान का महीना सखावत, फय्यज़ी और दानशीलता का महीना है :

नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे अधिक फय्याज़ थे और रमज़ान में जब जिब्रील आप से मुलाक़ात करते तो आप की फय्याज़ी बढ़ जाती आप रमज़ान में दया भरी हवा से भी अधिक फय्याज़ हो जाते। मुस्लिम-ह०न० 2308-

इसके अतिरिक्त रमज़ान के महीने की अनेक फज़ीलतें तथा खुसूसियतें हैं।

सियाम(रोज़ों) की प्रमुखतायें (फज़ीलतें)

अल्लाह पाक ने सौम (रोज़े) जैसे अहम इबादत की बहुत सारी फज़ीलतें तथा खुसूसियतें बयान किया है हम निम्न में उदाहरणस्वरूप कुछ फज़ीलतें लिख रहे हैं अल्लाह पाक हम सब को इस इबादत के अदा करने की तौफीक(क्षमता)दे आमीन।

1- سौم (रोज़ह) अल्लाह के तक्वा एवं भय के साधनों में से एक बलिष्ट साधन है। अल्लाह पाक ने फरमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصَّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَفَقَّنُ

(ऐ ईमानवालो ! तुम पर सौम(रोज़े) अनिवार्य तथा फर्ज़ किये गये, जिस प्रकार से तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किये गये थे, ताकि तुम तक्वा(अल्लाह से भय) का मार्ग अपनाओ - [सूरह बक़रह:183]

2- سौम(रोज़ह) मुसलमान के लिये बेहतर है अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(परन्तु तुम्हारे पक्ष में उचित कर्म सौम(रोज़े) रखनाही है यदि तुम जानते हो। [सूरह बक़रह-184]

3- سौम(रोज़ह) अल्लाह की बखशिश(क्षमादान) और अधिक सवाब प्राप्त करने का बलिष्ट साधन है। अल्लाह पाक ने फरमाया :

{إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ
وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ
وَالْخَاسِعِينَ وَالْخَاسِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّانِمِينَ
وَالصَّانِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجُهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالْأَذَاكِرِينَ اللَّهُ
كَثِيرًا وَالْأَذَاكِرَاتِ أَعَدَ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا}

(निःसंदेह मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें, इतातअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, सब करने वाले मर्द और सब करने वाली औरतें, विनती करने वाले मर्द और विनती करने वाली औरतें, दान(सदका) करने वाले मर्द और सदका करने वाली औरतें, रोज़े(ब्रत) रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें, अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाले मर्द और अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाली औरतें, और बहुत ज्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और वालियाँ, इन सब के लिए अल्लाह ने बड़ी मग़फिरत(क्षमादान) और बड़ा अज्ञ (पुण्य) तैयार कर रखा है। [सूरह अहङ्काब-35]

4- سائم نرک سے بچنے کے لیے ڈال اور مज़بُوت کیلہ ہے ।

وَعَنْ جَابِرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ
الصِّيَامُ جَنَّةٌ يَسْتَجِنُ بِهَا الْعَبْدُ مِنَ النَّارِ

(نبی سلیلہ اللہ علیہ السلام نے فرمایا :
روزے ڈال ایک بچاوا ہے جس سے آدمی نرک سے
بچاوا کرے گا ।

مُسْنَدُ أَحْمَادٍ، أَلْبَانِيَّ رَاهِمُ حُلَّلَاهُ نَعَمْ سَهْرِيَّ بَ وَ
تَرَهِيَّ بَ مَمْ حَسَنَ كَهْ حَلَّهُ حَلَّهُ، حَلَّهُ ۚ ۹۸۱)

5- سائم شہವت(کام-واسنا) سے بچنے کے لیے ڈال ہے ।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا
مَعْشَرَ الشَّبَابِ مَنْ أَسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاءَةَ فَلْيَتَرْوَجْ فَإِنَّهُ أَغْضَبُ
لِلْبَصَرِ وَأَحْسَنُ لِلْفَرْجِ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَهُ
وَجَاءَ (متفق عليه)

(ابدُوللہ بن مسعود رجیلہ اللہ علیہ السلام نے انہ کہتے ہیں
کہ رسلوں سلیلہ علیہ السلام نے ہم لوگوں سے
فرمایا : ائے نبیوں کو تुम میں سے جو ویواہ کرنے
کی شکیت رکھتا ہے وہ ویواہ کرے، کیونکہ یہ نیگاہ
نیگاہ کو اधیک نیچی رکھنے والی شرماگاہ کی

अधिक हिफाज़त करने वाली है । और जो शक्ति
नहीं रखता वह सौम(रोज़ा)रखे क्योंकि(रोज़ा)
शहवत(काम-वासना)को तोड़ देने वाला है)
(बुखारी,ह०न॰1905-मुस्लिम,ह०न॰1600)

**6- अल्लाह के मार्ग में एक दिन का
सौम(रोज़ा) नक्क से सत्तर वर्ष दूर कर देगा ।**

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مِنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بَعْدَ اللَّهِ وَجْهَهُ
عَنِ النَّارِ سَبْعِينَ حَرِيفًا (متفق عليه)

(अबू सय्यीद खुद्री कहते हैं कि मैं ने नबी
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाते हुए सुना
कि : जिसने अल्लाह के मार्ग में एक दिन का
सौम(रोज़ा)रख तो अल्लाह तआला उसके चेहरे को
नक्क से सत्तर वर्ष दूर कर देगा ।)(बुखारी,ह०न॰
2840 मुस्लिम,ह०न॰1153)

**7- सौम(रोज़ा)नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
की वसिय्यत है तथा इस के बराबर कोई चीज
नहीं है ।**

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي
الْجَنَّةَ قَالَ عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا عِدْلَ لَهُ (سنن نسائي)

(अबू उमामः कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि आप हमें स्वर्ग में दाखिल करने वाले अमल एवं कर्म के बारे में बतायें ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुम सौम(रोजा)रखो क्योंकि उसके बराबर कोई चीज़ नहीं(सही तरगीब व तरहीबः भाग : 1पेज580-)

एक शिक्षा एवं उपदेश भरी कहानी :-

अबू उमामः ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सेना एक का एक दल तैयार किया तो मैं आप के पास आकर कहा : हे अल्लाह के रसूल! आप मेरे लिए अल्लाह से शहादत (वीरगति) की दुआ फरमायें, तो आपने दुआ की-ऐ मेरे अल्लाह तू इनकी हिफाज़त (रक्षा)कर और इन्हें माले गनीमत (शत्रुधन) दे-तो हम लोगों ने धर्मयुद्ध किया और सुरक्षित भी रहे तथा माले गनीमत भी मिला, कहते हैं कि फिर मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के पास आया और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! मैं लगातार तीन बार आप के पास आया ताकि आप हमारे लिये शहादत की दुआ फरमादें तो आपने कहा की-ऐ मेरे अल्लाह तू इनकी हिफाज़त कर और इन्हें माले गनीमत(शत्रुघ्न) देतो हम महफूज़ भी रहे तथा हमें माले गनीमत भी मिला, अब आप हमें ऐसे अमल तथा कार्य की रहनुमाई करें जिस से मैं स्वर्ग में दाखिल हो जाऊँ। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा : तुम सौम(रोज़े)रखा करो क्यों कि इसके समान कोई चीज नहीं-उसी समय से अबू उमामः के घर में दिन में धुवाँ नहीं दिखता था सिवाये इसके कोई उनके घर मेहमान आजाये, और जब लोग दिन में उनके घर धुवाँ देखते तो जान जाते कि उनके यहाँ कोई मेहमान आया है।

(सही तरगीब व तरहीबः भाग : 1 पेज 580-)

8- सौम स्वर्ग में दाखले का एक बड़ा साधन है

एक दिन रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा ! तुम में से किसने आज सौम (रोज़ा)रखा ? अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा

मैंने, फिर पूछा आज तुम में से किसने जनाज़: में भग लिया ? अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने, फिर पूछा, आज तुम में से किसने मिस्कीन(कंगाल) को खाना खिलाया ? अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने, फिर पूछा, तुम में से किसने आज बीमार का हाल चाल लिया ? अबूबकर ने कहा मैंने, तो रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : किसी दिन भी जिस आदमी में यह खूबियाँ इकट्ठा होंगी वह स्वर्ग में दाखिल होगा (सहीह अदबुल मुफ़्रद-पृ : 195-)

9 - सौम गुनाहों को मिटा देता है ।

रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَنَّهُ الرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهِيُّ عَنِ الْمُنْكَرِ

श्रआदमी का अपने परिवार, धन, पुत्र और पड़ोसी के बारे में फितने से दोचार होने को सलात, सौम, सदक़ा, भलाई का निर्देश देना बुराई से रोकना (जैसा नेक कार्य) मिटा देता है) (मुत्तफ़क अलैह)

- 10- سौم(रोज़ा) का फल अल्लाह ही देगा ।
- 11- सौम(रोज़ा)खने वालों को बे हिसाब फल मिले गा ।
- 12- सौम(रोज़ा)खने वालों को दो प्रसन्नता प्राप्त होगी एक संसार में एक प्रलय के दिन ।
- 13- सौम(रोज़ा)खने वालों के मुंह की बदबू अल्लाह तआला के यहाँ मुश्क से भी अधिक खुशबू दार है ।

क्योंकि यह अल्लाह ही जानता है कौन सौम से है इसमे दिल से दिखावा नहीं पाया जाता ,यह अल्लाह तथा बन्दे के बीच भेद है,अल्लाह सौम को पसन्द करता है,सौम संसार तथा आखिरत की खुशनसीबी है नवी सलललाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस कुद्सी में फरमाया :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللَّهُ كُلُّ عَمَلٍ ابْنُ آدَمَ لَهُ إِلَّا الصَّيَامُ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ وَالصَّيَامُ جُنَاحٌ وَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمٍ أَحَدُكُمْ فَلَا يَرْفَثُ وَلَا يَصْنَعُ فَإِنْ سَابَهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلْيَقُلْ إِنِّي أَمْرُوْ صَائِمًا وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَخُلُوفٌ فِيمَا الصَّائِمُ أَطَيْبٌ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ رِيحٍ

الْمُسْكُ لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ يَفْرَحُهُمَا إِذَا أَفْطَرَ فَرَحَ وَإِذَا لَقِيَ رَبَّهُ
فَرَحَ بِصَوْمِهِ

(नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक ने फरमाया : आदम की संतान का हर कार्य उसके लिये है सिवाये सौम(रोज़ा) के क्यों कि यह मेरे लिए है तथा मैं ही इसका फल दूँगा । सौम(रोज़ा) नर्क से बचाने का सामान है । तो जब तुम में से कोई सौम (रोज़ा) रखे तो बुरी बात न बोले और न ही पत्नी से मिलाप(सहभोग) करे, न चीखे चिल्लाए, झगड़ा लड़ाई न करे, और अगर उससे कोई झगड़ा करे या गाली गुलूज करे तो वह यह कहे कि मैं सौम(रोज़ा) से हूँ, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान है! सौम (रोज़ा) रखने वाले के मुंह की बदबू अल्लाह के यहाँ मुश्क से भी अधिक खुशबूदार है, सौम(रोज़ा) रखने वाले को दो खुशी होती है, जब वह इफतार करता है तब और जब अपने अल्लाह से मिले गा तो वह अपने सौम से खुश होगा । (मुत्तफ़्क अलैह)

14-سौم(रोज़ा)तथा कुरआन दोनों कियामत के दिन सिफारिश(अनुशंसा)करेंगे ।

عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الصيام والقرآن يشفعان للعبد يوم القيمة يقول الصيام أي رب منعه الطعام والشهوة فشفعني فيه ويقول القرآن منعه النوم بالليل فشفعني فيه قال فيشفعان

نَبِيٌّ سَلَّلَ اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ وَسَلَّمَ نَبِيٌّ فَرَمَّاَ يَا: سौम(रोज़ा)तथा कुरआन दोनों कियामत के दिन बन्दे के लिए सिफारिश(अनुशंसा)करेंगे सौम (रोज़ा) कहेगा ऐ मेरे रब मैं ने इसे खाने तथा शहवत (काम-वासना) से रोक दिय था तो इसके बारे में मेरी सिफारिश स्वीकार कर, कुरआन कहेगा मैं ने इसे रात में सोने से रोक दिया था तो इसके बारे में मेरी सिफारिश स्वीकार कर । आप ने फरमाया दोनों सिफारिश करेंगे (सही तरगीब व तरहीब भाग : 1 पेज 579 (हसन सही)

15-سौम(रोज़ा) रखने वालों के लिए स्वर्ग में जाने के लिए प्रमुख दरवाज़ा है ।

عن سهل رضي الله عنه : عن النبي صلى الله عليه وسلم قال (إن في الجنة بابا يقال له الريان يدخل منه الصائمون يوم

القيامة لا يدخل منه أحد غيرهم يقال أين الصائمون فيقومون
لا يدخل منه أحد غيرهم فإذا دخلوا أغلى فلن يدخل منه أحد)
आप سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फर्माया : स्वर्ग में एक दरवाज़ः है जिसका नाम रय्यान है जिस से प्रलय के दिन केवल सौम(रोज़ा)रखने वाले ही जायेंगे उनके अतिरिक्त कोई उस से नहीं जा पाये गा कहा जायेंगा कहाँ हैं सौम(रोज़ा)रखने वाले तो वह तय्यार हो जायेंगे और जब सभी सौम(रोज़ा) रखने वाले दाखिल हो जायें गें तो बन्द कर दिया जाये गा ।
(बुखारी व मुस्लिम)

अल्लाह पाक हमें नेक लोगों ,अपने परिवार तथा माता पिता के साथ स्वर्ग में रय्यान से प्रवेश करने का अवसर दे । आमीन

सौम(रोज़ा) के लाभ

निःसंदेह सौम(रोज़ा)अल्लाह से डरने वालों के लिए लगाम,सैनिकों के लिए ढाल, सदाचारों के लिए परिश्रम और सारी इबादतों के प्रकार अल्लाह की विशेष इबादत है । सौम(रोज़ा)रखने वाला अपनी मन पसन्द चीजें अल्लाह की प्रसन्नता के लिए छोड़ देता है । सौम(रोज़ा)बन्दे तथा अल्लाह के बीच एक

भेद है जिसे अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता और यही सौम(रोज़ा)की वास्तविकता(हकीकत)है अल्लाह ने सौम(रोज़ा) को अपने बन्दों पर दया करते हुए उनके असंख्य लाभ के लिए अनिवार्य किया है हम निम्न में सौम(रोज़ा) के कुछ मुख्य लाभ लिख रहें हैं ।

- 1-** सौम(रोज़ा) अल्लाह के भय का साधन है ।
- 2-** सौम(रोज़ा)अल्लाह के कृपा के आभार अदा करने का साधन है ।
- 3-** सौम(रोज़ा)हर पाप से बचने तथा विशेष रूप से विषयवासनाओं (नफसानी ख्वाहशात)के नियंत्रण का साधन है ।
- 4-** सौम(रोज़ा)दिल में कंगालों ,निर्धनों के बारे में दया तथ अल्लाह की दया का एहसास पैदा करता है और दिल अल्लाह के जिक व अज़कार के लिए खाली रहता है ।
- 5-** सौम(रोज़ा) बन्दे में सब्र(सन्तोष)जैसी अच्छाई पैदा करता है ।
- 6-** सौम(रोज़ा) अच्छा स्वस्थ्य प्रदान करता है ।
आदि

(سौم)रोजा का अर्थ :

अरबी भाषा में सौम (रोजह) का शाब्दिक अर्थ रुकना है, और शास्त्रीय परिभाषा (शारथी इस्तिलाह) में सुबह सादिक (प्रत्यूष) से लेकर सूर्य के ढूब जाने तक अल्लाह पाक की नज़्दीकी (निकटता) प्राप्त करने के लिए इबादत तथा उपासना के इरादे से खाने पीने, और तों से हमविस्तरी (सहभोग) तथा सौम (रोजह) तोड़ देने वाली अन्य चीज़ों से रुकने तथा बचने को (सौम)रोजह कहते हैं।

رمضان کے مہینے کे (سौم)रोजा का हुکوم ।

کुरआन व हدیس और उम्मत के इजमा (सहमति) से साबित है कि हर बालिग, बुद्धिमान, सौम रखने की शक्ति रखने वाले, निवासी (मुक़ीम), सौम की धार्मिक रुकावट से खाली मुसलमान मर्द तथा औरत पर पूरे महीने का सौम (रोजह) अनिवार्य तथा फर्ज़ है। और यह इस्लाम का चौथा रुक्न तथा

आधार है, जिसके बिना इस्लाम बाकी नहीं रह सकता।

अतः अगर कोई आदमी इसके अनिवार्य तथा फ़रज होने को नकारे तो वह काफिर हो जायेगा और अगर कोई बिना शर‘ी कारण के इससे लापरवाही करे तो वह अल्लाह के प्रकोप तथा नर्क का हकदार होगा इस पर पूरी उम्मत का इत्तिफ़ाक है, अल्लाह ने फरमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ – البقرة : ١٨٣

[हे ईमान वालों तुम पर(सौम)रोजे अनिवार्य किये गये हैं जिस प्रकार से तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किये गये थे ताकि तुम तक्वा का मार्ग अपनाओ] (सुरह बकरः-183)

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهَدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلِيصْمُمْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَيْهِ سَفَرٌ فَعَدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخْرَ ۖ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ ۖ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۖ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ ۖ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَأْكُمْ ۖ وَلَعَلَّكُمْ شَكُورُونَ

[رمज़ान का महीना वह है, जिस में कुरआन उतारा गया है। जो लोगों के लिए हिदायत तथा

(सत्यासत्य)हक़ और बातिल के बीच (निर्णायक) फैसेला करने वाला है ,तुममें जो भी इस महीने को पाए, उसे (सौम)रोजह खबना चाहिये, हाँ जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिन्ती तथा गणना पूरी करनी चाहिए अल्लाह की इच्छा तुम्हारे साथ सरलता की है, कठोरता की नहीं, वह चाहता है कि तुम गणना पूरी कर लो, और अल्लाह के प्रदान किये गये (मार्गदर्शन) हिदायत के अनुसार उसकी (महिमा)बड़ाई का शुक्र वर्णन करो एवं उसके आभारी रहो] (सूरह बकरः185)

हदीس شریف مें है कि :

عَنْ أَبْنَىْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (بَنِي الإِسْلَامِ عَلَى خَمْسٍ شَهَادَةً أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّداً رَسُولَ اللَّهِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَصَوْمَ رَمَضَانَ وَحْجَ الْبَيْتِ)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने करमाया : इस्लाम के आधार पाँच चीज़ों पर है, इस बात की गवाही देना कि

अल्लाह तआल के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, सलात (नमाज़) कायम करना, ज़कात देना, रमज़ान के महीने का सौम (रोज़ह) रखना, कअबा का हज्ज करना (सही बुखारी, सही मुस्लिम)

इस लिए बिना किसी दीनी उज़र (कारण) के सौम (रोज़ह) छोड़ देना बड़ा पाप है तथा ऐसे मुसलमान के लिए हदीस की किताबों में बड़ी धमकियाँ आई हैं।

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، يَقُولُ " : بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ أَتَانِي رَجُلٌنِ فَأَخْذَا بِضَبْعَيْ فَاتَّيَا بِي جَبَلاً وَعَرَّا ، فَقَالَا لِي : اصْعُدْ ، فَقُلْتُ : إِنِّي لَا أَطِيقُهُ ، فَقَالَا : إِنَّا سَنُسْهَلُ لَكَ ، فَصَعَدْتُ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُ فِي سَوَاءِ الْجَبَلِ ، إِذَا أَنَا بِالْأَصْوَاتِ شَدِيدَةِ ، فَقُلْتُ : مَا هَذِهِ الْأَصْوَاتُ ؟ " قَالُوا : هَذَا عُوَاءُ أَهْلِ النَّارِ ، ثُمَّ انْطَلَقَ إِلَيْ فَإِذَا أَنَا بِقُوْمٍ مُعَقَّبِينِ بِعَرَاقِيَّبِهِمْ مُشَقَّقَةً أَشْدَاقَهُمْ ، تَسْأِلُ أَشْدَاقَهُمْ دَمًا ، قَالَ : قُلْتُ : مَنْ هُوَلَاءُ ؟ " قَالَ : هُوَلَاءُ الَّذِينَ يُفْطِرُونَ قَبْلَ تِحْلَةِ صَوْمِهِمْ . "

अब उमामह रज़ियल्लाहु अन्हु नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः मैं सोया हुवा था कि मेरे पास अचानक

दो आदमी आये और मेरे बाजू को पकड़ कर ऐसे पहाड़ पर ले गये जिस पर चढ़ना आसान नहीं, दोनों ने हमें उस पर चढ़ने का आदेश दिया, मैंने कहा मैं नहीं चढ़ सकता. दोनों ने कहा मैं तुम्हारे लिये चढ़ना आसान कर दूँगा. अतः मैं पहाड़ के ऊपरी भाग पर चढ़ा तो मैंने ज़ोर ज़ोर से चीखने चिल्लाने की आवाज़ें सुनी. तो मैं ने इन आवाज़ों के बारे में पूछा ? दोनों ने बतलाया कि यह जहन्नमियों(नर्कियों) की चीख है. फिर दोनों हमें ले कर चले तो मैं कुछ ऐसे लोगों के पास पहुँचा जो अपने पैर के रगों में बंधे लटके थे. उनके जबड़े फटे थे. जिन से खून बह रहा था, मैंने प्रश्न किया यह कौन है ? उत्तर मिला यह वह लोग हैं जो समय होने से पहले इफ्तार करते थे। (सही तरगीब. अल्बानी भाग : 1 पेज 588.)

इमाम ज़हबी रहेमहुल्लाह ने फरमाया है : मोमिनों के यहाँ यह बात साबित है कि जो कोई बिना शरई उज़र रमज़ान का सौम (रोज़ह) छोड़ दे वह ज़ना करने वाले तथा दारू पीने वाले से बुरा

है. मोमिन लोग उसके इस्लाम के बारे में शंका करते हैं तथा उसे जिन्दीकृ समझते हैं।

इमाम इब्ने तैमियह रहेमहुल्लाह कहते हैं: अगर कोई हलाल समझ कर रमज़ान का रोज़ह छोड़ दे जबकि वह इसे ह्राम होने को जानता है तो उसका क़तल वाजिब है तथा अगर वह फासिक है तो उसे रमज़ान में सज़ा दी जायेगी। (मज़मूअ फतवा . इब्ने तैमियह. 25-265)

सौम(रोज़ा)कब (अनिवार्य) फर्ज़ हुआ ?

रमज़ान के महीने का सौम(रोज़ा) दो हिजरी मदीनः में फर्ज़ हुवा तथा नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुल 9 रमज़ान सौम(रोज़ा)रखा।

रमज़ान महीना आरंभ होने का सुबूत:

1- किसी ऐसे मुसलमान आदमी का रमज़ान के महीने का चाँद देखना जो फर्ज़ का पाबन्द हो. बड़े पापों से बचता हो ,छोटे पापों पर जमा न रहता हो। (शरहुल मुमतोअ भाग : 6पेज 323)

2- या किसी एक अधिक विश्वसनीय (एतिमाद के लायक) आदमी से चाँद निकलने की सूचना मिल जाना ।

3- अगर चाँद न देखा गया हो और न ही चाँद देखने की एतेमाद के लायक किसी मुसलमान की गवाही मिले तो शअ़बान के तीस दिन पुरे किये जायें । इस प्रकार रमज़ान का महीना प्रारंभ होना साबित होगा । इसी प्रकार रमज़ान का महीना समाप्त उस समय होगा जब शव्वाल का चाँद दिखाई दे या दो एतेमाद वाले गवाही दें या फिर रमज़ान के तीस दिन पूरे किये जायें । हदीس में है :

صُومُوا لِرُؤْيَتِهِ وَأَفْطُرُوا لِرُؤْيَتِهِ فَإِنْ غَمَ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا عِدَّةَ شَعْبَانَ ثَلَاثِينَ يَوْمًا (متفقٌ عَلَيْهِ)

[चाँद देख कर सौम(रोज़ा)रखो तथा चाँद देख कर इफ्तार करो यदि अगर तम्हारे ऊपर बादल छा जाए तो शअ़बान के दिनों की संख्या तीस पूरी करो] (मत्तफ़क़ अलैह)

तथा सुनन नसई में है : [यदि दो गवाही देने वाले गवाही दें तो सौम(रोज़ा)रखो और इफ्तार करो] (सही नसई 2, 909)

پ्रش्न : ک्या رمज़ाن کے مہینے کے سावیت ہونے کے باਰے میں مہیلہ کی گواہی مانی جائے گی ؟

उत्तर : شیخِ ایبلے بाज़ رحمتُ اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَمَلَکُوٰتُہِ کے یہاں نہیں مانی جائے گی کیونکि یہ پُرُشُوں کا کام ہے مہیلہ کا کام نہیں پُرُش ہی یہ کے ویسے میں اُدھِیکِ جَنَان رکھتے ہیں । (مِجْمُوعَةٍ فَتاوَّا ایبلے بَاجَ-بَاهَ 15 پےج 62)

پ्रش्न : اکلے چاں دے�ے والा کیا کرے ؟

उत्तर : جو اکلے چاں دے�ے وہ چاں کَانُونی اदالات کو اپنے چاں دے�نے کی سُوچنا دے، اگر جب تک اسکی گواہی مان لے تو رمज़ان کے مہینا کا شُرُع ہونا سایت ہو جائے گا، پرنتु اگر اسکی گواہی ن مانی جائے تو کوئی عالماء کہتے ہیں ہے اسے روڑا رکھنا پड़ے گا کیونکि اسے چاں دے�نے کا یقین ہو گیا، اتھے ہندیس میں ہے: (چاں دے� کر روڑا رکھو) (سہی بُخَارِی : ح۰۹۰۱۹۰۹) تथا کوئی عالماء کہتے ہیں کہ وہ روڑا نہیں رکھے گا کیونکि روڑا اس دن ہے جس دن سارے لوگ روڑا رکھنے سے بے ہتھ رہے ہیں اور کوئی عالماء کہتے ہیں کہ وہ اکلے چوپکے سے روڑا رکھے گا کیونکि اس نے چاں دے�ا

है, और चुपके से इस लिए ताकि जमाअत की मुखालिफत न हो। (फ़िक्हुल् इबादात : इब्ने उसयमी, 284)

हर महीने का चाँद देखने के बाद हमें यह दुआ पढ़नी चाहिये :

اللَّهُمَّ أَهْلِلْهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَ وَالإِسْلَامَ رَبِّي
وَرَبِّكَ اللَّهُ (سنن ترمذی)

अल्लाहुम्मा अहिल्लहू अलैना बिल्युम्नि वल ईमान
वस्सलामति वल इस्लाम रब्बी व रब्बुकल्लाह
(तिरमिजी.ह०न०3451)

हे मेरे अल्लाह तू इसे हमारे ऊपर वरकत.
ईमान.सलामती तथा इस्लाम के साथ निकाल,
हमारा तथा तुम्हारा रब अल्लाह है।

रमज़ान के सौम(रोज़ा) अनिवार्य होने की शर्तें
यह हैं :

- 1- इस्लाम
- 2- बुलूगत(प्रौढ़ता)
- 3- बुद्धि
- 4- सौम(रोज़ा) रखने की शक्ति तथा ताक़त रखना
- 5- निवासी होना
- 6- रुकावट न होना।

अधिक जानकारी !

1- इस्लाम । अतः काफिर का सौम(रोज़ा)सही नहीं होगा । अल्लाह पाक ने फरमाया:

وَمَا مِنْهُمْ أَنْ تُقْبِلَ مِنْهُمْ نَفْقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفُرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ

(कोई कारण उनके खर्च को स्वीकार न होने का इसके अतिरिक्त नहीं कि ये अल्लाह तथा उस के रसूल के नाफरमान हैं) सूरःतौबह.55

हाँ अगर कोई रमज़ान के दिन के किसी भाग में इस्लाम स्वीकार करे तो उलमा के सही फतवा अनुसार उसे उस दिन के बाक़ी समय में रोज़े तोड़ने वाले कामों से बचना होगा क्यों कि वह उन लोगों में से हो गया जिनके ऊपर रोज़ह अनिवार्य है प्रन्तु उस दिन की कज़ा नहीं करनी पड़ेगी ।

फतावा रमज़ान, अशरफ अल मक़सूद. भाग:2 पेज 665, मुग़नी, इब्ने कुदामह. भाग : 4 पेज 415, शरहुल उमदह इब्ने तैमियह, भाग : 1 पेज 41, शरहुल मुम्तेअ, इब्ने उसैमीन, भाग : 6 पेज 333, मजालिसे रमज़ान. पेज 70

2- बुलूगत(प्रौढ़ता) जब तक बच्चे बालिग ना हो जायें उन पर सौम(रोज़ा) अनिवार्य नहीं है । हदीस में है [तीन प्रकार के लोगों से क़लम उठा लिया गया है, पागल जब तक सही न हो जाये, सोने

वाला जब तक जाग न जाये तथा बच्चा जब तक बालिग़ा न हो जाये ।] (सुनन अबूदाऊद, हन० 4401)
हाँ बच्चों की आदत डालने के लिए माता पिता को सौम(रोज़ा) रखवाने की कोशिश करनी चाहिए ।
बच्चों के बालिग़ होने की तीन निशानियाँ हैं उनमें से जब भी कोई एक निशानी पाई गई तो बच्चा बालिग़ माना जाये गा ।

﴿ ﴿ ﴾ एहतेलाम (स्वपनदोष) से या जागने की हालत में वीर्य(मनी) निकलना । अल्लाह पाक ने फरमाया:

وَإِذَا بَلَغُ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلْمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(तथा तुम में से जो बच्चे बलूगत(वयस्क अवस्था) को पहुँच जायें तो जिस प्रकार उन से पूर्व(बड़े) लोग आज्ञा तथा इजाज़त माँगते हैं, उन्हें भी आज्ञा माँग कर आना चाहिये ।) सूरःनूर, 59

﴿ ﴿ ﴾ नाभी के नीचे खरदुरे बाल उगना ।
अतिय्यह कुरज़ी कहते हैं : कि मैं बनू कुरैज़ह के कैदियों में से था तो लोग देखते थे, जिसके नाभी के नीचे बाल उग आये थे उसे क़तल कर दिया जाता

था और जिसके बाल नहीं उगे थे उसे छोड़ दिया जाता था । अतः मैं उन लोगों में से था जिसके बाल नहीं उगे थे तो मुझे छोड़ दिया गया । सुनन नसई हॉन्न०343, सहीसुनन नसई । अल्बानी भाग : 2 पेज 477

◆ 15 वर्ष को होना । अब्दुल्लाह इब्ने उमर कहते हैं: उहूद के दिन युध में मैं 14 वर्ष का तथा तो मुझे युध की अनुमति नहीं मिली और खन्दक के दिन मैं 15 वर्ष का था तो मुझे अनुमति मिल गई , नाफेअ बयान करते हैं कि मैं खलीफह उमर बिन अबदुल अज़ीज के पास आया तथा उनसे इस हदीस को बयान किया तो उन्होंने कहा: यह छोटे और बड़ेके बीच हद तथा सीमा है, और सारे गौरनरों को पत्र लिखा कि जो 15 वर्ष का हो जाये उसके ऊपर फर्ज़ करें और जो इस से कम हो उसे बच्चों में रखें । (मुत्तफ़क अलैह)

बच्ची में ऊपर की किसी एक निशानी के अतिरिक्त चौथी निशानी हैज(मासिक धर्म) का आना है ।

3- بُعدِ پاگل पर سौम(रोज़ा) अनिवार्य नहीं है । हदीस में है तीन प्रकार के लोगों से क़लम

उठा लिया गया है. पागल जब तक सही न हो जाये, सोने वाला जब तक जाग न जाये तथा बच्चा जब तक बालिग़ न हो जाये । (सुनन अबूदाऊद, ह०न० 4401)

अगर कोई कभी पागल रहता है तथा कभी सही तो सही होने की हालत में रोज़ह रखना वाजिब है । इसी प्रकार अगर कोई दिन में कुछ समय पागल या बेहोश हो जाता है तो उसका रोज़ह सही होगा, और जिस दिन वह बेहोश या पागल हुवा है उस दिन का उसे कज़ा नहीं करना होगा अगर यह दिन के कुछ समय में हुवा है । (मजालिस शहर रमज़ान, इब्ने उसैमीन, पेज 75)

4- سौم (रोज़ा) रखने की शक्ति तथा ताक़त रखना : जो आदमी शक्ति नहीं रखता उस पर سौम (रोज़ा) रखना अनिवार्य नहीं है । हाँ जब बाद में अगला रमज़ान आने से पहले कज़ा करने की ताक़त पायेगा तो कज़ा करना वाजिब होगा वरना हर दिन के बदले एक कंगाल खिलायेगा । अल्लाह ने फरमाया:

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضاً أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّهُ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ (البقرة: 184)

हाँ जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिन्ती तथा गणना पूरी करनी चाहिये (सूरहः बक़रः184)

यानी अगर रोज़े रखने की ताक़त नहीं है किसी ऐसे कारण से जिसके दूर होने की आशा है जैसे वह रोगी जो रोग जाने की आशा रखता है तो रोग जाने के बाद कज़ा करेगा प्रन्तु जो कदापि आशा नहीं रखता या वह बूढ़ा जो रोज़ह नहीं रख सकता तो वह प्रत्येक दिन के बदले ऐक कंगाल खिलाये गा । शरहुल मुमुक्षुतेऽ, (इब्नेउसैमीन.6-333)

5- निवासी होना । यात्री बाद में कज़ा करेगा ।

अल्लाह ने फरमाया :

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّهُ مِنْ أَيَّامِ أَخَرٍ (البقرة: 184)

हाँ जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिन्ती तथा गणना पूरी करनी चाहिये (सूरहः बक़रः184)

6- रुकावट न होना । जैसे महिला के लिए हैज़, निफास ,ऐसी महिला इस हालत में सौम(रोज़ा) नहीं रखेगी बाद में कज़ा करेगी । हदीस में है

आइशा رजियल्लाहु अन्हा कहती हैं: हमें हैज़ आता था तो हमें सौम(रोज़ा)कज़ा करने का आज्ञाँ दिया जाता था और नमाज़ कज़ा करने का आज्ञा नहीं दिया जाता था। (सही मुस्लिम)

एक वज़ाहतः

यात्रा चाहे जिस साधन से हो जैसे मोटर, गाडी, हवाईजहाज, ऊँट, घोड़ा कशती आदि सब को यात्री ही माना जायेगा तथा उन्हें यात्रा के सभी इस्लामी एवं दीनी छूट मिलेगी क्यों कि अल्लाह ने अपने बन्दों के महाप्रलय तक के लोगों लिए यात्रा के अहकाम उतारा है और अल्लाह जानता है कि संसार में किस प्रकार तरक्की होगी।

﴿فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعَدَّهُ مِنْ أَيَّامِ أُخْرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطْبِقُونَهُ فِدْيَةً طَعَامٌ مَسْكِينٌ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَنَّ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ {البقرة: 184}

(परन्तु अगर तुम में से जो मनुष्य रोगी हो या यात्रा में हो तो वह अन्य दिनों में गिन्ती पूरी कर

ले तथा जो इसकी ताक़त रखता है फिदिया में एक कंगालतथा ग़रीब को खाना दे फिर जो मनुष्य भलाई में बढ़ जाये वह उसी के लिए बेहतर है । प्रन्तु तम्हारे हक़ में बेहतर कर्म सौम यानी रोज़े रखना ही है अगर तुम जानते हो-(सूरह बक़रः184)

अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप के सहावा यात्रा में कभी सौम (रोज़ा) रखते थे और कभी नहीं रखते थे | जैसा कि हदीस में है कि :

عَنْ عَائِشَةَ: "أَنَّ حَمْزَةَ بْنَ عَمْرُو الْأَسْلَمِيَّ قَالَ لِلنَّبِيِّ : أَأَصُومُ فِي السَّفَرِ؟ - وَكَانَ كَثِيرًا الصَّيَامَ - فَقَالَ : إِنْ شِئْتَ فَصُمْ وَإِنْ شِئْتَ فَافْطُرْ" (مाई आइशा रजियल्लाहु अन्हा बयान करती है कि हम्ज़ह असलमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या में सफर यानी यात्रा में रोज़ा रखूँ? - यह बहुत अधिक रोजा रखते थे-तो आप ने फरमाया: चाहो तो रखो, चाहो तो ना रखो) (सुनन तिरमिज़ी)

 और अगर यात्री के लिये बाद में कज़ा करना कठिन हो या बाद में ना रख पाने का डर हो तो सफर में रोजा रखना बेहतर है ।

پر نتھیں جب تے� گرمی ہو اور یاتری کے لیے روزہ رکھنے میں بہت ہی کٹھناراہی ہو تو روزہ توڈ دے گا । ہدیس میں ہے

"ليس من البر الصيام في السفر". أخرجه . البخاري

44/2

کیونکہ نبی سلسلہ اللہ تعالیٰ کے واسطے نے ایک بار سفر میں دیکھا کہ ایک آدمی پر لوگ چای کیے ہوئے بھیڈ لگایے ہے تو آپ نے پوچھا یہ کیا ہے ؟ لوگوں نے کہا روزادار ہے، تو آپ نے فرمایا یاتری میں سویم روزہ رکھنا بھلائی نہیں ہے ।

سہی بخاری 2/44 دیکھو: ماجموع فتاوا و مکالات شیخ ابن القاسم باغ ، 15/236 سے 244

سویم(روزہ) کے آधار(ارکان):

سویم(روزہ) کے تین آधار ہیں ।

پہلا رکن : نیت:

اللہ تعالیٰ کے آدेश کا آज्ञا پालن کرتے ہوئے کہہ کے ایک ایسا کی پ्रسنتا پ्रاپت کرنے کے لیے ایک ایسا کی

ساتھ سौم(روज़ा) رکھنے کا مन سے پککا ایرادا کرننا । اللّاہ پاک نے فرمایا:

وَمَا أَمْرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءٌ

(उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिये धर्म को शुद्ध(खालिस) कर रखें(इब्राहीमी) एकेश्वरवादी के धर्म पर)(सूर: बय्यिना-5)

तथा نبी سल्लال्लाहु اَلَّا هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ نے فرمایا : [सारे अमल नियत पर निर्भर हैं तथा हर आदमी को उसकी नियत अनुसार फल मिले गा०००००] सही बुखारी ।

प्रत्येक इबादत में इखलास जरूरी है बिना इस के कोई इबादत कुबूल न होगी ।

❖ فرج تथा अनिवार्य سौم(रोज़ा) की नियत فज्ज से पहले रात ही में कर लेना आवश्यक है, नबी سल्लال्लाहु اَلَّا هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ने فرمाया :

مَنْ لَمْ يُبَيِّنْ الصِّيَامَ قَبْلَ طُلُوعِ الْفَجْرِ فَلَا صِيَامَ لَهُ

[जिस ने फज्ज से पहले सौम(रोज़ा) की नियत नहीं की उसका सौम(रोज़ा) नहीं होगा] (तिर्मिज़ी)

نफ़لी سौم(रोज़ा) के लिए दिन में नीयत कर सकते हैं अगर फज्ज के बाद सौम(रोज़ा) तोड़ने वाले

कामों में से कोई काम न किया हो । इसी प्रकार नफली रोज़ा की नियत करने के बाद दिन में तोड़ा भी जा सकता है ।

عن عائشة أم المؤمنين قالت : دخل علي النبِي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذات يوم فقال : هل عندكم شيء ؟ فقلنا : لا ، قال : فإني إذن صائم ، ثم أتانا يوما آخر فقلنا : يا رسول الله أهدي لنا حيس ، فقال أرينيه فلقد أصبحت صائما ، فأكل رواه مسلم

माई आइशा रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि : एक दिन नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास आये और कहा: क्या तुम्हारे पास कुछ है? तो हमने जवाब दिया : नहीं , आप ने फरमाया: तो मैं रोज़ह रख लेता हूँ , फिर दूसरे दिन आये तो हमने कहा हे अल्लाह के रसूल ! हमें तुहफे में (हैस) मिला है, आप ने कहा मुझे उसे दिखाओ मैं रोज़ह था, तो आप ने खाया ।(सही मुस्लिम.ह०न॰1154) हैस: खजूर ,आटा और धी से मिला कर बनाया जाता है .
(फतावा इब्ने बाज़, भाग : 15 पेज 252)

● नफली सौम(रोज़ा)की नीयत सूर्य ढलने से पहले भी कर सकते हैं तथा बाद में भी । (शरहुल उमदह, शैखुल् इस्लाम इब्ने तैमियह: भाग : 1 पेज 192) क्यों कि हुजैफ़ह रजियल्लाहु अन्हु ने नफली

سُوْمَ(رَوْجَّا) کی نیyyت سُوْرَہ دل�ے کے باَد کیا ٿا
(شَرْهُلُّ عَمَادٍ - شَرْهُلُّ إِسْلَامٍ إِبْنَهُ تَعْمِيَةً: بَأْغٌ : ۱
پے ج 188)

﴿ اگر نफُلی سُوْمَ(رَوْجَّا) کی نیyyت رات مें
کیا ہے تو اسے پُورے دین کے سُوْمَ(رَوْجَّا) کا سવाब
ミلے گا اور اگر دین مें کسی سماں نیyyت
کیا ہے تو اسی سماں سے باکی دین کا سवاب
ミلے گا ک्यों کہ هدیس مें ہے کہ سارے امالم نیyyت
پر نیر्भر ہے । (شَرْهُلُّ مُعْتَدِلٍ: بَأْغٌ : 6 پے ج 737)

اس لیए ویشے دینوں جैسے جُومِرَات، ایکامے
بیج (ہر اربی مہینے کی 13-14- 15 تاریخ)
شَوَّال کے چ دین سوْمَ(رَوْجَّا) کی نیyyت رات مें
کرنा بہتر ہے تاکہ پُورے دین کا سવاب میلے ।
(شَرْهُلُّ مُعْتَدِلٍ: بَأْغٌ 373)

﴿ یاد رہے ساری ایجادتوں کے پ्रکار سُوْمَ(رَوْجَّا)
کی بھی نیyyت دل سے کی جائے گی ک्योंکہ نیyyت
کا س्थان دل ہے اتھے یہ کہنا کہ نَوْيَتُ سُوْمَا
گردین مین رَمَّاجَانَ الْلَّاهُ کے رَسُولَ سَلَّلَلَلَّاْهُ

अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है बल्कि यह ऐसी विदअत है जिस से बचना ज़रूरी है ।

इसी प्रकार अगर कोई रमज़ान के शुरू ही में पूरे महीने के सौम(रोज़ा)रखने की नीयत कर ले तो भी काफी है हाँ अगर बीच में किसी कारण सौम(रोज़ा)तोड़ा तो फिर से नियत करेगा और अगर कोई रोजाना नियत करे तो भी कोई बात नहीं । ماجمُوعَ فتاوَاَ وَ رِسَالَاتٍ، اِبْنِ عَثِيمِيْنَ، بَابُ ۱۹، پے ج 176

दूसरा रुक्न- फज्ज(प्रत्यूष) उदय होने से ले कर सूर्य डूब जाने तक सौम(रोज़ा) तोड़ देने वाली सारी चीज़ों से बचना ।

जैसे खाना पीना तथा हमविस्तरी (सहभोग)आदि ।
अल्लाह तआला ने फरमाया है :

وَكُلُوا وَاشْرِبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَيْمَنُ مِنَ الْخَيْطِ الأَسْوَدِ
مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتِمُّوا الصَّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ

[तुम खाते पीते रहो, यहाँ तक कि प्रातःकाल (प्रातःकालीन प्रकाश) की सुफेदी का धागा अंधकार

के काले धागे(तात्पर्य रात) से स्पष्ट हो जाये । फिर रात तक रोज़े को पूरा करो ।] (सूरह बक़रः 187)

तीसरा रुक्न - سौम(रोज़ा) का समय, यानी पूरा दिन सुबह सादिक(प्रत्यूष) से ले कर सूर्य डूब जाने तक سौम(रोज़ा)का समयय है । अल्लाह पाक ने फरमायाश्व और रात तक सौम(रोज़ा) पूरा करोत्त (सूरह बक़रः 187)

سौम(रोज़ा)तोड़ देने वाली चीज़िं:

1- **سहभोग(हमविस्तरी)** रमज़ान के दिनों में बिना किसी धार्मिक बहाने के पत्नी से सम्भोग (हमविस्तरी) करना हराम है तथा इस से سौम(रोज़ा)टूट जाएगा चाहे अनिवार्य سौम(रोज़ा)हो या नफल । अल्लाह पाक ने फरमाया:

أَحِلٌّ لِكُمْ لَيْلَةُ الصَّيَامِ الرَّفِثُ إِلَى نِسَائِكُمْ

(रोज़े की रात में अपनी बीवियों(पत्नीयों) से मिलने की तुम्हें इजाज़त है) सूरः बक़रः 187 और अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि : हम लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

پاس بیٹھے�ے کیا اچھا نک ایک آدمی آکر کہنے لگا : (ہے اللہ کے رسول حلماک تथا نسٹ ہو گیا، آپ نے کہا: کیا ہو گا؟) عس نے کہا: میں نے روزے کی ہالت میں اپنی پتنی سے ہم بیس تری کر لیا۔) سوچ فکر اُل لایہ

تھا سارے عالم کا اس بات پر ایسا فکر (سہمت) ہے کہ روزے کی ہالت میں رمزاں کے دینوں میں ہم بیس تری اور خانا پینا ہرام ہے ।

اگر کسی نے روزے کی ہالت میں رمزاں کے دین میں پتنی سے جان بُوझ کر سامبھوگ کیا جبکہ عسکے اوپر سوئم (روزہ) انیوارڈ ہا تو عسکا روزہ ٹوٹ جائے گا تھا عسے تائبہ کے ساتھ باعث میں کجھ کرنا پडے گا اور کفکار (پاپدھن) بھی دینا ہو گا ।

کفکار (پاپدھن) یہ ہے !

ک- ایک مومن گردان آزاد کرنا اگر یہ نمیلے تو!

خ- لگاتار دو مہینے کے سوئم (روزہ) رکھنا

تھا بینا عذر (جیسے دونوں ہند کے دین، تشریک 11-12-13-جیلہ حیجہ کے دین یا ایسا روگ کی

سُوْمَ(رَوْجَّا) رَخْنَنَهُ كِي شَكْرَتَ نَهْ هَوَ، بِنَا رَوْجَّا تَوْدَنَهُ كِي إِرَادَهُ سَهْ يَأْتَرَا، مَهْلَلَا كِي لِيْلَهُ هَيْجَ، نِفَّاسَ آهَدِي) كِي بَيْصَ مَهْ سُوْمَ(رَوْجَّا) نَهْ تَوْدَهُ | اَغَرَ بِنَا عَزُورَ كِي اَكَ دِيْنَهُ بَهْ تَوْدَ دِيْيَا تَوْ، فِيرَ سَهْ شُرُونَهُ سَهْ رَخْنَنَهُ هَوَگَا | اَغَرَ يَهْ نَهْ سَكَهُ تَوْ!

ग- साठ 60 मिस्कीन अथवा कंगाल को खाना खिलाना सावा किलो के हिसाब से हर मिस्कीन को अपने शहर का आम खाना खिलाना ।

जैसा कि अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि : हम लोग नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे थे कि अचानक एक आदमी आकर कहने लगा : (हे अल्लाह के रसूल मैं हलाक तथा नष्ट हो गया, आप ने कहा: क्या हुवा? उसने कहा: मैं ने (रमज़ान में) रोज़े की हालत में अपनी पत्नी से हमविस्तरी कर लिया, तो आप ने कहा : क्या तुम एक गुलाम आज़ाद कर सकते हो? उसने कहा : नहीं, आप ने कहा : क्या तुम लगातार दो महीने रोज़ह रख सकते हो? उस ने कहा : नहीं, आप ने कहा: क्या तुम साठ कंगाल तथा मिस्कीन को खाना खिला

سکتے ہوئے ؟ عس نے کہا : نہیں ، تو آپ نے کہا : بیٹھو تو وہ بیٹھ گیا، ہم لوگ وہیں ہے کہ آپ کے پاس بडے ٹوکرے میں خुجور لارڈ گارڈ (ابو داؤد میں ہے کہ 37 کیلو 500 گرام خुجور تھی) ، تو آپ نے فرمایا : پ्रشن کرنے والा کہاں ہے ؟ عس نے کہا میں، آپ نے کہا : اسے لے جا کر سدکا کر دو۔ عس آدمی نے کہا : کیا اپنے سے اधیک فکر پر ؟ . ہے اللہ کے رسول مذینہ میں میرے گر والوں سے کوئی اधیک کنگال و فکر نہیں ہے۔ تو نبی سلسلہ اعلیٰ اعلیٰ ہنس پڑے یہاں تک کہ آپ کے کوچلی کے دانت دیکھنے لگے ، فیر آپ نے کہا لے جاؤ اپنے گر والوں کو خیلاؤ ।) مُعْتَفَكَ أَعْلَى

ادھیک ج्ञान :

 اگر کسی نے رمजان میں اپنے شارمنگاہ (لائیٹ س्थان) سے پتنی کے شارمنگاہ میں سامنہ گاہ (ہم بیسٹری) کیا تو عس کا سوام (روزہ) توت جائے گا چاہے ویر نیکلے یا ن نیکلے ।

उसके ऊपर क़ज़ा और कफ़ारह दोनों हैं इस शर्त के साथ कि उसने बिना किसी के मजबूर किये अपने से किया हो, उसे याद हो कि वह سौम(रोज़े) से है भूला न हो, निवासी हो रोज़े की हालत में यात्री न हो ।

और अगर रमज़ान के अतिरिक्त किसी अन्य अनिवार्य रोज़े की हालत में हमविस्तरी किया है तो केवल उसका सौम(रोज़ा) टूटेगा तथा उसे कज़ा करना होगा ।

➊ अगर रमज़ान के अतिरिक्त किसी अन्य सौम(रोज़ा)की हालत में शरमगाह के अतिरिक्त शरीर के किसी अन्य स्थान मे किया है और वीर्य निकल गई है तो केवल सौम(रोज़ा) टूटेगा यदि अनिवार्य सौम(रोज़ा) है जैसे : नज़र का सौम(रोज़ा) कफ़ारह का सौम(रोज़ा)रमज़ान के रोज़े की कज़ा का सौम (रोज़ा) तो मात्र कज़ा करना होगा ।
कफ़ारह नहीं होगा ।

➋ रमज़ान के दिन में शरमगाह के सिवा किसी अन्य स्थान में हमविस्तरी (सम्भोग) किया तथा वीर्य निकाला उलमा की सही मत के अनुसार

केवल सौम(रोज़ा) टूटेगा और उस पर क़ज़ा के साथ तौबह है उस पर कफारह नहीं है क्योंकि उसने पूरी हमविस्तरी नहीं की है

 भूल कर सम्भोग(हमविस्तरी) करने वाले पर न क़ज़ा है न कफारह क्योंकि हदीस में है कि: [अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के भूल चूक तथा उन चीज़ों को छमा किया है जो उनसे बलपूर्वक(जबरदस्ती व कहर ढ़ा कर) करवाया जाए (सही इब्ने माजह 2-178)]

तथा दूसी हदीसों में है कि: [जिसने रमज़ान में भूल कर सौम(रोज़ा) तोड़ दिया तो उस पर न कज़ा है न कफारह]

(इसे इमाम हाकिम ने मुस्लिम की शर्त पर सही कहा है तथा इमाम ज़ह्री ने सहमति की है (अल-तलखीसुलहबीर, इब्ने हजर, भाग : 2 पेज 195)

यही मत इब्ने तैमियह रहेमहुल्लाह का भी है (मजमूआ फतावा, भाग : 25 पेज 226)

 अगर महिला सम्भोग से सहमत तथा राज़ी है तो उसका भी सौम(रोज़ा) टूट जायेगा और उस पर तवबा के साथ कज़ा तथा कफारह है। और अगर महिला के साथ बलपूर्वक(जबरन व कहरन)

किया गया है इसमें उसकी किसी प्रकार की सहमति या रिज़ामन्दी नहीं है और न वह इस से अपनी बचाव कर पाई है तो उस पर कुछ नहीं है ।

⦿ अगर कोई सम्भोग(हमविस्तरी)करता रहा यहाँ तक कि फज्ज उदय हो गया तो उस पर कज़ा और कफारह है ।

इसी प्रकार अगर कोई यह अनुमान लगा कर सम्भोग करे कि अभी फज्ज उदय नहीं हुवा है जब कि फज्ज उदय हो चुका है तो उस पर भी कज़ा तथा कफारह है । (फतावा शैख इब्ने बाज़, भाग: 15 पेज 290)

⦿ अगर किसी ने रमज़ान के एक दिन में कई बार सम्भोग किया तो उस पर एक ही कफारह है जब तक कि उसने इस से पहले वाले सम्भोग का कफारह नहीं अदा किया है , और अगर किसी दिन सम्भोग किया फिर कफारह दे दिया फिर दूसरी बार उसी दिन किया तो उस पर दूसरा कफारह होगा । (फतावा लजनदाइमः, भाग : 10 पेज 221)

﴿ رمज़ान मुबारक के सिवा किसी दूसरे महीने में अनिवार्य रोज़े की हालत में सम्भोग किया जैसे रमज़ान के कज़ा का रोज़ा, नजर का रोज़ा या कफारह का रोज़ा तो उस पर तौबह के साथ उस दिन की कज़ा है कफारह नहीं है ।

﴿ नफली रोज़े की हालत में सम्भोग करने वाले पर कुछ नहीं है ।

(अधिक जानकारी के लिए देखें! मुगनी, इब्ने कुदामह, भाग 4-272-390, मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़ भाग 15- पेज 288-310, मजमूअ़ फतावा लजनह दाइमह भाग 10-301-330 मजमूअ़ फतावा इब्ने तैमियह भाग 25- 225-228)

2- जान बूझ कर मनी (वीर्य)निकालना

चाहे चुम्बन चाटी से या हाथ से या लज्ज़त लेने के लिए किसी चीज़ को बार बार देखने से या किसी अन्य प्रकार से ।

परन्तु बिना वीर्य निकाले चुम्बन से सौम(रोज़ा) नहीं टूटेगा क्योंकि आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया है कि नवी सललल्लाहु अलैहि वसल्लम

سُوْمَاءُ (رَوْجَاهُ) كَيْ أَهْلَكَهُ حَالَتُهُ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ
[مُّتَّفَّقُ عَلَيْهِ]

وَأَمْرَأٌ نَّسِيَّةٌ لَمْ يَرَهُ
أَوْ مَجْدِيَّةٌ نَّسِيَّةٌ لَمْ يَرَهُ

(مُخْتَارَاتِ فِيقَةِ الْحَدِيدِ، ج 1، ص 177)

**3- سُوْبَهُ سَادِيكُ
سَادِيكُ سُوْبَهُ سَادِيكُ**

بُوْذَنْجَهُ بُوْذَنْجَهُ
بُوْذَنْجَهُ بُوْذَنْجَهُ

أَلْلَاهُ أَكْبَرُ أَلْلَاهُ أَكْبَرُ

وَكُلُوا وَاشْرِبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ
مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتِمُوا الصَّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ

तुम खाते पीते रहो, यहाँ तक की प्रातःकाल (प्रातःकालीन प्रकाश) की सुफेदी का धागा अंधकार के काले धागे(तात्पर्य रात) से स्पष्ट हो जाये। फिर रात तक रोज़े को पूरा करो। (सूरह बकरः 187)

इस आयत में अल्लाह पाक ने खाने पीने की इजाज़त फज्ज स्पष्ट होने तक दी है फिर रात तक खाने पीने से रुकने का हुक्म दिया है।

तथा हदीसे कुदसी में है कि: (ooooooooooooo)बन्दह अपनी शहवात, अपना खाना तथा पीना मेरे लिये छोड़ता

है, रोज़ह मेरे लिये है तथा मैं ही उसका फल दूँगा
.....)मुत्तफ़क़ अलैह

 जान बूझ कर नाक के मार्ग से मेअ़दह अथवा पेट में खाना ,पानी या किसी चीज के दाखिल करने से रोज़ा टूट जायेगा । क्यों कि लकीत बिन سबुरह की हदीस में है कहते हैं :मैं ने कहा (हे अल्लाह के रसूल मुझे वुजू के बारे में बतायें? आप ने कहा: अगर तुम रोज़े से नहीं हो तो नाक में पानी चढ़ाने मे मुबालगह (अतिशयोक्ति)करो) अबूदाऊद.ह०न०2366,सही सुनन अबूदाऊद भाग 2 पेज, 91 इस से यह स्पष्ट होता है कि नाक से पेट में कोई चीज़ दाखिल करने का एक मार्ग है । ماجمُؤْ فَتَأْوِا
इब्ने बाज़,भाग: 15 पेज,261.शरहुल मुमतेअ़ भाग : 6 पेज 378- 379

हाँ सूगन्ध या खुशबू सूँगने से रोज़ह नहीं टूटेगा क्योंकि खुशबू का जिस्म नहीं होता प्रन्तु धूनी सूँधने से बचना चाहिये क्योंकि धुआँ के साथ धूनी के साथ उसका कुछ भाग भी चढ़ता है । مجاہلیس شہر رमज़ान,पेज.160

﴿ اگر کوئی فجراً عدیم ہونے میں شک کر کے خاپی لے تو کوئی بات نہیں عسکا روزا سہی ہوگا جب تک کہ عسے یقین کے ساتھ یہ نہ پتا چلے کہ عسنے فجراً عدیم ہونے کے باعث خاپا، پیا ہے کیونکہ اصل رات کا باکی رہنا ہے । ویسے ہمہنگ کے سماں سے پہلے سہہری کرنا چاہیے । پرانٹو جس نے سوئی ڈوبنے میں شانکا کرتے ہوئے خاپی لیا تو عسنے گلتی کی تباہ عسے عس دن کی کجزا کرنی ہوگی کیونکہ یہاں اصل دن کا باکی رہنا ہے اتھب تک سوئی ڈوبنے کا یقین نہ ہو جائے ہمہنگ خانا پینا نہیں چاہیے ।

4- جو خانے پینے جیسا ہو ।

جیسے بُون چڈھانہ، ایسا اینجیکشن لگانہ جو (وجن کا کام کرے (نسوں میں پوپک تत्वوں کا اینجیکشن)، جیسے گولوکوڑ، تاکٹ کی سوئی آدی । آدم اینجیکشن جو ایلاج کے لیے لگانہ جاتا ہے عس سے روچھ نہیں ٹوٹے گا چاہے وہ شریر میں کہیں بھی لگانہ جائے । مجاہلیں شہر رمذان، پے ج 161-62 اسی پ्रکار آنکھ، کان میں دوا ڈالنے یا آنکھ میں سوچا یا کاجل لگانے سے روچھ نہیں ٹوٹے گا کیونکہ

कि न यह गिज़ा है तथा ना ही खाने पीने जैसा है , और आँख या कान पेट में दाखिल करने का मार्ग नहीं है । हाँ अगर इसका असर हलक में महसूस हो तो उस दिन का कज़ा कर लेना अफज़ल है वाजिब नहीं । तथा अल्लाह के रसूल से रोज़े कि हालत में सुरमा लगाना सावित है । इब्ने माजह, हन॰ 1678, सही सुनन इब्ने माजह. भाग 2 पेज 68. मजमूअ. फतावा इब्ने बाज़ भाग: 15 पेज 257-264

5- पछना या सींगी लगवाना । हदीस में है ।

أفطر الحاجم والمجموع

[पछना लगाने तथा लगवाने वाले दोनों का रोजा टूट जाता है] (सही सुनन अबूदाऊद भाग 2-68) यही मत इब्ने तैमियह, इब्नुल् कय्यिम. मुहद्दसीन फोकहा, इब्ने बाज., इब्ने उसैमीन रहेमहुमुल्लाह का है ।

पछनालगाने वाले का रोज़ह इस लिये टूटेगा क्योंकि वह पछने में मुँह लगा कर चूसता है तो भीतर खून जा सकता है प्रन्तु अगर नश्तर मार कर बिना मुँह लगाये किसी और प्रकार से खून निकालता है तो पोछना ताथ सींगी लगाने वाले का रोज़ह नहीं

टूटेगा । مजمूअ़ فتاوا इब्ने تैमियह भाग25
पेज252-258

वैसे इस मसअला में उलमा का इखतेलाफ़ है बेहतर है इखतेलाफ़ से बचते हुये रात में सींगी लगवाये ।

इसी प्रकार किसी को खून चढ़ाने के लिये निकलवाने से रोज़ह टूट जायेगा तथा रोज़े की हालत में ऐसा करना हराम है , हाँ अगर बहुत सख्त जरूरत हो और इसके बिना जरूरत पूरी ना हो तो किसी को खून चढ़ाने के लिये निकलवा सकता है प्रन्तु उसे उस दिन की कज़ा करनी हो गी ।

 याद रहे नाक से या खाँसी से या बवासीर के कारण या कोई धाव चीरने से या इन्जेक्शन लगाने से खून निकल आये या जाँच के लिये निकलवाने से आदि, रोज़ा नहीं टूटेगा क्योंकि यह पछना नहीं है तथा ना उसके प्रकार है और यह शरीर पर पछना के प्रकार परभाव नहीं करता ।
مjalis شہر رمذان، ایڈسے میں۔ پے ج 163- ماجمूअْ فتاوا ایڈے بارے 15 پے ج 272-274

6- جان بُوझ کر کیا (و مرن) کرنا । کیونکی ہدیس میں ہے:

عن أبي هريرة رضي الله عنه مرفوعاً: «مَنْ ذَرَعَةً الْقِيَءُ، فَلَا
قَضَاءٌ عَلَيْهِ، وَمَنْ اسْتَقَاءَ، فَعَلَيْهِ الْقَضَاءُ.

【جیسے اپنے سے کیا آ جائے تو اس پر کجا نہیں
تھا جو جان بُوझ کر کیا کرے وہ کجا کرے 】
(سُننُ ابْوَدَّ-هـ، نـº 2380) اَللَّٰمَحُ اَلْبَوَانِيُّ نے سہی سُننُ
ابْوَدَّ میں اسے سہی کہا ہے ।

⦿ اگر پेट سے خانا یا پانی ہلک تک اپنے
سے نیکل آئے تو رोزہ نہیں ٹوٹے گا پرنتु اسے
جان بُوझ کر نیگل لیا تو ٹوٹ جائے گا اور
اگر بینا ایرادہ اپنے سے نیکل آئے تو ٹوٹ
دینا چاہیے جان بُوझ کر نیگلنا نہیں چاہیے ।
(شارہل عمدہ، اینے تہمیثیہ بہاگ : 1 پے ج 477)

7- ہیجڑ تھا نیفاس کا خون آنا ((ماسیک دharma اथوا وہ رکت جو بچھا پیدا ہونے کے باوجود آتا ہے))

کیونکی ہدیس میں ہے کہ:

و عن أبي سعيد الخدري - رضي الله عنه - قال: قال رسول الله - صلى الله عليه وسلم -: «أليس إذا حاضت المرأة لم تصل ولم تنصم؟» متفق عليه

[क्या ऐसा नहीं है ? कि हैज़ में महिला सौम , सालत नहीं करती] (बुखारी हदीस नं: 304)

हैज़ तथा निफास वाली महिला बाद में रोज़े की क़ज़ करेगी नमाज़ की नहीं । क्योंकि माई आइशा कहती है :

عن عائشة رضي الله عنها قالت كنا نحيض على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم نظهر فيأمرنا بقضاء الصوم ولا يأمرنا بقضاء الصلاة (متفق عليه)

(हमें रसूल سल्लल्लाहु के ज़माने में हैज़ आता था फिर पाकी के बाद हमें रोज़ह क़ज़ा करने का हुक्म दिया जाता था नमाज़ क़ज़ा करने का नहीं) मुत्तफक अलैह ।

इस हदीس से यह भी साबित हुवा कि क्जाए उमरी नाम की कोई नमाज़ नहीं है क्योंकि अगर ऐसी बात होती तो हैज़ वाली महिलाओं को रोज़े के प्रकार नमाज़ की क़ज़ा का हुक्म दिया जाता ।

8- سौम(रोज़ा) तोड़ने की नियत कर लेना ।

चाहे कुछ भी न खाये न पिये । क्योंकि नियत
सौम(रोज़ा)का एक आधार तथा रुक्न है
(शरहुलम्मतेअ, इब्ने उसैमीन, भाग : 6 पेज 376)

9- इस्लाम से निकल जाना(अधर्मी)हो जाना ।

अतः जो भी किसी बात, कार्य, आस्था(अकीदा) या
इस्लाम से निकाल देने वाले कामों में से किसी
काम को कर ले जिसके कारण इस्लाम से निकल
जाये तो उसका सौम(रोज़ा) टूट जाएगा ,बल्कि
उसके सारे नेक कर्म बरबाद हो जायेंगे ,अल्लाह
तआला ने फरमाया:

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيْخَبْطَنَ
عَمْلَكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

【निःसंदेह तेरी ओर भी तथा तुझ से पहले(के सभी
नवियों)की ओर भी वही कीर्गई है कि अगर तूने
शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बरबाद हो
जायेगा तथा निश्चित रूप से तू हानि उठाने वालों
में से हो जायेगा】(रूरह जुमर-65)

डायलिसिस•००(गुर्दे की सफाई)अल्लाह हम सब को
सुखास्थ तथा सेहत दे आमीन
डायलिसिस दो प्रकार का होता है

1- गुर्दे की मशीन द्वारा अर्थात् खून इस मशीन में खींचा जाता है फिर उसे हानिकारक चीजों से साफ करके रगों से शरीर में लौटा दिया जाता है तथा कभी कभार रगों से कुछ गेज़ाई चीज़े भी दी जाती हैं।

2- पेट में डायलिसिस ज़िल्ली द्वारा, नाभि से ऊपर पेट की दीवार में छोटा सूराख करके नली डाली जाती है फिर लग भग दो लीटर कोई बहने वाली चीज़ पेट में दाखिल की जाती है जिसमें भारी मात्रा में चीनी होती है, यह पेट में कुछ देर रहता है फिर पुनः खींच लिया जाता है ऐसा एक दिन में अनेक बार किया जाता है। जिस से पेरिटोनिटिस के माध्यम से रक्त में इलेक्ट्रोलाइट्स और चीनी और नमक का आदान-प्रदान होता है, तथा वैज्ञानिक रूप से यह साबित है कि इन तरल पदार्थों(बहने वाली चीज़ों में) भारी मात्रा में पाई जाने वाली चीनी डायलिसिस ज़िल्ली के माध्यम से रोज़े रखने वाले के रक्त में प्रवेष होती है।

डायलिसिस(((गुर्दे की सफाई) के बारे में उलमा के दो मत में से सही मत अनुसार रोज़ह टूट जाता है

क्योंकि इस से शरीर को साफ रक्त मिलता है साथ ही साथ गेज़ाई चीज़ें भी मिल सकती हैं तो इस में रोज़े को तोड़ने वाली दो चीज़े हो जाती हैं । मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़, भाग : 15 पेज 274-275, फतावा रमजान, अशरफ अबदुल मक्सूद भाग : 2 पेज 477-478

हैंज़ तथा निफास के सिवा ऊपर लिखी गई सौम(रोजे)तोड़ने वाली चीज़ों से उस समय रोजा टूटेगा जब उनमें तीन शर्तें पाई जायें ।

1- सौम(रोजा) रखने वाले को हुकुम की जानकारी हो उसके बारे में जाहिल न हो तथा जान बूझ कर किया है । अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَاثُمْ بِهِ وَلَكُنْ مَا تَعْمَدُتُ قُلُوبُكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا (سورة الأحزاب)

(तुम से भूल चूक से जो कुछ हो जाये उस में तुम पर कोई पाप नहीं, प्रन्तु पाप वह है जिसका तुम इरादा करो तथा इरादा दिल से करो) سूरह अहज़ाब.5

2- उसे याद हो भूला न हो क्योंकि हदीस में है :

عن أبي هريرة رضي الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال من نسي وهو صائم . فأكل أو شرب ، فليتم صومه . فإنما
أطعمه الله وسقاه

【 سौम(रोजे)की हालत में जो भूल कर खा ले या
पी ले तो वह अपना सौम(रोजा)पूरा करे सच में
उसे अल्लाह ने खिलाया तथा पिलाया】 (मुत्तफ़क़
अ़लैह-1933-1155)

3- खुद मुखतार हो किसी ने जबर न किया हो
अतःकिसी रोजा रखने वाले का रोजा कोई
जबरदस्ती मजबूर करके तोड़वा दे तो उसपर न
कज़ा है न कफारह तथा उसका रोजा सही हो गा ।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ وَقُلْبُهُ مُطْمَئِنٌ بِالْإِيمَانِ
(जो मनुष्य अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ
करे उसके सिवाय जिसे(बाध्य) मजबूर किया जाये
तथा उसका दिल ईमान पर(स्थिर)कायम हो, प्रन्तु
जो लोग खुले दिल से कुफ करते हैं तो उन पर
अल्लाह का ग़ज़ब है तथा उन्हीं के लिए बहुत बड़ा
कोध तथा अज़ाब और यातना है) سूरह नहल : 106

अतः बिना इखतेयार तथा इरादा रोजे रखने
वाले के पेट में धूल या वस्तु चली जाये, या वुजू में
नाक में पानी चढ़ाने या कुल्ली करने में या तालाब

आदि में नहाने में पानी चला जाये तो उस का रोज़ा सही होगा तथा उस पर क़ज़ा नहीं है .और यही हुक्म इहतेलाम का भी है क्योंकि इस में भी कोई इखतेयार नहीं होता।

(مجالیس شہر رمذان، اینے ہسپتائیں 172- 173)

سُؤم(روज़ा) کیٰ ہالات مें جायज़ چیज़ें :

1- اگر پتی پتنی دونوں کو من پر کंटोل(نیयंत्रण) ہے تو بیوی کا بینا کسی پ्रکार کی شہвшہت(ویلास) بوسا لئنا .خेल کُود تथا دیل لگی کی باتें کرننا جایوج ہے اور اگر کंٹو رول نہीं ہے بات آگے بढ़نے یا مرنی نیکلنے کا خطرہ ہے تب نہीں ہے :

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَبِّلُ وَيُبَاشِرُ وَهُوَ صَائِمٌ وَكَانَ أَمْلَكُمْ لَأْرِبِّهِ " رواه البخاري

(نبی سلسلہ احمد اعلیٰہی و سلسلہ م روژے کی ہالات مें بوسا لेतے تथا شریر سے شریر میلاتے اور تुम مें سब سے اधिक اپنی شہвшہت پر کंٹو رول رکھنے والے ہے)، سہی بخاری. 1927 .

2- सिर पर पानी ड़ालना या तेल वगैरह लगाना । या दिन के किसी भी समय स्नान करना या ठन्डक प्राप्त करना ।

3- आँख में सुरमा लगाने या आँख, कान में दवा डालने या इनकी धुलाई करने या सिर तथा शरीर पर तेल या मरहम पटटी लगाने से रोज़ह नहीं टूटता ।

4- आवश्यकतानुसार बिना हलक के नीचे उतारे खाने का स्वाद चखना । इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि इब्ने अब्बास ने फरमाया है :

(हाँड़ी या किसी चीज़ के चखने में कोई बात नहीं) हदीस नं 1930 से पहले बाब बाँधा है. मजमूअ फतावा. फतवा कमीटी सऊदी अरब शाग 10 पेज 332

5- खुशबू लगाना या सूँघना हाँ अगर खुशबू की धूनी हो तो नहीं सूँधेंगे । मजमूअ फतावा, इब्ने तैमिय्यह भाग : 25 पेज 242

6- बिना मुबालगा कुल्ली करना या ठन्डक प्राप्त करने के लिए सिर या शरीर पर भीगे कपड़े रखना जायज़ है । रोज़े में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कपड़ा भिगो कर अपने ऊपर डाल लेते थे, और

इमाम हसन ने फरमाया है कि : रोज़े रखने वाला कुल्ली कर सकता है तथा ठन्डक प्राप्त कर सकता है(बुखारी, किताबुस्सियाम.रोज़ेदार के स्नान करने का बयान)

अबू बकरह रज़ियल्लाहु अन्तु ने बयान किया है कि: रोज़े की हालत में गरमी तथा प्यास के कारण मैंने नवी सल्लल्लाहुय अलैहि वसल्लम को अपने सिर पर पानी उँडेलते देखा है । (अबूदाऊद, ह०न॰2365, सहीसुननअबूदाऊद,अल्बानी .भाग2पेज61)

7- दिन में किसी समय मिसवाक करना या दाँत मंजन करना , हाँ ध्यान रखे कि मंजन भीतर पेट में न जाने पाये तथा बिना इरादह अगर चला गया तो उस दिन की कज़ा नहीं करनी होगी । मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़ भाग:15पेज260

मेरे ख्याल में अगर मंजन इस प्रकार तेज हो कि हल्क़ तक जा सकता है तो बचना बेहतर है रात में या फजर से पहले कर लिया करे।

8- मज़ी निकलना या अपने से इहतेलाम (स्वप्नदोष) हो जाना ।

9- उस आदमी का सौम(रोज़ा) रखना सही है जिस पर रात में स्नान अनिवार्य हो और फज्र या उसके बाद तक स्नान नहीं किया क्योंकि स्नान का सम्बन्ध सलात(नमाज़)से है सौम(रोज़ा) से नहीं , हाँ उसे स्नान करके पाक होने में जलदी करनी चाहिए ताकि फज्र की सलात जमाअत के साथ अदा कर ले । माई उम्मे सलमह तथा आइशाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करती हैं कि : (नबी سलल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान में फजर का समय हो जाता और आप जनाबत के कराण नापाक होते फिर स्नान करते और रोज़ह रखते) मुत्तफ़क अलैह

10- भूल कर खा या पी लेना ।

11- रोज़ा रखने वाले से जो भी काम बिना इच्छा या इखतेयार के हो जाये जैसे किसी के मुंह में मख्खी चली जाये,कोई घाव लग जाये,या नाक से खून निकल आये,पानी चला जाये,धूल मिट्टी मुंह में चली जाये आदि।

12- ऐसी सूई लगवान जो खूराक न हो जैसे बुखार की,इन्सुलीन,या चेक कराने के लिये खून

(रक्त) निकलवाना, साँस के लिये भाप लेना, दाँतों से खून आना आदि से रोज़ा नहीं टूटता।

13- रोज़े की हालत में दाँत निकलवाने से रोज़ह नहीं टूटता।

14- खट्टी डकार(ऊर्ध्वनिक्षेप)गले से निकलने के बाद अगर बिना इरादा अपने से वापस हो जाये तो रोज़ा नहीं टूटेगा तथा अगर बिना इच्छा और इरादा गले तक निकल आये तो थूक दे निगले नहीं। और अगर जान बूझ कर निगल लिया तो टूट जाये गा। (शरहुल्उमदः, इब्ने तयमियह भाग 1 - 477) (मजमूअ फतावा इब्ने बाज़ भाग : 15 पेज 260 रिसाल़फिस्याम-28-मजमू फतावा लजनः दाइमःभाग 10 पेज 322, मजमूअ फतावा, इब्ने तैमियह भाग : 25 पेज 242, मजालिस शहर रमजान, इब्ने उसैमीन 163)

15- दिल की कुछ रोग के इलाज के लिये जबान के नीचे कुछ टेबलेट रखे जाते हैं जो बहुत ही कम समय में तुरन्त पिघल जाता है तथा खून उसे दिल तक पहुँचाता है जिस से दिल का दवरह रुक जाता है, और इन टेबलटों का कुछ भाग पेट में नहीं

जाता तो इस से रोज़ह नहीं टूटता । (मुफतिरातुस सियाम अल्मुआसरह, डा० अहमद बिन खलील पेज 17)

16-Gastroscope, (منظار المعدة) यह एक मेडिकल आला है जो मेअदह तथा पेट के भीतर की तसवीर लेने या जाँच के वासते कुछ काटने या किसी दूसरे काम के लिये मन्ह तथा हलक़ से पेट में डाला जाता है, इसके बारे में इब्ने उसैमीन रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि इस से रोज़ह नहीं टूटेगा हॉ अगर इस आले में कोई तेल वगैरह लगा हो तो टूट जायेगा तथा वाजिब रोजे में इसका प्रयोग केवल बहुत मजबूरी में है ।

शरहुल मुमतोअ भाग :6पेज 383-384, मुफतिरातुस सियाम अल्मुआसरह, डा० अहमद बिन खलील पेज 18-21

17- चेतनाशून्य करने वाली औषधि (बेहोश करना) यह दो प्रकार होता है 1- पूरी बेहोशी 2- स्थानीय संज्ञाहरण तथा शरीर के किसी स्थान का शून्य, कभी कुछ सुँधा कर किया जाता है तथा कभी चमड़ी के नीचे इहसास के स्थान में ठोस सूई डाल कर किया जाता है, तथा ऐसा अधिक्तर

स्थानीय संज्ञाहरण तथा शरीर के किसी स्थान का शून्य किया जाता है जिह से शरीर में कुछ नहीं जाता इस से रोज़े पर कोई प्रभाव या असर नहीं पड़ता है हाँ अगर इस से पूरा दिन बेहोश रहे तो उसे उस दिन की कज़ा करनी होगी ।

इंजेक्शन से कभी पूरी बेहोशी तथा स्थानीय संज्ञाहरण अर्थात् शरीर का कोई स्थान शून्य होता है। तो अगर बोहोश करने वाले इंजेक्शन के साथ पौष्टिक तथा गेज़ाई सुई हो तो रोज़ह टूट जायेगा और अगर पूरी बेहोशी हो तथा पूरे दिन रहे तब भी रोज़ह टूट जायेगा हाँ अगर दिन में किसी समय होश आ गया तथा उसने फजर से पहले रोज़े की नियत करली थी तो उसका रोज़ह सही होगा (मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़ भाग : 15 पेज 259-मुफतिरातुस सियाम अल्मुआसरह पेज 24-26)

18- आक्सीजन गैस से रोज़ह नहीं टूटता : यह हवा है जो कुछ रोगियों को दिया जाता है जिस में कोई चिपकी हुई या भोजन वाली चीज़ नहीं होती। तथा यह साँस की नालियों में जाता है ।
मुफतिरातसु सियाम अल्मुआसरह पेज 22)

इसी प्रकार नाक तथा आस्थमा स्प्रे से रोज़ह नहीं टूटता प्रन्तु हो सके तो रात में लिया जाये (मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़ भाग : 15 पैज 264)

हाँ अगर नाक तथा आस्थमा स्प्रे में कोई टेबलेट या कैप्सूल का प्रयोग हो जिसे किसी मशीन में रख कर दबाया जाये जिस से कैप्सूल मुंह में फट जाये तो रोज़ह टूट जायेगा, क्योंकि इस कैप्सूल में आटा या पाउडर होता है जो फटने के बाद थूक या लार से मिल जाता है और मेअदह तक पहुँच जाता है तो इसका प्रयोग अनिवार्य एवं फर्ज़ सौम तथा रोज़े में उचित नहीं है। अगर इसका प्रयोग आवश्यक हो तो रोजा तोड़ दे तथा बाद में क़ज़ा करे तथा अगर इसका प्रयोग दिन तथा रात प्रत्येक समय ज़रूरी हो तो वह बूढ़े के प्रकार रोज़ा ना रखे तथा प्रत्यक दिन के बदले एक कंगाल खिलाये। (मजमूअ़ फतावा इब्ने उसैमीन भाग : 19 पैज 210-213)

19- एनीमा, पाखाने के मार्ग में हीट बुखार के कारण कोई दवा रखने या बुखार नापने के लिये कोई चीज़ दाखिल करने, महिला के शरमगाह (योनि) में कोई दवा टपकाने या इलाज के लिये बत्ती

चलाने से रोज़ह नहीं टूटता, क्यों कि यह खाने पीने जैसा नहीं है मुफक्तिरातुस्सियाम .पेज377 .
तुहफतुल इख़वान, इब्ने बाज़ पेज182)

रमज़ान के दिनों में निम्न प्रकार के उज़्ज़ वालों के लिए रोज़ा तोड़ना जायज़ ह

1- रोगी तथा बीमार, याद रहे रोग दो प्रकार का होता है । पहला : वह रोगी जिसके रोग समाप्त होने तथा स्वास्थ्य पाने की आशा है । ऐसे रोगियों को अल्लाह पाक ने रमज़ान में रोज़े तोड़ने की इजाज़त(अनुमति) दी है, हाँ जितने दिनों का रोज़ा तोड़ा है रमज़ान के बाद क़ज़ा करना अनिवार्य है , अल्लाह पाक ने फरमाया :

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعَدَّهُ مِنْ أَيَّامِ

हाँ जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिन्ती तथा गणना पूरी करनी चाहिये (सूरह: बकरः184)

दूसरा : ऐसा रोग जिसके जाने की आशा बिल्कुल नहीं है । तथा उस में रोज़ा रखना कष्ट है । रमज़ान में रोगी की तीन हालत होती है ,

پہلیٰ ہالات : ائسہ رੋگی جیس پر رੋਜ़ਾ رਖਨਾ کषਟ ن ਹੋ ਤਥਾ ਨ ਹੀ ਉਸੇ ਰੋਜ਼ਾ ਹਾਨਿ ਪਹੁੱਚਾਯੇ, ਤੋ ਐਸੇ ਰੋਗੀ ਪਰ ਰੋਜ਼ਾ ਰਖਨਾ ਵਾਜਿਬ (ਅਨਿਵਾਰ੍ਧ) ਹੈ, ਕਿਂਕਿ ਯਹ ਐਸਾ ਉਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜਿਸ ਸੇ ਰੋਜ਼ਾ ਤੋਡਨਾ ਜਾਇਜ਼ ਹੋ।

ਦੂਜੀ ہالਤ : ਵਹ ਰੋਗੀ ਜਿਸਕੇ ਲਿਯੇ ਰੋਜ਼ਾ ਰਖਨਾ ਅਧਿਕ ਕ਷ਟ ਹੋ ਪ੍ਰਨਤੁ ਉਸੇ ਰੋਜ਼ਾ ਹਾਨਿ ਨ ਪਹੁੱਚਾਯੇ, ਤੋ ਉਸਕੇ ਲਿਯੇ ਰੋਜ਼ਾ ਨ ਰਖਨਾ ਵਾਜਿਬ ਹੈ, ਅਧਿਕ ਕ਷ਟ ਕੇ ਸਾਥ ਰੋਜ਼ਾ ਰਖਨਾ ਮਕਰੂਹ ਹੈ, ਅਲਲਾਹ ਕੇ ਰਸੂਲ سਲਲਲਾਹੁ ਅਲੈਹਿ ਵਸਲਲਮ ਨੇ ਫਰਮਾਯਾ :

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ أَنْ تَؤْتَى رِحْصَهُ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ تُؤْتَى مُعْصِيَهُ
 (ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅਲਲਾਹ ਪਾਕ ਅਪਨੀ ਨਾਫਰਮਾਨੀ (ਅਵਜ਼ਾ) ਨਾਪਸਦਾ (ਅਧਿਕ) ਕਰਤਾ ਹੈ ਉਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅਲਲਾਹ ਇਸ ਬਾਤ ਕੋ ਪਸਦਾ ਕਰਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸਕੀ ਇਜਾਜ਼ਤਾਂ ਕੋ ਕਿਯਾ ਜਾਏ) (ਮੁਸਨਦ ਅਹੁਮਦ, ਭਾਗ : 1 ਪੇਜ 108, ਅਲਵਾਨੀ ਰਹੇਮੁਹੂਲਾਹ ਨੇ ਇਰਾਵ ਮੌਹਨ 564 ਮੌਹਨ ਸਹੀ ਕਹਾ ਹੈ) ਤਥਾ ਸਾਰੇ ਉਲਮਾ ਇਸ ਬਾਤ ਪਰ ਸਹਮਤ ਹਨ, (ਮੁਗਨੀ, ਇਵਨੇ ਕੁਦਾਮਹ ਭਾਗ: 4 ਪੇਜ 403)

तीसरी हालत : ऐसा रोगी जिस के लिए रोज़ा रखना अधिक कष्ट हो तथा रोज़ा हानि पहुँचाये , तो उसके लिये रोज़ा न रखना वाजिब है अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا .

और अपने आप को क़त्ल न करो बेशक अल्लाह पाक तुम पर रहम करने वाला है) (सूरःनिसा: 29. मजालिसशहरे रमज़ान, ईब्ने उसैमीन पेज : 86)

● रोज़े की हालत में किसी ऐसे रोग लगजाने से जिसके कारण रोज़ा पूरा करना कष्ट हो तो रोज़ा तोड़ना जायज़ है । बाद में क़ज़ा करेगा,

● जब कोई मुसलमान माहिर(सूक्ष्म) विश्वसनीय अमानतदार डॉक्टर कहदे कि रोज़े से रोग आयेगा या रोग बढ़ जायेगा या स्वास्थ्य पाने में देर होगी तो रोज़ा तोड़ना जायज है बाद में क़ज़ा करना होगा । (फतावा इब्ने बाज़, भाग : 15 पेज 214)

2- ऐसा रोगी जो रोग के कारण कभी भी रोज़े न रख सके तथा उसके रोग समाप्त होने की आशा न हो जैसे बूढ़ा(अधिक उमर वाला)वह रोगी जिसके रोग जाने की आशा न हो, तो ऐसे पुरुष तथा

مہیلہ پر رोج़ا رکھنا انیवار्य تथا واجیب نہیں
ہے کیونکि وہ شکیت ہی نہیں رکھتے । اللہ تعالیٰ پاک نے
فرمایا : **لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا**

اللہ تعالیٰ کسی بھی آتما پر اسکی تاکت سے
ادھیک بوجھ نہیں ڈالتا) (سور : بکر : 280)

ऐسے لوگ ہر دن کے بدلے اک کنگال کو خانا
خیلائیں گے، چاہے خانا بننا کر توڈے ہوئے روجے کے
ہیساں سے کنگالوں کو پکا کر اک ہی دن خیلائے
دین، یا پ्रتی دن خیلائے رہنے، چاہے ہر دن کے بدلے
سوا کیلو کے ہیساں سے جو اس گرام یا شہر میں
آم لوگ خاتے ہیں گللا نیکاں کر کر کوئی کنگالوں
یا اک کنگال کو دے دئے، چاہے شुڑ مہینے میں یا
بیچ میں یا انٹ میں । (مجموعہ فتاوا، ایڈنے باؤ ج ہاگ :
15 پےج 202-205)

3- یاتری، مسافر : جس یاتری میں نماز کس
کرنے کا جایجہ ہے اس میں روجہ توڈنے بھی جایجہ ہے ।
اللہ تعالیٰ پاک نے فرمایا :

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعَذَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ
ہاں جو رہی ہو اथواب یاتری میں ہو، تو اسے دوسرے
دین میں یہ گنتی تھا گتنا پوری کرنی چاہیے
(سورہ: بکر: 184)

और اللہاہ کے رسول سلسلہ احمد اعلیٰہی وسائل م
نے فرمایا : (اللہاہ نے یात्रی سے روजے کو کشما
کر دیا ہے) (ابوداؤد : ہـ 2408-

● جو مہور عالماء کے یہاں کس کی سیما 48 میل
(88 یا 79 کیلومیٹر) ہے۔

● یात्रی جب اپنا گرام یا شہر سے باہر
نیکل جائے تب روپا توڈے گو یہ نہیں کہ کل
یاترا کرننا چاہتا ہے تو روپے کی نیت ہی ن
کرے تھا گھر سے خا پی کر نیکلے کیونکہ یاترا
ابھی شुरू نہیں ہوا ہے । (شارہ محدث مختصر باغ : 6
پج 359)

● جب یात्रی اپنے یاترا میں کسی شہر یا گرام
میں چار دن سے اधیک دن ٹھہرنا کی نیت کرے
تو وہ نماز پوری پढے گا تھا رمذان کا مہینا
ہو تو روپا بھی رکھے گا ، کیونکہ آپ سلسلہ احمد
اعلیٰہی وسائل حجۃ التوکل ویدا اور مکہ میں 14
جولہ حجہ ایتوار کے دن آئے اور مکہ میں
ایتوار، سوموار، میگالوار اور بیڈوار کو ٹھہرے
فیر جو مرہات کو فجر پढ کر مینا کی اور
نیکلے ، آپ ان دنوں میں کس کرتے ہے । اور

अगर चार दिन या इस से कम दिन ठहरने की नीयत करे तो नमाज़ कऱ्स पढ़ेगा तथा रमज़ान का महीना हो तो रोज़ा भी नहीं रखेगा ।

⦿ अगर यात्री के यात्रा के दिन नियुक्त एवं निर्धारित न हो आज कल,आज कल की बात हो तथा ठहरने की नीयत न हो तो वह पूरे यात्रा में कऱ्स करेगा तथा रमज़ान का महीना हो तो रोज़े भी नहीं रखेगा चाहे जितना दिन ही क्यों न हो क्योंकि सफर की मुद्दत मुतअय्यन एवं निर्धारित नहीं है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक में बीस दिन ठहरे इसी प्रकार एक बार मक्कह में दस दिन ठहरे तथा आप कऱ्स करते थे(मजमूअ फतावा इब्ने तयमियह भाग : 24 पेज 17 मुग़नी, भाग 3 पेज 153)

⦿ अगर यात्रा में रोज़ा रखना बिल्कुल कष्ट न हो, रोज़ा रखना भी आसान हो तथा तोड़ना भी , तो रोज़ा तोड़ना भी जायज़ है तथा रखना भी । क्योंकि हमज़ह बिन अमर अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यात्रा में रोज़े के बारे में पूछा, तो आप ने फरमायाः (चाहो तो रोज़ा रखो चाहो तो तोड़ दो) (मुत्तफ़्क अलैह)

پرنتو شیخِ اینے بाजُ رہے مہللاہ کے یہاںِ افجھل رोز़ا ن رکھنا ہے । ہاں اگر باد میں کڈا کرننا کषٹ ہو تو رکھنا بہتر ہے । (مجموٰۃ فتحاوا اینے بآج : بآگ : 15 پے ج 234- 244)

اور شیخِ اینے عسَمین رہے مہللاہ کہتے ہیں کہ ایسی ہالات میں روزا رکھنا افجھل ہے । (مجالیس شاہرے رمذان : 82)

�दि یاترا میں روزا رکھنا ایتنा کषٹ ہے کہ سہا تथا برداشت کیا جا سکتا ہے پرنتو روزا ن رکھنے میں آسانی ہے، تو روزا توڈنا مुسٹہب اور بہتر ہے، روزا رکھنا مکرہ ہے । کیونکہ ہدیس میں ہے : (یاترا میں روزا رکھنا بلالہ نہیں ہے) مُعْتَفَكَ الْأَلَهِ

ہاں اگر یاترا میں روزا رکھنا اधیک کषٹ ہے، برداشت سے باہر ہے، یا روزا ہانی پھٹکاہے تو ایسی ہالات ایک ایک ایسی ہالات میں روزا توڈنا واجیب ایک ایک انیوار्य ہے، روزا رکھنا ہرام ہے । اعلیٰ احمد پاک نے فرمایا :

وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا .

(और अपने आप को क़त्ल न करो बेशक अल्लाह
पाक तुम पर रहम करने वाला है) (सूरःनिसा : 29)
और जिस वर्ष मक्कह फतह हुआ सहाबा ने आप
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि रोज़ा
रखना कष्ट है, तो आप ने एक पियाला मंगाया, उसे
इतना ऊपर उठाया कि लोगों ने देखा आप ने उस
से पिया. फिर आप से कहा गया कि : कि कुछ
लोग रोज़े से हैं, इस पर आप ने फरमाया :

أولئك العصاة، أولئك العصاة

(यह नाफरमान लोग हैं, यह नाफरमान लोग हैं)
(सही मुस्लिम ह०न◦1114)

इसी प्रकार अगर कोई रमज़ान के महीने
में इस लिए यात्रा करता है ताकि उसे रोज़ा न
रखना पड़े तो ऐसा करना हराम है, उसे अल्लाह से
तौबह करना चाहिए, तथा यात्रा से लौट अना
चाहिए और रोज़ा रखना चाहिए, और अगर नहीं
लौटता है तो उसे ऐसे यात्रा में भी रोज़ा रखना
पड़ेगा ।(फ़ि़क़हुल् इबादात. इब्ने उसैमीन, 282)

**4- हैज़ तथा निफास (माहवारी तथा ज़च्चा)वाली
महिला :**

ऐसी महिलाएँ रमज़ान में उतने दिन रोज़ा नहीं रखेंगी जितने दिन रक्त आएंगा, बाद में क़ज़ा करेंगी। अतः ऐसा रक्त आते ही रोज़ा टूट जाएगा चाहे दिन के किसी भी भाग में आए। और जब दिन के किसी भी भाग में पाक हो जाए तो उस दिन के बाकी भाग में रोज़ा नहीं रहेगी। इसी प्रकार ऐसी महिला अगर रात में पाक हो जाए चाहे फज्ज से कुछ ही मिनट पहले तो उसे उस दिन से रोज़ा रखना होगा चाहे वह फज्ज के बाद स्नान करे।

5- गर्भवती तथा दूध पिलाने वाली महिला :

अनस बिन मालिक कअबी ने अल्लाह के रसूल की हदीस बयान किया है कि आप ने फरमाया : (अल्लाह ने यात्री से आधी नमाज़ तथा यात्री, गर्भवती और दूध पिलाने वाली से रोज़ा को क्षमा कर दिया है) (अबूदाऊद ह०न० 2408)

इमाम बुखारी रहेमहल्लाह ने फरमाया है कि : (हसन बसरी तथा इब्राहीम नखई ने गर्भवती और दूध पिलाने वाली महिला के बारे में कहा है कि : अगर उन दोनों को अपने ऊपर या अपने बच्चे

पर खतरा हो तो दोनों रोज़ा तोड़ देंगी फिर बाद में क़ज़ा करेंगी) (फतहुल्बारी, इब्ने हजर : भाग : 8 पेज़: 179-180)

गर्भवती और दूध पिलाने वाली महिला का हुक्म रोगी के प्रकार है, अगर इन्हें रोज़ा रखने में न सहने के लायक कष्ट हो या अपने ऊपर या अपने बच्चे पर खतरा हो तो रोज़ा तोड़ देंगी तथा जितने दिना तोड़ी हैं बाद में क़ज़ा करेंगी । प्रन्तु अगर रोज़ा रखने में कोई कष्ट नहीं या बर्दाश्त करने के लायक कष्ट है तथा अपने ऊपर या बच्चे पर कोई खतरा नहीं है तो रोज़ा रखना ज़रूरी है।

6- जिसे रोज़ा तोड़ने पर मजबूर कर दिया जाएः

जैसे किसी को कोई मार मार कर या जान माल या संतान की धमकी देकर रोज़ा तोड़ने पर मजबूर कर दे । तो हानि से बचने के लिए उसके लिए रोज़ा तोड़ना जायज़ है । अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : (अल्लाह ने मेरे लिए मेरी उम्मत से उन चीज़ों को क्षमा कर दिया है जो गलती, या भूल चूक से हो जाए या

जिस पर उन्हें मजबूर किया जाए) (इब्ने माजहः ह० न० 2043)

7- दूसरे की कोई ऐसी ज़रूरत पूरी करने के लिए रोज़ा तोड़ना जो बिना रोज़ा तोड़े पूरी न की जा सके ।

जैसे किसी डूबने वाले को निकालना, किसी जलने वाले को बचाना, किसी रोगी के लिए रक्त दान करना आदि । क्यों कि ऐसे लोगों को बचाना वाजिब है ताथा तोड़े हुए रोज़े का बाद में केवल क़ज़ा करेगा । (शारहुल्मुम्तेअः : इब्ने उसैमीन, भाग : 6 पेज : 366-365)

8- इसी प्रका अधिक भूक, प्यास का लग जाना कि मौत का खतरा हो या शारीरिक किसी हानि के पहुँचने का डर हो तो रोज़ा तोड़ना जायज है , और बाद में क़ज़ा करेगा । अल्लाह पाक ने फरमाया:

وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا .

(और अपने आप को क़त्ल न करो बेशक अल्लाह पाक तुम पर रहम करने वाला है) سूरःनिसा: 29

9- अल्लाह के मार्ग में जिहाद के लिए ताक़त प्राप्ति के लिए रोज़ा तोड़ना जायज है बाद में क़ज़ा करना पड़ेगा ।

فَرْجٌ سُؤْمَ(رَوْجَّا) كِيْ كَجَّا:

यात्री, हैज़ तथा निफास वाली महिला, वह रोगी या गर्भवती अथवा दूध पिलाने वाली महिला जो सौम(रोज़ा) रखने की शक्ति नहीं रखती या सौम(रोज़ा) रखने के कारण उसे या बच्चे को हानि पहुंचने का खतरा है तो वह सौम(रोज़ा)(तोड़ सकती है तथा यह लोग बाद में कज़ा करेंगे ।

اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَعْمَلُونَ
فَعِدَّةُ مِنْ أَيَّامٍ أَخْرَى

(वह दूसरे दिन की गिनती पूरी कर लें,)
سُورَةُ الْبَكَارِ: 184)

प्रन्तु अगर कोई बिना उजुर के रमज़ान के रोज़े छोड़ा है तो कज़ा के साथ तोबह तथा इस्तिग़फार भी करना होगा तथा उसे तत्काल कज़ा करना होगा । क्योंकि जिस आदमी ने रमज़ान के दिन में अपनी पत्नी से हमविस्तरी की थी उसे नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोज़े के साथ इस्तिग़फार तथा क्षमायाचना करने का हुक्म दिया था । (अबूदाऊद ह० न० 2393, मजालिस शहर रमज़ान, इब्ने उसैमीन पैज 97)

 रमज़ान के छूटे हुए सौम(रोज़ा) की कज़ा का कोई विषेश समय नहीं है हाँ आसानी अनुसार अगला रमज़ान आने से पहले जितनी जल्दी हो सके कज़ा कर लेने चाहिए। बीच बीच में नाग़ा करके भी रख सकता है वैसे लगतार रखना अफ़ज़ल है। क्यों कि लगतार रोज़ह की कज़ा करना अदा के अधिक (अनुरूप) मुशाबेह है तथा इस से जल्दी ज़िम्मेदारी अदा हो जाती है और कौन जानता है कि कल हमारा क्या होगा? (शरहुल मुमतेझ, इब्ने उसैमीन, भाग: 6 पेज 446)

इसी प्रकार वह मुसलमान महिला या पुरुष जो बुढ़ापे की उस उमर को पहुँच जायें कि सौम(रोज़ा) रखने की विल्कुल कभी भी शक्ति न रखते हों या वह रोगी जो सौम(रोज़ा) रखने के लायक स्वास्थ्य की आशा ना रखता हो तो ऐसे लोगों के लिए सौम(रोज़ा) रखना ज़रूरी नहीं है हाँ हर दिन के बदले एक कंगाल एवं ग़रीब को खाना खिलाना अनिवार्य है। तथा ऐसा ही वे सारे लोग जो कभी भी सौम(रोज़ा) रखने या कज़ा करने की जिसमानी (शारीरिक) ताकत नहीं रखते हर दिन के

बदले एक कंगाल एवं ग़रीब को खाना खिलाएँगे ।
अल्लाहने फरमाया है-

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعَدَّهُ مِنْ أَيَّامِ أُخْرَ وَعَلَى
الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةً طَعَامٌ مَسْكِينٌ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ
وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(परन्तु अगर तुम में से जो मनुष्य रोगी हो या यात्रा में हो तो वह अन्य दिनों में गिन्ती पूरी कर ले तथा जो इसकी ताक़त रखता है फिदिया में एक कंगाल तथा ग़रीब को खाना दे फिर जो मनुष्य भलाई में बढ़ जाये वह उसी के लिए बेहतर है । लेकिन तम्हारे हक़ में बेहतर कर्म सौम यानी रोज़े रखना ही है अगर तुम जानते हो- (सूरह बक़रः 184)

यदि इनमें से किसी ने रमज़ान में कंगाल नहीं खिलाय तथा रमज़ान के बाद मर गया तो उसके छोड़े हुये धन में से खिलाया जायेगा ।

➊ यदि कोई मुसलमान वाजिब रोज़े की कज़ा को टालता रहा जब कि वह कज़ा कर सकता था यहाँ तक कि अगला रमज़ान आने से पहले मर गया तो शैख इब्ने बाज़, शैख इब्ने उसैमीन कहते हैं कि उसकी ओर से रोज़ह रखना मुस्तहब तथा बेहतर है वाजिब नहीं अगर किसी ने रख दिया तो

ठीक वरना प्रत्येक दिन के हिसाब से उसके छोड़े हुये धन में से कंगाल खिला दिया जाये । क्योंकि मुस्नद बज्जार में मार्ड अईशा की हदीस है : (उसका वली अगर चाहे तो उसकी ओर से रोज़ह रखे) मजमूअ़ ज़वाइद में इमान हैसमी ने इसकी सनद को हसन कहा है. नैलुल अवतार, शौकानी भाग : 3 पेज 179, शरहुल मुमतेअ़, इब्ने उसैमीन भाग : 6 पेज 453-458

 नफली रोज़े से पहले छूटे हुये वाजिब रोज़े की क़ज़ा अफज़ल और वाजिब है | मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़, भाग : 15 पेज 388-394, शरहुल मुमतेअ़ भाग : 6 पेज 447-448

سُوئِم(رَوْجَأْ) کی حالت میں ناجا یَوْجَ تथا ہرَام کام :

ہرَام کہتے ہیں کہ جیسکے کرنے والے کو سِجَّا دی جائے تथا छोड़नے والے کो سवاب میلے ।

سُوئِم(رَوْجَأْ) کے وَلَ خانے پینے تथا پتنی سے ہم بیسْتَری سے رُکنے کا نام نہیں ہے بلکہ یعنی سارے پاپوں سے رُکنے کا نام ہے جیسے اَللَّا هُوَ أَكْبَرْ

तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
ने हराम किया है ।

1- सौम(रोज़ा)रखने वाले पर बिना शरई
बहाना के वह सारी चीज़ें हराम हैं जिन से
सौम(रोज़ा)टूट जाता है ।

2- सौम(रोज़ा)रखने वाले पर हर वह चीज़ हराम
है जिसे अल्लाह ने सदैव हराम किया है इस लिए
सौम(रोज़ा)रखने वाले पर हर उस बात तथा कार्य
एवं कर्म से सदैव बचना अनिवार्य है जो हराम है
चाहे रोज़े की हालत में हो या बिना रोज़े के हो ।
हम निम्न में उदाहरणतः कुछ कार्य लिख रहे हैं इस
आशा के साथ कि हम सब इनसे बचेंगे इन
शाअल्लाह

﴿ किसी भी प्रकार का जान बूझ कर झूट
बोलना, झूटेकार्य करना, आरोप लगाना, झूटी गवाही
देना, जहालत और अज्ञानता के कर्म करना, नाच
गाने, फ़िल्म, डरामे तथा बेहयाई की चीज़ें देखना
या सुनना ,अन्याय और आक्रमण बुरे कर्म करना,
किसी प्रकार का अत्याचार करना आदि ।

क्यों कि हदीس में है :

عن أبي هريرة : عن النبي صلى الله عليه و سلم قال (من لم يدع قول الزور والعمل به والجهل فليس الله حاجة أن يدع طعامه وشرابه)

(जो झूट बोलना, झूट पर चलना तथा जहालत के कार्य न छोड़े तो अल्लाह को कोई आवश्यकता नहीं है कि वह अपना खाना और पीना छोड़े) (सही बुखारी- 1903)

दूसरी हदीس में है (सौम(रोज़ह) खाने और पीने से रुकने का नाम नहीं प्रन्तु निष्क्रिय और फोहश व अश्लील भाषा से रुकने का नाम है , तो अगर तम्हें कोई गाली दे या तम्हारे साथ कोई जहालत करे तो तुम कहोः मैं रोज़े से हूँ मैं रोज़े से हूँ) इब्ने खुज़ैमह.ह:न:1996

इसका यह अर्थ नहीं कि सौम(रोज़ा)की हालत में झूट बोलने से सौम(रोज़ा) टूट जाता है हाँ उसके सौम(रोज़े)के सवाब में कमी आजाती है ।

 **ग़ीबत, चुगली** । अपने भाई के पीठ पीछे कोई ऐसी बात या शारीरिक दोष कहना जो उसे ना पसन्द हो चाहे वह चीज़ उसमें पाई ही क्यों ना जाये, तथा ना पाई जाने वाली बात कहना तुहमत

है, और चुगुलखोरी : लोगों की बतों को फसाद तथा फितना तथा उपद्रो मचाने के लिये ऐक दूसरे से कहना ।

अल्लाह ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَبِرُوا كَثِيرًا مِّنَ الظُّنُونِ إِنَّمَا
وَلَا تَجْسَسُوا وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا أَيُّهُبْ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلْ لَحْمَ
أَخِيهِ مَيْتًا فَكِرْ هَمْمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَابُ رَحِيمٌ)

[हे ईमान वालो! अधिकांश बुरे अनुमानों से बचोःविश्वास करो कि कुछ बुरे अनुमान पाप हैं , तथा भेद न टटोला करो और न तुम में से कोई किसी की गीबत करे , क्या तुममें से कोई भी अपने मरे भाई का माँस खाना प्रिय समझता है ? तुम्को उस से धिन होगी । तथा अल्लाह से डरते रहो निःसंदेह अल्लाह क्षमा स्वीकार करने वाला कृपालु है] (हूरह हुजुरात-12)

तथा हदीس में है : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّافٌ

[स्वर्ग में चुगली करने वाला नहीं जायेगा] (सही बुखारी-6056)

 कुकर्म बकना तथा देखना, गाली गुलूज चोरी, खियानत, विश्वासघात, बात चीत तथा लेन देन , तिजारत , मामेले में धोका धड़ी आदि

नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने فرما�ا:
(जिसने हमारे ऊपर हथियार उठाया वह हमरे मार्ग पर नहीं तथा जिस ने हमें धोका दिया वह हमारे मार्ग पर नहीं है) سہی مُسْلِم. ح: ن: 101-102

﴿ سَلَاتُ(نَمَاجِ) تَثَّا اَنْيَ وَاجِبَ كَامَّاً
छोड़ना आदि ।

सौम(रोज़े)के आदाब तथा सुन्नतें

सुन्नत कहते हैं कि करने वाले को सवाब मिले तथा छोड़ने वाले को सजा न मिले ।

1- **सहरी खाना :** अन्तिम रात में रोज़ह रखने वाला जो कुछ खाता पीता है उसी को सहरी कहते हैं। रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है (सहरी करो सहरी करनें में बरकत है) (बुखरी, مُسْلِم)

सहरी का समय रात के अन्तिम तीसरे पहर से लेकर फज्ज के समय तक होता है ।

सहरी करना ऐसी सुन्नत है जिस पर नबी पाक ने जोर दिया है ,अगर कोई बिना सहरी के रोज़े रखे

तो भी कोई बात नहीं वह केवल सहरी की बरकत नहीं पायेगा ।

सहरी के बारे में अल्लाह के रसूल की कहु हदीसें पढ़ें !

●- सहाबी का बयान है कि :मै नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आप सहरी कर रहे थे तो आप ने कहा : (यह बरकत है जिसे अल्लाह ने तुम्हें दिया है तो इसे ना छोड़ो) (सही सुनन नसई, अलबानी, भाग :2 पजे 107)

●- इरबाज़ बिन सारियह कहते हैं कि मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान में सहरी के लिये बुलाया और कहा : (दोपहर के मुबारक खाने पर आओ) । सही सुनन अबूदाऊद भाग : 2 पेज 55 सहरी को दोपहर का खाना आप ने कहा है ।

●- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (सहरी खाना बरकत है तो इसे ना छोड़ो, चाहे पानी का एक घूँट ही पी लिया करो, क्योंकि अल्लाह तथा उसके फरिशते सहरी करने वालों पर दुआ करते हैं) सही तरगीब व तरहीब, अलबानी, ह०न० 1070

➊ نبی سلسلہ احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ و سلیمان بن عاصی رحمۃ اللہ علیہ کی سب سے بہتر سہری خجور (ہے) سہی سونن ابوداؤد، اعلیٰ بانیٰ باغ : 2 پے ج 55

➋ نبی سلسلہ احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ و سلیمان بن عاصی رحمۃ اللہ علیہ کی سب سے بہتر سہری خجور (ہے) سہی مسلم، حن ۱۰۹۶

2- سہری کرنے مें تا خیر اور فیل مب کرنانا:
تथا اننیت م سماں میں خانا । نبی سلسلہ احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ و سلیمان بن عاصی رحمۃ اللہ علیہ کے سہری سے فاریغ ہونے تथا فجر کی نماز شروع ہونے میں اتنا سماں رہتا ہے کہ پچاس آیت پढ़ سکتے ہے (مُتْفَكِّرُ اُلَّاہُ)

➌ کوچھ لोگ سہری تथا ایفٹار میں انجان پر بھروسہ کرتے ہیں چاہے انجان سماں پر ہو یا بینا سماں ہو، جبکہ سہری یا ایفٹار میں اسی مُعْذِّیٰ زن کے انجان کا اتنے بار ہوگا جو بیلکل سہی سماں پر انجان دےتا ہو ورنہ سماں ہونے پر ایفٹار کیا جائے گا اور سماں ختم ہوتے ہی سہری کرننا بند کر دیا جائے گا ।

سہی سماں پر فجر کی انجان سونتے سماں اگر خانا، پانی کا برتانہ ہاتھ میں ہو تو اپنی

ज़रूरत पूरी कर सकते हैं ,अबूहुरैरह रजियल्लाहु
अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

عَنْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ
قَالَ: "إِذَا سَمِعْتُمْ أَحَدَكُمْ النَّدَاءَ وَالْإِنَاءَ عَلَى يَدِهِ، فَلَا يَضُعُهُ حَتَّى
يَقْضِيَ حَاجَتَهُ مِنْهُ"

जब कोई अज़ान सुने और बरतन उसके हाथ में हो
तो उस से अपनी ज़रूरत पूरी करने के बाद
रखे(अबूदाऊदःह०न०2350)

3- सूर्य ढूबते ही इफ्तारर करना तथा
इफ्तारर करने में जल्दी तथा सहरी करने में देर
करना: नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान
है : उस समय तक लोग भलाई पर रहें गें जब
तक इफ्तार करने में जल्दी तथा सहरी करने में देर
करेंगें (सही बुखारी, सही मुस्लिम)

दूसरी हदीस में नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने
फरमाया(इस्लाम उस समय तक गालिब रहेगा जब
तक लोग इफ्तार करने में जल्दी करेंगें, क्योंकि
यहूदी एवं नसरानी इफ्तार करने में लेट तथा
विलम्ब करते हैं)(सही सुनन अबूदाऊद भाग:2पेज58)

پ्रش्न : جین دेशों مें دین لंबा ہوتا ہے وہاں روزہ کیسے رکھے جائے؟

उत्तर : 1- جین دेशों में سूर्य डूबنے تथा نیکلनے से دین اور رات مالوں ہوتا ہے پرنتु گर्मी में دین بहتु لंਬا تथا سردی में چोटا ہوتا ہے یا اسکے علٹا، مگر 24 گھن्टے ہی ہوتے ہیں، تو وہاں نماز اور روزہ شاربیٰ تواریں پر اُنکے مالوں اُवं پرسیدھ سماں مें ادا کیا جائے گا।

2- وہ دेश جहाँ گर्मी में سूर्य نہीں ڈूबتا اور سردی में نہीں نیکلتا یا وہ دेश جहाँ چ مہینا دین اور چ مہینا رات ہوتی ہے، تو وہاں کے لोگ اپنے اُن پड़ोسی دेशों کے انुसार جاہाँ سूर्य نیکلنے یا ڈूبनے سے دین تथا رات اُलग ہوتی ہے 24 گھن्टے کے ہিসاب سے نیکوت کر کے تथا انुமान لگا کر پاؤں نماजें ادا کرے گے تथا اُنہی کے ہیساں سے روزہ بھی رکھے گے। (مِجْمُوعَةِ فُتُواَتٍ، إِبْنَ الْمُبَارَكِ: بَعْدَ: 15، پے ج 164-169)

4- **ઇفٹار کے سماں دُعاء کرننا :** نبی سلیل لالہ اُللّٰہ اعلیٰہ وساللہ علیہ فَرَمَّاَهُ: (ઇفٹار کے سماں کی گई دُعاء (رُد) خُندن نہیں کی جاتی) | (سہی سُننِ اُبَدَّیٰ ماجہ 2 پے ج 86)

یاد رہے کہ **ઇفٹار** کے سماں

اللَّهُمَّ لِكَ صَمْتُ وَ عَلَيْ رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ
 (अल्लाहुम्मा लका सुमतु व अला रिज़्किका
 अफ़तरतु) पढ़ना सही हृदीस से सावित नहीं है(ज़ईफ़
 सुनन इब्ने माजह- 2355) इस हृदीस को अल्लामह
 इब्ने क़य्यम ने ज़ादुलमआद में.इमाम ज़हबी ने
 महुज्जब में,इब्ने हजर ने फुतूहात में,इमाम नव्वी ने
 मज़मूआ में,अलबानी ने इरवाअ में ज़ईफ़ कहा है
 बल्कि बिस्मिल्लाह कह कर सौम(रोज़ा) खोलना
 चाहिए ।

4- रुतब खजूर(अधकचरी) से खोलना
 चाहिये,अगर यह नहीं है तो सूखी खजूर अगर यह
 भी नहीं है तो पानी से इफ़तारर करना सुन्नत
 है,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मग्रिब की
 नमाज से पहले रुतब खजूर से इफ़तारर करते
 अगर रुतब नहीं है तो सूखी खजूर से, अगर खजूर
 नहीं है तो पानी के कुछ धूँट से इफ़तारर करते ।
 (सुनन तिरमिजी-696)

हाँ अगर कोई ऐसे स्थान पर हो जहाँ इफ़तारर के
 लिए कोई हलाल चीज़ न हो तो सूर्य डूबते ही दिल
 में इफ़तारर की नियत कर ले बाद में जब खाने
 पीने की कोई चीज़ मिले तब खाये ।

5- इफ्तारर के समय यह दुआ पढ़ना सुन्नत है: « ذَهَبَ الظَّمَاءِ وَابْتَلَتِ الْعُرُوقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ »
ज़हब ज़माएँ व अबूर्क उरूक व सबतल अजरू इन शाअल्लाहु

(पियास चली गई, रगें तर हो गई, सवाब सावित हो गया अगर अल्लाह ने चाहा) (अबू दाऊद) | इस हदीस को बहुत से मुहदेसीन ने हसन तथा कुछ ने सही कहा है।

याद रहे : अगर किसी मुसलमान ने किसी शहर में रोज़ा रखा फिर किसी अन्य शहर का यात्रा किया तो रोज़ा तथा इफ्तार उसी शहर के समय अनुसार करेगा जिस शहर का यात्रा किया है। उन्ही के साथ ईद करेगा, प्रन्तु अगर उसका 29 दिन से कम रोज़ा हुआ तो ईद के बाद एक दिन का क़ज़ा करेगा, और अगर 30 दिन से अधिक रोज़ा रखा तो ईद उन्ही के साथ करेगा, हाँ अगर अपने शहर लौट आया तो अपने शहर वालों के साथ करेगा। (मुख्तसर अल-फ़िक्हुल इस्लामी, मुहम्मद बिन इब्रहीम तुवयजरी: 114)

6- सौम(रोज़ा) की हालत में मिसवाक करना: नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सौम(रोज़े) की

ہالات مें اधिक میسواک کرتے�ے (سونن تیرمیزی)

یاد رہے !

➊ میسواک سے مुंह ساف رہتا ہے تथا اللہ اک کو پسند ہے (سہی سونن نسई، البانی، باغ 1 پے ج 4)

➋ نیمن ہالتوں مें میسواک اधیک پسند ہے |

ک- نیاد سے جاگنے کے باعد (سہی بُخاری هـ 245)

خ- پرtyek وعْد کرتے سماں (سہی بُخاری باغ : 4 پے ج 158)

ग- پرtyek نماذج کے سماں (سہی مُسْلِم هـ 252)

ن- گھر مें داخیل ہوتے سماں (سہی مُسْلِم هـ 253)

چ- کورآن مسجد کی تہلیکت تथا گھر سے نماذج کے لیے نیکلतے سماں |

(سہی تاریخ، البانی باغ : 1 پے ج 90-91)

7- بے کار باتें کہنے یا سुनنے تथا ہرام چیزوں دیکھنے سے بچنا |

8- ویشेष روپ سے اधیک سے اधیک اچھے تथا نئک کام کرنا |

اللّٰهُمَّ أَكْبِرْ تُوْ حُمَّنْ سَدَّهُمْ أَصْحَّهُ كَرْمَ كَأْ
أَوْسَرْ دَهْ تَهْهَهْ سَكِّيْكَارْ كَرْ / أَمَّيْنَ
رَمَّجَانَ كَهْ مَهْيَنَهْ مَهْ سَعِيْمَ(رَوْجَاهْ)تَهْهَهْ سَلَّاتَ
(نَمَّاجَهْ)كَهْ أَتِيرِيكَتَهْ كُوْچَهْ أَفَجَّلَ (سَرْوَتْتَمَ)
كَرْمَ:

1- **अधिक से अधिक कुरआन मजीद की तिलावत तथा सदका और दान :** नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान में अधिक से अधिक सदका खैरात करते थे तथा कुरआन मजीद सुनते सुनाते थे । (सही बुखारी,)

2- **उमरा करना :** नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फरमाया : (रमज़ान में उमरा का सवाब हज्ज के बराबर है,) (सही बुखारी)

3- क़ियामुल्लैल(तरावीह ,तहज्जुद की नमाज़) : नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (जिसने ईमान के साथ तथा सवाब के लिए रमज़ान में क़ियामुल्लैल (तरावीह की नमाज़) अदा किया तो उस के पिछले पाप झमा कर दिए जायेंगे ।)
(सही बुखारी)

﴿ ترावीह की سلात مुअक्कदह سुन्नत है, जो भी مुसलमान स्त्री तथा पुरुष इस बात की पुष्टि करते हुए कि यह अल्लाह का उतारा हुआ अधिकार है , तथा प्यारे नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई और कही हुई बात की पुष्टि करे और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने तथा सवाब चाहते हुए इखलास के साथ तरावीह पढ़ेगा उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जायेंगे । तरावीह की سलात जमाअत के साथ पढ़ना सुन्नत से सावित है जैसा कि माई आइशह रज़ियल्लाह अन्हा की हदीस में है (कि : अल्लाह के रसूल एक रात निकले और मस्जिद में सलात पढ़ी तो लोगों ने आप के पीछे सलात पढ़ी, फिर लोग इस विषय में बात चीत करने लगे तथा पहले से अधिक लोग जमा होगए, तो दूसरी रात भी आप निकले और लोगों को सलात पढ़ाई, फिर लोग इसका चरचा करने लगे जिससे तीसरी रात मस्जिद में अधिक संख्या मे जमा हो गए और आप ने सब को सलात पढ़ाई और चौथी रात मस्जिद में लोगों के सलात पढ़ने के लिए स्थान न होने के कारण आप नहीं निकले यहाँ तक कि फज्र के समय

निकले, फज्ज की सलात के बाद आप ने सभी को सम्बोधित करते हुए फरमाया : तुम लोगों की हालत से हमें कोई कठनाई नहीं प्रन्तु हमें खतरा है कि रात की सलात(तरावीह)तुम पर अनिवार्य न करदी जाये जिसे तुम न अदा कर सको । और यह रमज़ान मे हुवा) (मुत्तफ़क़ अलैह)

﴿ तरावीह की सलात दो दो रकात पढ़के सलाम फेरा जायेगा(सही मुस्लिम) और यह इशा की सलात के बाद पढ़ी जाएगी ।

﴿ तरावीह की सलात या रात की कोई भी नफली सलात हो 13 या 11 रकात है जैसा कि अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास की हदीस है कि: (अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में तेरह रकात पढ़ते था)(सहीह मुस्लिम-763)

और माई आइशा कहती है कि(अल्लाह के रसूल रमज़ान हो या रमज़ान के अलावह 11 रकात से अधिक नहीं पढ़ते थे)(मुत्तफ़क़ अलैह)

ऊपर लिखी गई दोनों हदीसों से इसी बात का ज्ञान होता है कि रात की जो भी नफली सलात हो वित्र

के साथ 11 या 13 रकअत ही सुन्नत तथा अफज़ल है।

﴿ बुखारी शरीफ की एक हदीस के आधार पर कुछ उलमा का कहना है कि नबी की सुन्नत तो 11 या 13 ही है प्रन्तु वित्र के साथ इस से अधिक 23 या 36 या 41 भी पढ़ सकते हैं हदीस यह है कि (रात की सलात दो दो रकअत है अतः जब तुम में से किसी को सुबह हो जाने का खतरः लगे तो एक रकअत पढ़ ले यह उसके लिए पहले पढ़ी गई रकअतों को वित्र कर देगी) (मुत्तफक अलैह)

﴿ अगर कोई क़ियामुल्लैल(तरावीह की नमाज) इमाम के साथ पढ़ा तथा इमाम के साथ पूरी करके खत्म किया तो उसे पूरी रात क़ियामुल्लैल का सवाब मिलेगा(सुनन अबूदाऊद)

मेरे मुसलमान उलमाए केराम ! हमें हर हाल में अल्लाह से डरते हुये अपने प्यारे नबी से साबित सुन्नतों को अपनाना तथा फैलाना चाहिये, और नबी की सुन्नत को छोड़ कर किसी उम्मती की बात पर तअस्सुब करना या फैलाना नादानी तथा मुसलमानों में फूट डालना है। आप जानते हैं कि

تاریخیہ جو کی ایک نफلی اممل ہے فرج نہیں تथا نبی کے سہی حدیس انुسार اधیک سے اधیک ترہ رکھا اور اس سے اधیک نہیں اور اینا ہی پڑنا سُنّت ہے اگرچہ علامہ نے اس سے اधیک پڑنے کی اجازت دی ہے ، مگر سبھوں نے افسوس نبی کی سُنّت کو کہا ہے ، پرانی بیس رکھا اور نبی کی سُنّت کہنا نبی پر تھہمت ہے جسکا جواب کہنے والے کو دینا ہوگا اور کوئی سہی حدیس سے یہ سایت نہیں کر سکے گا کہ نبی نے بیس رکھا اور تاریخیہ کی نمائی پڑی ہے تو اگر کوئی ویتر لے کر ترہ پڑتا ہے یا 11 تو آپ اسکو بُرا کیوں کہتے ہو اعلیٰ سے ڈرے تथا نبی کی سُنّت کو اپناوے اور فلاؤے । بُرا ن لگے ! بہت سارے لوگ مکہ تھا مدنہ کو دلیل بنانا کہ کہتے ہیں کہ وہاں بھی تو بیس ہی ہوتی ہے ؟ تو ہم یہ جاننا چاہیے کہ ہمارے لیے دلیل نبی کی سایت سُنّت ہے کوئی س्थان یا ادھمی نہیں نبی کے انتیریکت ہر ایک کی بات لی بھی جا سکتی ہے تथا چوڈی بھی ، خاص توار پر جب نبی کی سہی

ہدیس سے تکرایہ۔ دوسری بات ک्या مکہ تھا ممکنہ تھا مددیں میں ویسے تراویہ کی نماز پڑائی جاتی ہے جیسے اپنے دشمنوں میں، اپنے یہاں ن نمازوں میں ایتمینان نہیں کر آن کی سہی تریکے سے تیلابات۔ بس جلدی ہی جلدی جیسے مورگا چونچ مار رہا ہے، ماری آیشا نبی سلسلہ اعلیٰ ہی وسائل میں رمذان کی تراویہ کے بارے میں کہتی ہے کہ آپ رمذان یا اسکے الالاواہ کبھی بھی 11 سے اधیک نہیں پढ़تے تھا عوام رکعتوں کی لمباۓ اور خوبصورتی کے بارے میں کہا پوچھنا । (معتوف ک اعلیٰ ہے)

4- کدر والی رات(شबے کدر) کا انہتے ماام: رمذان مہینے کی اننیتیم دس راتوں کی کوئی موبارک رات کو لعلتول کدر کہتے ہیں۔ جس میں اعلیٰ پاک نے کر آن مజید عتارا جس میں پورے اک ورس کی اچھائی، بُرائی تھا روزیوں کا فیصلہ ہوتا ہے۔ جیسا کہ اعلیٰ نے فرمایا:

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٌ

(उसी رات مें हर अहम काम का फैसला होता है)
سُورہ دُخان-4

﴿شَبَّهُ كَدْرٌ كِيَ إِبَادَتٍ هُجَارٌ مَهْيَنُونَ كَيِ إِبَادَتٍ سَهْ بَهْتَرَ هُيِّ، أَلَّلَاهُ پَاكٌ نَيِّ إِسَيِّ مَيِّنَ كُورَآنٌ عَتَارَا (لَوَّهِ مَهْفُوجٌ سَهْ بَيْتُلِإِيْجَجَتٌ مَيِّنَ جُوَّ پَهْلَے آكَاشٌ پَرْ هُيِّ عَتَارَا، أَوَرْ وَهَنْ سَهْ آَوَشَيْكَتَا آنُوسَارٌ لَگٌ بَهَّ 23َ وَرْسَيِّ مَيِّنَ نَبَّيِّ سَلَلِلَلَّاهُوَّ أَلَّلَاهِيَّ وَسَلَلِلَمٌ پَرْ عَتَارَتَا رَهَا) تَثَاهُ إِسَيِّ مَيِّنَ جِبَرِيلٌ تَثَاهُ عَنْ كَيِّ سَانِجِيَّيِّ سَهْ أَدِيَّكَفَرِيشَتَهِ جَمَيِّنَ پَرْ دَيَا، بَرَكَتَهِ، بَلَّاَيِّ لَهِ كَرَ عَنْ كَامَنَهِ كَوَّ كَرَنَهِ كَلِّ لِيَّ عَتَرَتَهِ هَيِّنَ جِنَّكَا فَسَلَا إِسَيِّ وَرْسَيِّ مَيِّنَ أَلَّلَاهُ پَاكٌ فَرَمَّاتَا هُيِّ، يَهِ رَاتَ سَاكَشَاٰتَ (سَرَاسَرَ) شَانِتَهِ كَيِّ هُوتَيِّ هُيِّ، أَوَرْ فَجَّرَ كَيِّ نِيكَلَنَهِ تَكَّ هُوتَيِّ تَيِّ هُيِّ | أَلَّلَاهُ پَاكٌ نَيِّ فَرَمَّاَتَا ﴿يَئَلَّهُ الْفَدْرٌ خَيْرٌ مِنْ أَلْفٍ شَهْرٍ﴾

[شَبَّهُ كَدْرٌ هُجَارٌ مَهْيَنُونَ سَهْ بَهْتَرَ هُيِّ] (سُورَةِ كَدْرٌ - 3)
अर्थात् इस एक रात की इबादत 83 वर्ष 4 महीने की इबादत से बेहतर है।

﴿شَبَّهُ كَدْرٌ رَمَّاجَنَ كَيِّ اَنِتِمَ دَسَ رَاتَوَنَ كَيِّ تَاكَ رَاتَوَنَهِ مَيِّنَ هُيِّ يَانِي 21-23-25-27-29َ كَيِّ رَاتَوَنَهِ مَيِّنَ سَهْ كِسَيِّ إِكَ مَيِّنَ هُيِّ | رَسُولُ سَلَلِلَلَّاهَوَّ أَلَّلَاهِيَّ وَسَلَلِلَمٌ نَيِّ فَرَمَّاَتَا (كَدْرٌ وَالِّيَّ رَاتَ

رمضان کے اننیتیم دس دینوں مें تلاش کرو
(مُعْتَفَكْ أَلَّا هُنَّ)

दूसरी हदीस में है कि : (क़द्र वाली रात रमज़ान के अन्तिम दस दिनों की ताक(बेजोड़) रातों में तलाश करो) (مُعْتَفَكْ أَلَّا هُنَّ)

उबादह बिन सामित की हदीस में है कि नबी سल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम हमें क़द्र वाली रात बताने के लिये निकले इतने में मुसलमानों में से दो आदमियों ने आपस में तू तू मैं मैं करना शुरू कर दिया तो आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के दिल से क़द्र की रात किस दिन है भुला दिया गया (सही बुखारी)

 क़द्र वाली रात हर वर्ष रमज़ान के अन्तिम दस दिनों की रातों में बदलती रहती है अधिक अनुमान है कि यह ताक़ रात में होती है । (क़ाज़ी अयाज़, इमाम मालिक, सौरी, अहमद. इसहाक़ अब्सौर, इब्ने हजर, शैख इब्ने बाज रहेमहुमुल्लाह अलैहिम की यही राय है ।

शارہ نవ्वی بھاگ : 8 پےج 306, فاتحہل باری. ایب्नے هجر،
بھاگ : 4 پےج 266)

پرنتु جو آدمی اپنے دेश مें چाँد دेखنے के انुसार رمज़ान کی ان्तिम دس رातें الٰہ کی इबादत में गुजारेगा वह जरूर क़द्र वाली रात पा लेगा । الٰہ نے اپنے बन्दों पर दया करते हुए इसे छिपा रखा है ताकि लोग इसे पाने के لिए अधिक से अधिक प्रयास करें अगर बता देता कि किस रात है तो लोग केवल उसी रात इबादत करते और جब नहीं जानेंगे तो सारी रातें इबादत करेंगे जिस से उनका سवाब अधिक हो जायेगा ।

لیلِ تُل کَدْر (شَبَّہِ کَدْر) کی کुछ نیشانیاں

1- उस दिन सूर्य चौंदहवीं रात के प्रकार साफ उदय होगा प्रन्तु ऊपर चढ़ने तक उस में किरणें नहीं होंगी । (سहی مُسْلِم هـ ۱۷۶۷ سہی سुنن ابُو داؤد بَأْيَة : ۱ پے ج ۳۶۰ سہی سुنن تیرمیذی بَأْيَة : ۱ پے ج ۴۱۷)

2- वह रात न बहुत ठंडी न बहुत गरम होगी बल्कि दरमियानी होगी उस दिन सूर्य धीमी लाली लिये निकलेगा, उस रात तारे नहीं टूटेंगे, सारे सितारे चमकते दिखेंगे, फज्ज तक शैतान के दोनों सिंग नहीं ज़ाहिर होंगे ।

(ઇબને ખુજીમહ, હન્ન 2190, જામેઅ સહીહ , અલવાની હન્ન 5351, ફતહુલબારી. ઇબને હજર, ભાગ : 4 પેજ 260)

શૈખ ઇબને ઉસૈમીન રહમતુલ્લાહ અલૈહ ને યહ નિમ્ન નિશાનિયોं બયાન કિયા હૈ :

વહ રાત પુરનૂર તથા ચમકદાર હોગી , દૂસરી રાતોં કે હિસાબ સે ઉસ રાત મોમિન અધિક સુકૂન તથા ઇતમિનાન મહસૂસ કરેગા , હવાયેં ધીમી ચાલ સે ચલેંગાં આંધી તૂફાન નહીં હોગા વાતાવરણ દિલરુબા ઔર મનોહર હોગા, ઉસ રાત મોમિન કિયામુલ્લૈલ મેં અધિક સ્વાદ તથા લજ્જત મહસૂસ કરેગા, અન્ય દિનોં કે પ્રકાર ઉસ દિન સૂર્ય નહીં ઉદય હોગા બલિક સાફ સુથરા ઔર બિના કિરણે ઉદય હોગા , યાદ રહે હો ! સકતા હૈ કિ ઇન નિશાનિયોં કો કોઈ મહસૂસ કરે તથા દૂસરા મહસૂસ ન કરે તો ઇસકા યહ અર્થ નહીં હૈ કિ ઉસ વર્ષ લૈલતુલકદ્ર નહીં હૈ યા રમજાન કે અન્તિમ દસ રાતોં મેં અલ્લાહ કી ઇબાદત મેં મેહનત ન કરે । ઇસી પ્રકાર અગર કિસી કો ઇસકે પાને કા ઇહસાસ હો તો ઉસે છિપાના ચાહિયે કિસી સે બયાન નહીં કરના ચાહિયે ।

लोगों में जो यह बात प्रसिद्ध है कि शबे क़द्र 15 शाबान की रात है तो यह बात बिल्कुल गलत है, बल्कि यह रमज़ान में है, क्योंकि कुरआन मुबारक रात में उतारा गया अल्लाह पाक ने फरमाया :

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ (سورة دخان) (हम ने इसे मबारक रात में उतारा निःसंदेह हम डराने वाले हैं। (सूरः दुखान-3)

तथा इस मुबारक रात से मुराद क़द्र वाली रात है अल्लाह ने फरमाया:

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْفَدْرِ (سورة القدر) (हमने इसे क़द्र वाली रात में उतारा (सूरः क़द्र -1)

और यह क़द्र वाली रात रमज़ान में है न कि शबान में क्यों कि कुरआन रमज़ान के महीने में उतारा गया जैसा कि अल्लाह ने फरमाया:

{شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ} [البقرة: 185] (रमज़ान का महीना वह है, जिस में कुरआन उतारा गया, (सूरह बकरः - 185)

मेरे मुसलमान भाई बहनों ! इस्लाम में शबे बरात के नाम से कोई रात नहीं है तथा 15 शाबान की रात में खास तौर पर कोई भी इबादत प्यारे नवी

ساللہاللہاہु اَللّٰہِیْہِ وَسَلَّمَ سے ساَبیت نہیں ہے اِس سیلسلے مें جو کुछ کہا جاتا ہے وہ سब جَرِیف یا گھٹی ہُرِّی بातें ہے ، آپ اِس رات اَللّٰہِ کی کشما چاہتے ہیں تو تَعْبُدِ اپنا کر شِرکَ چوڈ دें تथا اپنے دِل سے مُسالماَنों کا کینا کپٹ چل نیکاَل دें । یاد رخے شَبَّہِ بَرَاتِ مَنَانَا خُرَافَاتِ، بِدَعَتِ ہے، اِس دِن یا اِس رات کَوِّی خاسِ اِبَادَتِ جैسے رَوْجُہِ رَخَنَاءِ، نَفَلَےِ پَدَنَاءِ، کَبَرَوْنَےِ کی جِیَارَتِ کرنا، سَدَکَےِ کرنا یا پَکَوَانِ پَکَانَاءِ، مَسْجِدَوْنَےِ یا سَدَکَوْنَےِ کا چِراغَیْ کرنا، فَاتِیْہا وَغَرَہ کرنا اَللّٰہِ اُور عَسَکَرِ نَبِیِ کی نَافَرَمَانِی ہے । ہمَا رے نَبِیِ سے خَاصَ کر اِس دِن یا اِس رات کَوِّی خُسُوسِی اِبَادَتِ سَهِیْ هَدَیَسَ سے ساَبیت نہیں ہے । اَللّٰہِ ہمَوْنِ بِدَعَاتِ سے بَچَاَءِ آمِین

इस लिए रमज़ान के अन्तिम दस रातों में अधिक से अधिक अल्लाह की इबादत करनी चाहिये तथा अपने संतान , अहल व अयाल को भी विशेष रूप से इस पर उक्साना चाहिये , आइशा रजियल्लाहु अन्हा कहती हैं [जब रमज़ान के अन्तिम दस दिन

پر اَرْبَحْ ہوتے تو رَسُولُ سَلَّمَ اَللَّٰهُوَ اَلَّٰهُوَ وَسَلَّمَ
یَبَادَتْ کے لیے کمر کس لے تے�ے اُور اپنے گھر
والوں کو بھی جگاتے�ے] (بُو�اری و مُسْلِم)

دُوسَرِیِ حَدِیثَ مِنْ هُنْدِیَةَ کیا : (جیسے کوئی کدر والی رات میں
کیا م-نفلی نماز-کیا تو اسکے پیشے پاپ
کشما کر دیے جائیں گے) (مُعْتَفَکُ اَللَّٰهُ)

کدر والی رات پورے سال کی افسوس ل تھا
مُباڑک رات ہے

شَبَّـكَدْرَ کی دُعَاء :

شَبَّـکَدْرَ میں اधیک سے اधیک دُعَاء کرنی چاہیے
کیونکہ اس میں دُعَاء جیداً سُوكَار ہوتی ہے । مارِی
آیشَہ نے رَسُولُ سَلَّمَ اَللَّٰهُوَ اَلَّٰهُوَ وَسَلَّمَ سے
پوچھا اگر مُझے انُوبُوت ہو جائے کہ یہ رات کدر
کی رات ہے تو میں کیا کہوں ؟ آپ نے آدِش دیا
کہو:

اللَّٰهُمَّ إِنِّي عَفْوٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي " ۝

اللَّٰهُوَ اَلَّٰهُوَ وَسَلَّمَ اِنْنَکا اَفْوَوْنَ تُعْلِمُ بِمَا
فَأَنْتَ فِي عَوْنَانِ اَنْتَ اَنْتَ

(या अल्लाह तू क्षमा करने वाल है क्षमा करना पसन्द करता है तू मुझे क्षमा करदे) (सुनने इब्ने माजह)

याद रहे कि !

❖ शबेक़द्र से महरूमी तथा वंचन प्रत्येक खैर और भली से महरूमी है तथा इस से असफल ही महरूम होगा (सही इब्ने माजह. अलबानी. भाग : 2 पेज 456)

❖ नवी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में जितनी मेहनत करते थे किसी अन्य दिन में नहीं (सही मुस्लिम ह०न० 1166)

❖ जब रमज़ान के अन्तिम दस दिन प्रारंभ होते तो आप पूरी रात इबादत में जागते, अपने घर वालों को जगाते, प्रयास करते तथा अपनी कमर कस लेते । (अल्लाह की इबादत के लिये कोशिश करते तथा अपनी बीवियों से अलग हो जाते । (मुत्तफ़क़अलैह)

❖ जिसने ईमान तथा सवाब के इरादे से लैलतुलक़द्र में कियामुल्लैल यानी तरावीह पढ़ी

उसके पिछले पाप क्षमा कर दिये जायेंगे
(مُتّفَكِّرُ اُلّاہ)

● शबेकद्र पूरे वर्ष की रातों में सब से अफ़ज़ल रात है, जुमा की रात हफ़ते की रातों में सब से अफ़ज़ल रात है, साल के दिनों में सबसे अफ़ज़ल दिन 9 तथा 10 ज़िल्हज्जह है, ज़िल्हज्जह के शुरू के दस दिन रमज़ान के अन्तिम दस दिनों से अफ़ज़ल हैं, रमज़ान की अन्तिम दस रातें ज़िल्हज्जह की अन्तिम दस रातों से अफ़ज़ल हैं (जादुल्मआद, इन्ने क़ायिम भाग 1 पेज 56-58)

5- میسکینوں، کنگالوں، نیر்஧نोں تथا ان्य لوگوں کو خانا خیلانا:

ابُدْلَلَاهُ بْنُ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا كहतے ہیں کہ ایک آدمی نے رسول سلسلہ اعلیٰ اُلّاہ کے واسطے پر شن کیا کہ اسلام میں کون سا کارب وہتر ہے؟ آپ نے فرمایا : [خانا خیلانا تو تھا ہر عالمی آدمی سے سلام کرو جس کو پہچانتے ہو یا نہیں پہچانتے ہو] (بُو�َارِي و مُسْلِم)

6- سौم(رَوْجَاءُ الدِّينِ) رکھنے والوں کو افْتَار کرانا:

اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَعْلَمُ اعلیٰ اُلّاہ کے رسم نے فرمایا : [جس نے کسی

(सौम)रोज़ा रखने वाले को इफ्तारर कराया तो उसके लिए बिना रोज़ा रखने वाले के फल(सवाब) में कमी के उसके सवाब के समान सवाब होगा] (सही हुलजामे-6415)

7- एअूतिकाफ़ करना: एअूतिकाफ़ का अर्थ है अल्लाह की इबादत की नियत से किसी का विशिष्ट तथा खास शर्तों के साथ खास हालत पर खास समय में ऐसी मस्जिद में ठहरना जिसमें जमाअत के साथ सलात अदा की जाती हो ।

एअूतिकाफ़ की शर्तें :

1- इस्लाम 2- बुद्धि 3- तमीज़ जो बालिग़ न हो प्रन्तु तमीज़ की उमर हो जो कि सात वर्ष है 4- नियत 5- मस्जिद 6- ऐसी मस्जिद जिसमें जमाअत के साथ सलात अदा की जाती हो ।

7- बड़ी नापाकी से पाकी | (अस्सियाम फिल इस्लाम, सईद क़हतानी, 450-452)

﴿एअूतिकाफ़ सुन्नत है प्रन्तु अगर नज़र माना है तो वाजिब होगा । अल्लाह पाक ने फरमाया:

وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ [سورة البقرة]

(और वीवियोंसे उससमयहमविस्तृतरी न करो जब कि तुम मस्जिद में एअूतिकाफ में हो) सूरह बक़रह, 187 हदीस में है कि (नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में ऐतेकाफ करते थे यहाँ तक कि आप का देहाँत हो गया फिर आपके बाद आप की पत्नियों ने एअूतेकाफ किया) (मुत्तफ़क़अलैह)

इस का सुबूत कुरआन तथा हदीस से है अथवा यह वह इबादत है जिस में विभिन्न इबादतें इकट्ठा हो जाती हैं जैसे कुरआन की तिलावत, नमाज़, ज़िक्र व अज़्कार, दुआ, नफली सलातें, तौबा, इस्तिग़फ़ार आदि ।

और सारे उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि एअूतिकाफ केवल उसी पर वाजिब है जो नज़र मान कर अपने ऊपर वाजिब करले。(मुग़नी, इब्ने कुदामह भाग: 6 पेज 407) एअूतिकाफ़ वह महत्वपूर्ण इबादत तथा उपासना है जिस में एअूतिकाफ़ करने वाल अपना शरीर, दिल, प्राण सम्पूर्ण रूप से अल्लाह की इबादत के हावले कर देता है ताकि उसे अल्लाह की खुशी तथा प्रसन्नता मिल जाये , उसे स्वर्ग दे दे, उसके पद को

बढ़ा दे, और वह संसार के काम काज से बिल्कुल अलग थलग हो जाये इसी कारण हमें इसके विषय में ज्ञान प्राप्त करनी चाहिये ।

एअृतिकाफ़ के सही होने के लिए नियम तथा ऐसी मस्जिद का होना शर्त है जिस में जमाअत के साथ सलात अदा की जाती है , एअृतिकाफ़ घंटा दो घंटा के लिए भी हो सकता है तथा एक दिन एक रात भी । (शरहुल उमदह. इब्ने तैमिय्यह, भाग: 2 पेज 751. अलफुरूह. इब्ने मुफ्लेह भाग : 5 पेज 143) वैसे रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में एअृतिकाफ़ करना अफ़ज़ल है क्योंकि नवी सल्लल्लाहु अूलैहि वसल्लम ने ऐसा सदेव किया है बल्कि एक वर्ष की क़ज़ा भी की है तथा इस इबादत पर आप ने उभारा भी है और आप के बाद आप की बीवियों ने भी एअृतिकाफ़ किया है ।

(देखें, सहीबुखारी ह०न◦ 2026 -2923 -2016 सही मुस्लिम ह०न◦ 1171-1173- 1167 सुनन तिरमिज़ी ह०न◦ 803)

﴿ जब कोई मुसलमान रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में एअृतिकाफ़ करना चाहे तो वह एअृतिकाफ़ के स्थान में 20 रमज़ान को सूर्य डूबने से पहले

दाखिल हो जाये ताकि 21 की रात अपने एअूतिकाफ के स्थान में पा जाए (शरह उमदतिल अहकाम भाग: 2 पेज 779)

और एअूतिकाफ के स्थान से ईद की रात सूर्य डूबने के बाद निकल सकता है और अगर चाहे तो ईद की सलात के समय निकले (मुगनी, इब्ने कुदामह भाग : 4 पेज 590)

﴿ एअूतिकाफ में बैठने वाले को चाहिये कि वह अपने आप को अल्लाह की इबादत के लिए खाली कर ले और उन समय के अतिरिक्त जिन में सलात(नमाज़)पढ़ने से रोका गया है अधिक से अधिक सलात(नमाज़) पढ़े चिन्तन के साथ अधिक कुरआन की तिलावत करे, अल्लाह का ज़िक्र , अज़कार करे दुआ करे अल्लाह से तौबा करे, क्षमा याचना तथा इस्तिग़फार करे , बेकार बातों तथा कामों और देखावा से बचे ।

﴿ एअूतिकाफ में बैठने वाला अपनी हर ऐसी ज़रूरत के लिए मस्जिद से निकल सकता है जिसके लिए निकलना जरूरी है । जैसे पाखाना पेशा, वुजू , स्नान करना, खाने पीने के लिए अगर उसके पास

कोई खाना लाने वाला न हो , जुमा की सलात के लिए, अनिवार्य गवाही देने के लिए, अपने या अपने संतान के बारे में फितने के डर से, बीमारी. महिला का हैज़ या निफास आजान , पति के देहाँत की इद्दत के लिये (मुगनी, इब्ने कुदामह भाग : 4-पेज 465 से 469) इस से उसका एअ्रतिकाफ भंग नहीं होगा । (शरहुल उमदह, इब्ने तैमिय्यह, भाग: 2 पेज 802-842)

﴿ جنाज़ह में जाने के लिए या रोगी का हाल चाल लेने के लिए या पिता की जियारत के लिये मस्जिद से नहीं निकल सकता , हाँ अगर उसने शुरू में इसकी शर्त लगा ली है तब जा सकता है (शरहुल उमदह, इब्ने तैमिय्यह, भाग : 2 पेज 810)

﴿ बाजार में तेजारत के लिये, पत्नी से संभोग करने के लिये, नहीं निकलेगा और अगर निकलेगा तो उसका एअ्रतिकाफ भंग हो जायेगा। (مجالیس شہر رمذان, इब्ने عسَمیٰن-245-246)

﴿ एअ्रतेकाफ में बैठने वाला मस्जिद में अपने लिये छोटा खेमा लगा सकता है या कोई स्थान खास कर सकता है ।

﴿ एअूतिकाफ में बैठने वाले की पत्नी बात चीत करने तथा हाल चाल जानने के लिए पति के पास मस्जिद में आजा सकती, तथा आवश्यकतानुसार घर तक वह ला कर पहुँचा सकता है जैसा कि सफ़िय्यह रजियल्लाह अन्हा के हदीस में है । (मुतफ़क़अलैह) ॥

﴿ एअूतिकाफ में बैठने वाला इमामत कर सकता है तथा जुमा का खुतबा भी दे सकता है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने अपने देहांत तक एअूतिकाफ किया है । रमज़ान के अन्तिम दस दिन में एअूतिकाफ करते थे परन्तु जिस वर्ष देहांत हुवा आप ने बीस दिन का एअूतिकाफ किया (सही بُخَارِي)

﴿ पति की अनुमति के बाद अगर फितने का खतरा ना हो तथा उनके लिए पुरुषों से अलग खेमा हो तो महिलायें भी मस्जिद में ऐतेकाफ कर सकती हैं घर में नहीं क्यों कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियाँ मस्जिद में एअूतिकाफ़ करती थीं । (सही بُخَارِي -2033)

घर में जो नमाज़ पढ़ने के लिये स्थान खास कर लिया है वह मस्जिद नहीं है क्यों कि उसे बेचा जा सकता है तथा अपने अन्य कार्य में प्रयोग किया जा सकता है, उसमें हैज़ व निफास वाली महिला सो सकती है आदि इस लिये जो लोग कहते हैं कि घर की मस्जिद में औरत एअूतिकाफ़ कर सकती है सही नहीं है ।

﴿ बिना जरूरत जान बूझ कर मस्जिद में एअूतिकाफ़ के स्थान से निकलने, हम बिसतरी करने, नशे से बेहोश होने, इस्लाम से निकल (मुरतद हो जाने से) एअूतिकाफ़ बातिल तथा भंग हो जाये गा । (मुगनी, इब्ने कुदामाह भाग : 4 पेज 628)

﴿ इस्तेहाज़ह वाली औरत (जिस की माहवारी खराब हो) मस्जिद में एअूतिकाफ़ कर सकती है क्यों कि वह पाक औरत के प्रकार है प्रन्तु मस्जिद की सफाई का ध्यान रखना जरूरी है। अल्लाह के रसूल की कुछ ऐसी वीवियाँ आप के साथ एअूतिकाफ़ करती थीं । (सही बुखारी, ह.न. 2037)

﴿ मस्जिद में खाना पीना जायज़ है। अब्दुल्लाह बिन् हारिस कहते हैं कि : हम लोग अल्लाह के रसूल

ساللہ لالہ اُنہیں اب لائے ہیں وہ ساللہ م کے جماؤ نے میں مسجد میں روتی تथا ماس خاتے ہے । (ابنے ماجہ ح ۰۳۳۰۰)

 اَعْذِتُكَافُ میں پتنی اپنے پتی کے سیر دھو سکتی ہے تथا کंधی کر سکتی ہے ، مارڈ آیشہ کہتی ہے کہ میں ہیج سے ہوتی آپ اَعْذِتُكَاف کی ہالات میں اپنے سیر ہماری اور نیکالتے اور میں یہ سے دھل دتی ہے । (معتکف اُنہیں)

اَعْذِتُكَاف کو باطل تथا بُنگ کر دئے والے کام

1- جان بُوझ کر بینا جڑھرہ مسجد یا یہ سیان سے نیکلنے جہاں اَعْذِتُكَاف میں بیٹھا ہے ، کیوں کہ آپ جب اُتے کاف کرتے تو بینا جڑھرہ گھر میں داخیل نہیں ہوتے ہے । (معتکف اُنہیں)

2- ہم بیسٹری چاہے رات ہی میں کیوں نہ ہو تथا مسجد کے باہر ہی کیوں نہ ہو اُنہیں نے فرمایا:

وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ [سورة البقرة]

(اور بیویوں سے یہ سیام ہم بیسٹری نہ کرو جب کہ تुم مسجد میں اَعْذِتُكَاف میں ہو) (سُورہ بکرہ، 187)

प्रन्तु रात में करने से केवल एअूतिकाफ़ भंग होगा
कफरराह वाजिब नहीं होगा । (मुग़नी, इन्ने कुदामह
भाग : 4 पेज 474)

3- नशा । (मुग़नी, इन्ने कुदामह भाग : 4 पेज 474)

4- इस्लाम से मुरतद हो जाना ।

कुछ نफ़لی روزے

इस्लाम में नफ़لी इबादतों की बड़ी महत्त्व है और खास तौर पर रोज़े की क्यों कि कियामत के दिन नफ़لी रोज़ों से फर्ज़ रोज़ों की कमी पूरी की जायेगी, यह नर्क से बचाव के लिये ढाल होगा आदि, इस लिए हमें अधिक से अधिक नफ़لी रोज़े रखने चाहिये, हम निम्न में अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से कुछ साबित नफ़لी रोज़ों को लिख रहे हैं ।

1- शव्वाल के ४(6) रोज़े : अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने रमज़ान के रोज़े रखे फिर उसके बाद शव्वाल के

छ(6) रोज़े रखे तो उसके लिए एक वर्ष रोज़े रखने के प्रकार होगा (सही मुस्लिम, हन० 1464)

2- ज़िलहिज्जह के महीने के शुरू के दस दिन के रोज़े :

इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इन दस दिनों के बनिसबत कोई दिन नहीं है जिनका नेक कर्म अल्लाह को उतना पसन्द हो जितना इन दिनों का, सहाबा ने कहा: अल्लाह के मार्ग में जेहाद भी नहीं ? आप ने फरमायाः अल्लाह के मर्ग में जेहाद भी नहीं सिवाय उस आदमी के जो अपनी जान, धन ले कर निकला तथा कुछ ले कर वापस न हुवा(शहीद हो गया)। (सही बुखारी, हन० 969)

3- हज्ज पर जाने वालों के अतिरिक्त अरफह 9 ज़िलहिज्जह का रोज़हः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे अल्लाह से आशा है कि इस से एक वर्ष आगे तथा एक वर्ष पीछे के(दो वर्ष) पाप क्षमा कर देगा (सही मुस्लिम, हन० 1166)

4- मुहर्रम के महीने का रोज़हः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सब

से अफ़ज़ल रोज़ह अल्लाह के महीने मुहर्रम का रोज़ह है और फर्ज़ नमाज़ के बाद सब से अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ (तहज्जुद) है। (सही मुस्लिम, हनूम 1163)

5- 9-10 मुहर्रम का रोज़ह: रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया: आशूरा के रोज़े के बारे में मुझे अल्लाह से आशा है कि इस से पिछले वर्ष का पाप क्षमा कर देगा। (सही मुस्लिम, हनूम 1162)

6- शअबान के महीने में 15 शअबान से पहले अधिक से अधिक रोज़े रखना क्यों कि अल्लाह के रसूल इस महीने में अधिक से अधिक रोज़े रखते थे (मुत्तफ़क अलैह)

7- हर सोमवार तथा जुमेरात के दिन रोज़े रखना: रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया: यह वह दो दिन हैं जिन में अल्लाह के पास अमल पेश किये जाते हैं तो मैं चाहता हूँ कि मेरे अमल पेश किये जायें और मैं रोज़े से रहूँ, (अबूदाऊद हनूम: 2436)

�्यान दें !अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीس है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : सोमवा तथा जुमेरात के दिन स्वर्ग (जन्नत)के दरवाजे खोले जाते हैं तथा हर उस मुस्लिम को क्षमा कर दिया जाता है जो अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता, सिवाय उस आदमी के जिसके दिल में अपने (मुसलमान) भाई का कीना कपट हो, कहा जाता हैः इन्हें छोड़ दो यहाँ तक कि आपस में दोनों समझवता कर लें, इन्हें छोड़ दो यहाँ तक कि आपस में दोनों समझवता कर लें, इन्हें छोड़ दो यहाँ तक कि आपस में दोनों समझवता कर लें, (सही मुस्लिम, ह०न० 2565) अल्लाह हमारे दिल को हर मुसलमान के बारे में साफ रखे ,आमीن

8- अरबी महीने के अनुसार दिनांक 13-14-15 अय्यामे बीज़ का रोज़ह, यह एक वर्ष रोज़े के बराबर है (अबूदाऊद, ह०न० 2449)

इन नफली रोजों में इख्लास हो देखावा न हो, और जरूरत के हिसाब से मेहमान आने पर, अगर कोई खाने की दावत दे और दावत देने वाले को न खाने पर बुरा लगे तो नफली रोज़ह तोड़ दें, औरत का

पति अगर मौजूद है तो बिना उसकी अनुमति के नफली रोज़ह न रखे । अल्लाह पाक हमें इख्लास के साथ अधिक से अधिक नफली रोजे रखने की तौफ़ीक दे आमीन ।

● निम्न दिनों में रोज़ह रखना हराम है !

- 1- ईदुलफित्र तथा ईदुलअज़हा(ईद, बकरईद) के दिन, (मुत्फ़क अलैह)
- 2- अय्यामे तशरीक 11, 12, 13 ज़िलहिज्जह के दिन (सही मुस्लि, ह०न॰ 1142)
- 3- शक के दिन और यह 30 शअबान का दिन है, (अबूदाऊद, ह०न॰ 2334)
- 4- केवल जुमा के दिन या केवल सनीचर के दिन अरफह के रोज़े के सिवाय नफली रोजह रखने को उलमा ने मकरूह कहा है अगर कोई रखना चाहता है तो आगे या पीछे के दिन मिला ले (शरहुल मुमतेअ भाग 6पेज 479)

سادک़ए فِتْر (فِتْرَانَ):

سادک़एफित्र प्रत्यक रमज़ान पूरे करने वाले बालिग़ नाबालिग़ आज़ाद, गुलाम मुसलमान स्त्री तथा पुरुष

سab पर बराबर अनिवार्य तथा वाजिब है चाहे उसने سौम(रोज़ा) रखा हो या न रखा हो ।

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि: [नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान का سदक़-ए-फ़ित्र एक साअ़ खुजूर या एक साअ़ जब आज़ाद, गुलाम, महिला, पुरुष, छोटे तथा बड़े मुसलमान पर अनिवार्य किया है] (बुखारी, मुस्लिम) एक साअ़ लग भग ढाई किलो ग्राम होता है जो ईद की रात सूर्य डूबने के बाद अनिवार्य होता है ।

سادک-ए-فِیتْر اننیوواریٰ(واجیب) ہونے کی شرائی :

1- इस्लाम 2- मालदारी अर्थात् जिसके पास ईद के दिन और उसकी रात अपनी तथा अपने संतान या जिनका खर्च उसके ऊपर है और असल ज़रूरत से अधिक ढाई किलो हो ।

3- समय का प्रारंभ हो जाना, इसका समय ईद की रात सूर्य का डूब जान है ।

 **سادک-ए-فِیتْر اننیوواریٰ ہونے کی
ہیکمّت(نیتی)**

سادक-ए-فِیتْر اننیوواریٰ ہونے کی बहुत सी
ہیکمّتें(नीतियाँ) हैं जैसे :

1- سौم(روज़ा) رکھنے والے کو و্যर्थ تथा بےکار
باتوں سے پवित्र کرنا اتः سौم(روज़ा) کی کسمی
इس سے دُور हो जाती है।

2- میسکین ، کंگال لोگों کے بोجنا کا پ्रबंध
تथा ईद کے دین عَنْہُمْ بحکمَ الْعِلْمِ مَأْمَنَة سے بچانا
और عِنْكَ دِل مें پ्रسन्नता डालना ताकि ईद सारे
लोगों के लिए खुशी का दिन हो ।

3- مُسْلِمَانَوْنَ کے سभی وَرْ�َیْ کی همدardی تاکि
سभی لوگ اک سंگ खुशी मनाएँ ।

4- उसके समय में हकवालों तक पहुँचा कर
बड़ा सवाब प्राप्त करना ।

5- اَللّٰهُ نے سौم(روज़ा) رکھنے والों کो پُورے
مہینے سौم(روज़ा) رکھنے کا اَवَسَار دिया इس دया
تथा نِيمَت پر اَللّٰهُ کا آبَارَ اَدَاءَ کرنا ।
इसके اُतिरिक्त अनेक लाभ हैं ।)

سادکए فित्र انیوار्य(वाजिब) होने का समय:

سادکए فित्र رمज़ाن कے اُन्तिम دिन सूर्य डूबने
के पश्चात् انیوار्य होता है اتः अगर कोई ईद
की रात सूर्य डूबने के बाद पैदा हो तो उस पर
फित्रा नहीं है इसी प्रकार अगर رمज़ान के اُन्तिम

दिन सूर्य ढूबने से पहले मर जाये तो उस पर भी फित्रा नहीं है ।

سادکए فیतر نیکالنے کا سमय ।

ईद سے एक दिन या दो दिन पहले निकालना जायज़ है हाँ , ईद के दिन ईद की सलात(नमाज़) से पहले निकालना अफ़ज़ल तथा अनिवार्य , है और अगर किसी ने ईद की सालत के बाद बिना किसी दीनी कारण तथा शरई उजुर निकाला तो उसका फित्रा अदा नहीं होगा बल्कि यह आम दान हो जायेगा । क्यों कि नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्म ने ईद की सालत के लिए निकलने से पहले अदा करने का आदेश दिया है ।(مُعْتَفَكْ أَلْلَاهِ)

तथा اَبْدُुल्लाह बिन उमर ने बयान किया है कि: (लोग ईद से एक दिन या दो दिन पहले देते थे)(سہی بُخَارِیٰ, 1511)

अगर किसी ने ईद की सलात के बाद बिना किसी उजुर के निकाला तो उसका फित्रा अदा नहीं होगा और यह आम दान हो जायेगा । (ابू दूڑा ऊदई:1609) इस लिए प्रत्येक مुसलमान को हर इवादत इब्लास के

سماں ایسی سماں پر کرنہا چاہیے جو آپ سلسلہ احمدی
اُلائے ہیں وسلسلہ نے نیরیت کیا ہے ।

سدکے فیض کی میکدھار:

شہر کا آم خوراک جو لوگ خاتے ہیں ہر اک
کی اور سے 2 کیلو 500 گرام یا اک آدمی کے
چوللے سے چار چوللے ।

سدکے فیض میں کیا نیکالا جائے :

سدکے فیض میں کہوں عین چیزوں کا نیکالنا
سہی ہے جو اधیکتر مانعیتوں کی خوراک ہے یا نی
گللا । اعلیٰ احمدی کے رسول نے اسی کا آدेश دیا
ہے تथا سہابہؓ کیرام نے اسی ہی کیا ہے، نکد
رُنپے پے نیکالنا سہی نہیں ہے کیونکہ اسی
کرنہا کورآن اور حدیث سے سائبیت نہیں ہے ।
اگر کسی نے سدکے فیض کا مولیٰ اथوار کیمیت
نیکالا تو علامہ کے سہی مات انुسار فیض اदا
نہیں ہوگا کیونکہ اسی کرنہا رسول کی سُنّت کی
مُخالیفہ ہے ।

سऊدی اُرک کی فتاویٰ کمیٹی نے لیکھا ہے کہ:
سدکے فیض نکد نیکالنا جایز نہیں ہے کیونکہ
دلیلوں سے یہ سائبیت ہوتا ہے کہ گللا نیکالا

जाये तथा किसी की बात को ले कर शरई दलील
नहीं छोड़ी जायेगी अल्लाह के रसूल ने फरमाया है
कि :)(जिसने मेरे इस दीन में कोई नया काम गढ़ा
जो दीन से नहीं है तो वह ठुकराया हुवा काम
है)(फतावा लजनह दाइमह भाग9-379)

❖ सदक़ए फित्र केवल कंगाल तथा निर्धन को
दिया जायेगा उनके अतिरिक्त किसी अन्य को देना
उचित नहीं है इस लिए जहाँ फित्रा निकालने वाला
है वहाँ अगर कंगाल और मिस्कीन पाये जाते हैं तो
उन्ही को देगा किसी अन्य देश या स्थान भेजना
सही नहीं है हाँ अगर वहाँ फकीर तथा मिस्कीन न
पाये जायें तब किसी ऐसी स्थान भेजा जायेगा जहाँ
इसके लेने वाले हैं ।

❖ आदमी अपनी तथा हर उस आदमी का फित्रा
निकालेगा जिसका खरचा उसके ऊपर है जैसे बेवी
बच्चे, मातापिता आदि(फतावा इब्ने बाज़, भाग : 14 पेज
199)

ईद के कुछ आदाव

स्लाम धर्म में केवल दो ईद है, एक ईदुलफित्र जो
रमज़ान के बाद एक शवाल को होती है दूसरी

ईदुलअज़हा(बकरईद) जो दस ज़िल्हिज्जह को है । इसके अतिरिक्त इस्लाम में कोई अन्य ईद नहीं है । अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम जब मदीनह मुनव्वरह आये तो आप ने देखा कि मदीनह वाले दो दिन खेल कूद करते हैं तो आप ने पूछा (यह दो दिन कैसे हैं ? लोगों ने उत्तर दिया कि हम लोग जाहिलियत के समय में इन दिनों में खेला करते थे, जिस पर रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह ने तुम लोगों को इसके बदले इस से उत्तम तथा महान दिन दिया है, ईदुलअज़हा का दिन तथा ईदुलफित्र का दिन) (सही सुनन अबूदाऊदः 113) अतः इन दोनों ईदों के अतिरिक्त कुछ मुसलमानों ने दूसरे धर्म वालों से प्रभावित होकर नाना प्रकार की ईदैं गढ़ ली हैं उदाहरणतः ईद मीलादे नबी, ईद वफ़ात नबी, ईद मेअराजे नबी, ईद शबेबरात आदि । जब कि इन ईदों का इस्लाम धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है । इस लिये मुसलमानों को इस से बचना चाहिए । हम निम्न में ईद के कुछ आदाब लिख रहें हैं समस्त मुसलमानों से निवेदन हैं कि इसे अपनायें !

1- ईद का चाँद देखने के बाद अधिक से अधिक तक्बीर कहनी चाहिये, तक्बीर के शब्द यह हैं :

अल्लाहुअक्बरअल्लाहु अक्बर लाइलाहा इल्लल्लाहा
वल्लाहुअक्बर अल्लाहुअक्बर वलिल्लाहिल् हम्द)
(इरवाउलग़लील भाग : 3 पेज 12

2- ईद के दिन स्नान करना, धर्म अनुसार बनाव सिंगार करना, बिना दुरुपयोग(फुजूल खर्ची) अच्छे से अच्छे कपड़े पहनना (पुरुषों का कपड़ा टखने के ऊपर रहेगा) पुरुषों का सुगंध तथा खुशबू लगाना सुन्नत से सावित है। (सही बुखारी-948-

3- ईदुल्फित्र के दिन खुजूर खा कर ईदगाह जाना सुन्नत है। अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि : (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम बिना कुछ खुजूर खाये नहीं निकलते थे) तथा दूसरी हदीस में है कि (आप ताक़ (बेजोड़) खाते थे यानी 3-5-7-9 आदि)(सही बुखारी- 953)

और ईदुल् अज़हा के दिन ईदगाह से वापस आकर खाना सुन्नत है, बुरैदह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि (कुर्बानी के दिन रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम उस समय तक नहीं खाते थे जब

تک - یہ دنگاہ - سے واپس ن آ جاتے ہے (سہی
سوننے یہ نے ماجھ-1434)

4- یہ دن کے دین دharma انुسार خوشی مانا دharma
کی نیشنی ہے ات: عس دن عصیت خوشیاں
مانا، جایوج خل کوڈ کرنا، یسلاامی لوریاں
تھا گیتوں پڑنا، یسلاامی گیتوں کا مुشائیرہ
کرنا، اپنے بچھوں کے لیے جایوج اور مانموہک
خل کوڈ کا پربندھ کرنا جایوج ہے ।

5- یہ دن یہ دنگاہ پیدل جانا انما چاہیے
تھا یہ دن کی سلما (نماج) میدان- یہ دنگاہ- میں
پڑنا چاہیے، اب سرد رجیوللہا ہو انہو بیان
کرتے ہیں : (نماں سلسلہ ہو اعلیٰ ہی وساللہ
یہ دنلپیتھر تھا یہ دنل اجھا میں یہ دنگاہ جاتے ہے
(سہی بخواری و مسیلم)

ہاں جڑھر کے سماں مسیحی میں بھی یہ دن کی سلما
پڑنا نماں سلسلہ ہو اعلیٰ ہی وساللہ سے سائبیت
ہے، اسی پرکار یسلاامی پردا کا پربندھ کرکے
اورتھوں کو یہ دنگاہ لے جانے کا آدھر دیا ہے چاہے
وے ہی وجہ کی ہالات میں ہی کیوں نہ ہوں، وے سلما سے
الگ رہنگی تھا مسالمانوں کی دعا میں شامل

रहेंगी । इसी प्रकार किसी बाधा के समय सवारी से भी जा सकते हैं ।

6- ईद के दिन सुबह तड़के निकलना चाहिये अबू उमैर बिन अनस ने बयान किया है कि (कुछ लोगों ने चाँद देखा और नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए तो आप ने उन्हें दिन चढ़ने के बाद कुछ खाने और सुबह तड़के ईद के लिए निकलने का निर्देश दिया । (सही सुनन नसई ह०न० 1556)

7- ईदगाह में ईद की सलात से पहले कोई सलात नहीं है ,अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं : (नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुलफित्र के दिन निकले और ईद की सलात दो रकअत अदा की उस से पहले या उस के बाद कोई सलात न पढ़ी (मुत्तफ़क अलैह) हाँ अगर ईद की सलात मस्जिद में पढ़ने के लिए गये हैं तो तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ लेंगे ।

8- दोनों ईद की सलात के लिये अज़ान तथा इकामत नहीं है जाविर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि : (नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

हमें खुत्बह से पहले बिना अजान तथा इकामत के سलात पढ़ाई (सही सुनन नसई-6155)

9- ईद का समय चाशत(सूरज ऊपर होने) के समय तक है। यज़ीद बिन हूमैर रहबी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन बुस्र लोगों के साथ ईदुल्फितर या ईदुलअज़हा में निकले तो उन्हों ने इमाम के देर से आने को नापसन्द किया तथा कहा कि हम लोग इस समय ईद की सलात पढ़चुके होते थे , और वह समय(कराहत का समय निकलने के बाद) नफ़्ली सलाह का समय था । (सही सुनन अबूदाऊद-113)

10- ईद की सलात ईद के खुत्बह से पहले पढ़ी जायेगी, इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि : (अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम, अबू बक्र, उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों ईद की सलात खुत्बह से पहले पढ़ते थे (सही सुनन नसई -1563)

11- दोनों ईद की सलात केवल दो रकअत है(सही सुनन नसई-156)

ईद کی سلातِ اس پ्रकار پढ़ی جائے گی !

इमाम तक्बीर तहरीमह(पहली बार अल्लाहु अक्बर कहने) के बाद पहली रकअत में दुआए-सना फिर सात बार अल्लाहु अक्बर कहे और पीछे वाले भी उस के साथ कहते रहें फिर इमाम आवाज़ के साथ सूरह फातिहा पढ़े और पीछे वाले भी धीरे धीरे बिना आवाज़ के उसके साथ सूरह फातिहा पढ़ें ,फिर इमाम ऊँची आवाज़ के साथ सूरह अअला पढ़े फिर रुकूअ़ तथा सजदे करे ,फिर दूसरी रकअत के लिए खड़े होकर सूरह फातिहा पढ़ने से पहले पाँच बार अल्लाहु अक्बर कहे,फिर सूरह फातिहा और सूरह ग़ाशियह पढ़े फिर रुकूअ, सजदह और तशह्वुद के बाद दोनों ओर सलाम फेरे । ईद की سलात में पहली रकअत में सात बार और दूसरी रकअत में पाँच बार तक्बीर ज़्यायद है तथा पहली रकअत में सूरह अअला या सूरह क़ाफ़ और दूसरी रकअत में सूरह ग़ाशियह या सूरह इक्तरबत,, पढ़ना सुन्नत है (सही सुनन इब्ने माजह-1063)

12- दोनों ईद का खुत्बह ईद की सलात के बाद होगा, इबने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि : मैं गवाही देता हूँ कि मैं रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ ईद में हाज़िर हुवा तो आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पहले सलात अदा की फिर खुत्बह दिया-सही सुनन नसई

-1568-

13- दोनों ईद में केवल एक खुत्बह देना सुन्नत है। तथा ईद का खुत्बह सुनना सुन्नत है अनिवार्य नहीं, अब्दुल्लाह बिन साइब बयान करते हैं कि: (नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ईद की सलात पढ़ाई और फरमाया: जो जाना चाहे जा सकता है और जो रुकना चाहे रुक सकता है।) (सही सुनन नसई-1570)

14- ईद का खुत्बह देने वाले के लिए धर्म अनुसार बनाव सिंगार करना, अच्छे से अच्छा कपड़े पहनना सुन्नत है। अबू रमसह रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को खुत्बह देते हुए देखा आप के मुबारक शरीर पर दो हरी चादरें थीं (सही सुनन नसई-1571)

15- इमाम को दोनों ईद का खुत्बह खड़े हो कर लोगों की ओर मुन्ह करके देना चाहिए, इसी प्रकार ज़रूरत के समय किसी आदमी पर टेक भी लगा सकता है। खुत्बह में सब से पहले अल्लाह की परशंसा रसूल पर दरूद फिर लोगों को दीन की बात बताये, अल्लाह तथा उसके रसूल سल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की अनुसरण करने का शौक़ दिलाये अतः विशेष रूप से महिलाओं को भी सम्बोधित करे उन्हें अल्लाह से डरने, अल्लाह एवं रसूल की अनुसरण करने पर उभारते हुये दान एवं खैरात करने पर उभारे। (सही सुनन नसई-1573-1574-157)

16- अगर ईद का दिन जुमा के दिन पढ़ जाये तो जुमा के बारे में इजाज़त है चाहे जुमा की सलात पढ़े या न पढ़े (सही सुनन नसई-1590) हाँ अगर जुमा की सलात नहीं पढ़ी है तो जुहर की सलात चार रक़अत पढ़ना ज़रूरी है और अगर कोई मुतअय्यन (नियुक्त) खतीब है तो उसे खुत्बह देना होगा सिवाये इसके कि कोई भी जुमा की सलात पढ़ने न आये।

17- ईद के लिए एक मार्ग से जाना तथा दूसरे मार्ग से वापस आना सुन्नत है । (सही सुनन नसई-1082)

18- ईद से वापसी के बाद घर में दो रकअत सलात पढ़ना सुन्नत है, अबू सईद खुदरी बयान करते हैं कि: (रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद से पहले कोई सलात नहीं पढ़ते थे और जब घर वापस आते तो दो रकअत सालत पढ़ते । (सही सुनन इब्ने माजाह-1293)

19- ईद की मुबारक बादी देना उचित है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी एक दूसरे को तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिनका(अल्लाह पाक हमारी तथा तुम्हारी उपासना स्वीकार करे) कहा करते थे ।(फ़तहुल बारी भाग: 2 पेज 446)

20- अगर किसी गाँव के बासी केवल तीन मुसलमान हों तो उन लोगों को ईद की सलातपढ़नी चाहिये ।(शरहुल मुमतअ-इब्ने उसैमीन-भाग: 5 पेज 170)

21- यात्री के लिए ईद की सलात नहीं है क्यों कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्कह विजय

کرتے سमیں مکہ کا پذیرے تथا ایک شاپنگ مال تک
وہاں رہے پر نہ آپ نے یہ کی سلماں نہیں پڑھ کیون
کہ آپ یا تری خیلے ہیں । (مुగنی باغ : 3 پج 287)

22- اگر کسی کی یہ کی سلماں چھوٹ جائے تو
یہ کی سلماں کے پ्रکار دو رکھات پڑھ سکتا ہے
کیونکہ امام بخاری رحمہمہلکا ہو نے معاولہ کا
ہدیہ بیان کیا ہے کہ (انس بن مالک
رجیلہ لکھا ہو انہوں نے اپنے سے وکیل
کو جاویہ (جو بس رہ دش سے دو کوس دُری پر
�ا) میں آدھے دیا تو انہوں نے اپنے گھر والوں
کو جما کیا تھا ناگریکیوں کو یہ کی سلماں
کے پ्रکار یہ کی سلماں پڑھای) (سہی بخاری)

یہ کی گلطیا !

ہر مسلمان کو اہلکاہ پاک کی اور سے یہ
نیز دیا گیا ہے کہ وہ اپنے سارے دھرمیک
کاموں میں ماء اہلکاہ پاک تھا اسکے انہیں
سندھستا مسیحی سلسلہ لکھا ہو اعلیٰ ہی وسیلہ کا
آجھا پالن کرے پر نہ کوئی لوگوں نے اپنی اور سے
بہت کوئی گढھ لیا تھا اسے دھرم سامنہ کر
کرنے لگے اسی کا رعنی عصیت ہو گا کہ ہم کوئی

ऐसे कामों को भी बता दें जो लोग ईद में करते हैं जबकि यह आप سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित एवं साबित नहीं है।

1- ईद की पूरी रात ईबादत तथा उपासना में विताना। इस का कारण कुछ ज़ईफ हदीसें हैं।

जैसे यह हदीस कि (जिसने अल्लाह पाक के लिये सवाब चाहते हुए दोनों ईद की रातों को तहज्जुद पढ़ा तो उसका दिल उस दिन मुर्दह नहीं होगा जिस दिन सारे दिल मुरदह होजायेंगे) (यह हदीस ज़अीफ है, देखें ज़अीफुल् जामिअ-अलबानी -5742)

चुनांचे सारी रातों में से दोनों ईदों की रातों को ईबादत के लिये जागने की कोई सही हदीस नहीं है, हाँ अगर कोई तहज्जुद की सलात रोजाना पढ़ता है तो इन रातों में भी पढ़ सकता है मगर केवल दोनों ईदों की रातों में तहज्जुद पढ़ना या कोई खास ईबादत करना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है।

2- दिन तथा रात के पाँच समय की सलात छोड़ कर केवल ईद की सलात का एहतिमाम करना वे मुनासिब बात है जबकि बहुत सारे मुसलमान

केवल जुमा और ईद की सलात ही पढ़ते हैं, यह बहुत बड़ा गुनाह तथा पाप है बल्कि बहुत सारे उलमा ने ऐसे आदमी को काफिर कहा है।

3- ईद के दिन ईद की सलात के बाद मुर्दाँ की ज़ियारत के लिये क़ब्रस्तान जाना बिदअत है क्यों कि अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से या सहाबَّة किराम से साबित नहीं है जबकि सहाबा हर भलाई के कामों के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे।

4- लोगों का एक ही समय तथा एक आवाज़ ,एक लय में ईद की तक्बीर कहना हदीस से साबित नहीं है,इसी लिए इसे उलमाएं किराम ने ईद की बिदअतों में गिना है,हर आदमी अकेले अकेले खुद तक्बीर कहे, लोगों के साथ एक आवाज़ में न कहे क्योंकि ऐसा करना अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा से साबित नहीं है।

5 - ईद के दिन औरतों और बच्चों को ईदगाह न लेजाना । जबकि अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ोर देकर इन्हें ले जाने का

आदेश दिया है, यहाँ तक कि अगर औरतें हैज़ यानी माहवारी में हों तब भी, वह ईद की सालात नहीं पढ़ेंगी केवल मुसलमानों की दुआ में भागीदार रहेंगी । हाँ ज़रूरी है कि औरत इस्लामी परदे के साथ ईदगाह जाये और उनके लिए ईदगाह में अलग बैठने के लिये प्रबन्ध किया जाये।
अल्लाह तआला सभी मुसलमानों को इस्लाम की समझ दे, और अपने ईमान तथा अमल के बचाव का अवसर दे, आमीन ।

6- फ़िल्म, नाच गाने की महफिल सजाना, दाढ़ी छीलना, कपड़े में काफिरों, या मरदों का औरतों, या औरतों का मरदों की मुशाबहत तथा अनुरूपता करना, औरतों का घरों से बे परदा या गैर मुहरिमों के संग निकलना, या उनके संग अकेले में होना, खाने पीने, पहनने में बेजा खरच करना, इस दिन कंगालों का ध्यान न रखना, नाते दारों से न मिलना आदि से बचना ज़रूरी है ।

अल्लाह पाक हमें हर पाप तथा धर्म की प्रत्येक मुखालिफ़त से बचाए और नेक बानए / आमीन

سائم(روجے) کی گلتیا :

اللہاہ پاک نے سائم(روجے) کو اس لی� انیوار्य کیا ہے تاکہ روجے رخنے والے کے دل مें اللہاہ کا سंयम تथا ڈر پیدا ہو، اسکا دل پ्रत्येक پاپ سے پवیٹ ہو جائے، اسکے اخलاک اُवं نیتیکتا ٹیکٹاک ہو جائے । اتھ روجہ جیتنा ہی شارع اہکام کے انुسार ہوگا۔ عیناً ہی اسکا لام تھا فل اधیک ہوگا، پرنتु بहت سے روجے رخنے والوں کے روجے کے آداب پر�یان نہ دینے کے کارण کوچھ اُسی گلتیا ہو جاتی ہے جن سے عینکے سواب میں کمی آ جاتی ہے । ہم نیم میں کوچھ اُسی گلتیا لی� رہے ہیں جن سے بچنا چاہیے ।

1- کوچھ لوگ رمذان کی فوجیلتوں (پرمुख تھاؤں) تھا مسایل کے نا جاننے کے کارण اس مہینے کا ایسٹیکبوا (سواگت) بھی انی مہینے کے پ्रکار کرتے ہیں، تھا کوچھ لوگ اس مہینے کے آنے سے پہلے خانے پینے کے سامانوں کی تیاری میں لگ جاتے ہیں جب کہ ہم اُن اللہاہ کی فرمائیں برداری کی تیاری میں لگنا چاہیے، اپنے سभی پاؤں سے

سچ्ची तौबह यानी क्षमायाचना करके कंगालों
तथा गरीबों पर भी ध्यान देना चाहिये । अतः
इखलास और नबी سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की
سੁਨਤ انुਸार वह सभी इबादतें करने में पूरी
ਮैहनत करनी चाहिये जिन से अल्लाह खुश होता है

2- रमज़ान के महीने से खुश होने के बजाये
जल्द इसके समाप्त होने की आशा करना और
अल्लाह की इताअत की मिठास को न महसूस
करना, यहाँ तक कि कुछ लोग केवल अपने पास
पडोस के रोजा रखने के कारण रोजा रखते हैं अतः
ऐसा करने वाला अपने आप को इस महीने के लाभ
से वंचित और महरूम रखता है ।

3- سौم(روजہ) के अहकाम व मसायल के
जानने की कोशिश न करना और न ही किसी से
پूछना । نِسْدَهْ رمज़ान का سौم(روजہ)फर्ज് एवं
अनिवार्य है अतः एक महान उपासना तथा इबादत
भी । इस लिए प्रत्येक मुसलमान पर अनिवार्य तथा
वاجिब है कि वे सही तरीके से रोजा रखना सीखें
और रोजे के अरकान (आधार)वाजिबात, سुन्नतें,

کین کین چیزوں سے رोزا ٹوٹ جاتا ہے یا یہ سکا سوا ب کم ہو جاتا ہے اسچھے پ्रکار سے جانتے ।

4- سُؤم(روجہ) کی ہالت میں پاپ تथا گुناہ کے کاموں سے نا بچنا، اتہ: بہت سے روچے رکھنے والے یا جان بُوڈھ کر خانے، پینے، پتنی سے ہم بیسٹری یا انہیں یہ چیزوں سے بچتے ہیں جیسے روزا ٹوٹ جاتا ہے پرنتو گیبیت، چوگلی، ڈوٹ بولنے ڈوٹ پر چلنے، گالی گولو ج، لانہ تاں (آکو ش) تथا ہرام چوچوں کے دेखنے یا سوننے آدی سے نہیں بچتے جبکہ آپ ساللہ لہاہ اعلیٰ ہی وساللہ نے فرمایا ہے: جو ڈوٹ بولنا اور یہ پر چلنے ن چوڈے تو اللہ اہ کو کوئی جڑھرت نہیں ہے کہ وہ اپنا خانا پینا چوڈے । (سہی بُو خاری)

5- یہ چیز کر تھا ادا کرنے کی تاکت رکھنے کے باوجود کوچھ سوچناتوں کو چوڈے دینا یہ سوچ کر کی روچے کی ہالت میں سا بیت نہیں ہے جیسے جو وال (سُو یَرْدَلَنے) کے باعث میسواک نا کرننا، ہلکے میں پانی جانے کے ڈر سے وُجھ کرتے سماں ناک میں پانی ن چढ़انا اور ن کوکلی کرننا جبکہ کہوں جو اس کوکلی کرنے سے روکتا

गया है। और मिसवाक ज़वाल(सूर्यढ़लने) से पहले तथा बाद में सावित है।

6- बार बार थूकना, थूक निगलने से रोज़ा टूट जाने का गुमान करना जबकि थूक निगलने से रोज़ा नहीं टूटता।

7- फज्ज से पहले या रात ही में। फर्ज़ रोज़ा की नियत ना करना, या नीयत के शब्द बोल कर (लफ़्ज़ी नीयत) करना, जैसे यह कहना कि मैं नीयत करता हूँ कल रोजा रखने की आदि। किसी भी इबादत की नीयत के शब्द अल्लाह के रसूल से सावित नहीं है।

8- केवल रमज़ान के महीने में अल्लाह को पहचानना तथा उसकी इबादत करना, और रमज़ान समाप्त होते ही पहली दीनी लापरवाही तथा पाप की ओर पलट जाना। ऐसा करने वाला रमज़ान से कोई लाभ न उठा सका क्योंकि जिस प्रकार रमज़ान का रब अल्लाह है उसी प्रकार सारे महीनों का रब अल्लाह है जिसका डर हमारे दिल में सदेव रहना चाहिये।

9- पेट खाली होने के कारण बात बात पर गुस्सा होना, तैश में आना, अशुभ व्यवहार अपनाना, जब कि रोज़ह रोज़दार के व्यवहार की सुधार करता है। इसी प्रकार अपने बहुमूल्य समय को अधिक सोने, गपशप, खेल कूद तथा अन्य ऐसे कामों में खोना जिसका लाभ के बजाये पाप हो।

10- शुरू रमज़ान में अल्लाह की इबादत, कुरआन की तिलावत, नफलें पढ़ने में चुसती तथा जैसे जैसे रमज़ान के दिन बीतते जायें सुसती तथा लापरवाही जबकि हमारे रसूल रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में अल्लाह की इबादत के लिए कमर कस लेते थे।

سےہری کی گلتویاں

سےہری کرنا سੁਨ്നت ہے اُللّاہ کے رسُول نے ہم میں اسکا ادेश دیا ہے تथا اُللّاہ پاک نے اچ्छے فل دینے کا وادا کیا ہے، پرنتु اُدھیکتر لوگ اس میں کوتاہی کرتے ہیں، اور سےہری کے لाभ سے مہرُّم رہتے ہیں، جैسے:

1 - سےہری ن کرنا، یہ سੁن्नت کے خلaf ہے، کیونکि ہم اے رسُول نے فرمایا ہے: سےہری

کارو، سہری کرنے میں بركت ہے । (بُو�اری و مُسْلِم) اور فرمایا: ہمارے تथا یہود و نصارا کے روزے میں ان்தर سہری خانا ہے । (سہی مُسْلِم)

2- آدھی رات یا فجر سے اک دو گنے پہلے سہری کر لئنا ایسا کرننا سُنّت کے خلائف تथا ویرشہ ہے । سُنّت یہ ہے کہ فجر ہونے سے پہلے سہری کی جائے۔ نبی ﷺ کے سلسلہ حادثہ اعلیٰ ہی واسطہ کے سہری کرنے تथا فجر کی سلات شुروع کرنے میں اتنا سماں رہتا ہے کہ اک آدمی پچاس آیت پڑھ سکے । اسی طریقے کے باعث تک خاتے پیتے رہنا جبکہ اجڑان سماں سے ہو رہی ہے نیسندھ ہم میں اپنے روزے میں چھٹ سے رہنا چاہیے । یا اتنا اधیک خا لئنا کہ پورے دن ڈکار آئے یا شریر باری لگے । بالکل ہلکا خانا چاہیے ।

3- سہری کرکے سو جانا اور فجر کی سلات جماعت سے ن پڑنا ।

4- خانے کے باعث کی دعوی : (اللَّهُمَّ لِلَّهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الْعَزِيزِ الْأَكْبَرِ مِنْ نَبِيٍّ وَمِنْ مَلَكٍ وَمِنْ إِنْسَانٍ وَمِنْ جِنْسَنَّ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ) ن پڑنا ।

ઇفٹارر کی گلاتیاں

1- ایفٹارر کا سمیت ہو جانے کے باعث بھی ایفٹارر نہ کرنا یا انجان کے ختم ہونے کے باعث ایفٹارر کرنا । جبکہ ہمارے رسل نے ایفٹارر کرنے میں جلدی کرنے کا آدیش دی�ا ہے ।

2- بینا بیسیمیللاہ پढ़ے ایفٹارر کرنے میں لگ جانا تथا انجان کا عصر نہ دینا جبکہ ہمارے رسل نے فرمایا ہے: جب انجان سुنو تو ویسے ہی کہو جیسا انجان دینے والा کہتا ہے ।
(مُتَّفَكِّرُ الْلَّٰہِ)

ہم خاتے پیتے بھی رہئے تथا انجان کا جواب بھی دتے رہئے ।

3- ایفٹارر کے سمیت دُعَا نہ کرنا یا ایفٹار کی دُعَا نہ پڑھنا ।

4- ایفٹارر میں بے جا خرچ یا انے کا پ्रکार کی پکوان میں گھر کی اورتائیں کا اس سے پہلے ہی لگ جانا تथا انیم ایجادتائیں کو بھول جانا آدی ।

کیا موللے کی گلاتیاں!

رمضان کا مہینا ویژہ روپ سے الہلیہ کی ایتاء ایضاً، آنحضرت اعلیٰ کی تھیں اس سے کریب ہونے کا

महीना है, अधिक से अधिक नेक कर्म करने तथा नेकियाँ बटोरने का महीना है। इस महीने में रात को खड़े होकर अल्लाह की इबादत करना नबी की सुन्नत है जिसे क़ियामुल्लैल या तरावीह या तहज्जुद कहते हैं। इसके बारे में बहुत से लोग कुछ लापरवाही करते हैं जैसे :

1- सुन्नत या नफ़्ल समझ कर तरावीह की नमाज़ पढ़ने में सुसंती. जबकि अधिकतर लोग अपने बहुमूल्य समय को अन्य ऐसे कामों में गवाँ देते हैं जिनका कोई लाभ नहीं बल्कि हानि है। यहाँ तक कि देखा गया है कि कुछ लोग मस्जिद के बाहर खड़े हो कर या घर में जाकर गप शप में लग जाते हैं प्रन्तु तरावीह नहीं पढ़ते। हमें तरावीह की नमाज़ जमाअत के साथ उतना पढ़ना चाहिये जितना इमाम पढ़ाता है ताकि पूरी रात क़ियामुल्लैल का सवाब और फल मिले।

2- कुछ इमाम तरावीह की नमाज़ पढ़ाने में इतनी जलदी करते हैं कि नमाज़ का मक्सद ही खो जाता है अतः न रुकूअ़ ठीक से करते और न सजदह, सुकून व इतमेनान बिल्कुल नहीं कुरआन

की तिलावत इतनी तेज़ी से करते हैं कि यअ़लमून,तअ़लमून के सिवाय कुछ पता नहीं चलता ,केवल रकाअत की गिन्ती पूरी करते हैं या किसी प्रकार कुरआन खत्म कर लेते हैं,जबकि ऐसा करना गलत है नमाज़ में सुकून व इतमिनान रुक्न है ।

3- ऐसा भी देखने में आया है कि बहुत से लोग इमाम से पहले रुकू़ में चले जाते या रुकू़ से सिर उठा लेते,ऐसे ही सज्दह में भी , जबकि यह सब इमाम के बाद करना चाहिये । अल्लाह के रसूल ने फरमाया : जब तुम में से कोई इमाम से पहले अपना सिर उठाता है तो अल्लाह से नहीं डरता कि वह उसका सिर गधे का सिर बना दे या उसका चेहरा गधे का चेहरा बना दे ।

4- तरावीह की नमाज़ में इमाम के पीछे हाथ में कुरआन लेकर इमाम के साथ पढ़ना ।

5- कुनूत की लम्बी लम्बी दुआएँ पढ़ना,उसमें बनावट करना,ऐसी दुआएँ पढ़ना जो रसूल سल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सावित नहीं है,चीख चीख कर दुआ करना अदि जबकि आप सल्लल्लाहु

اَلْلَّاهُمَّ وَسِلْلُمُ جَامِعُ الْمُؤْمِنِينَ دُعُّوا پسند کرتے ہے । تथا
یہ مام کو یعنی ہی آواز تے جکر نی چاہیے
جیسا کہ پیछے والے سون لئے کیونکہ اک بار سہابا
نے اکلہاں اکابر جو ر سے کہا تو آپ نے فرمایا:
ہے لوگو اپنے ڈپر دیا کرو یا نی اپنی آواز
دھیمی کرو تum گونگے، بہرے، گایب کو نہیں پوکارتے
ہو । (معطفہ اکلہ)

6- دُعُّوا میں چیخنا تथا تے ج تے ج آواز سے
رونا جس سے نماز پढنے والوں کو پرے شانی
ہو، کورآن پڑتے یا سونتے سماں رونا چاہیے پر نت
دھیرے سے بینا تے ج آواز کے اور جیسا کہ
آواز چیپانا چاہیے تاکہ دیکھاوے سے دور رہے ।

7- رمذان کے اننیتی دس دینوں کا اہتمام
نا کرنا تथا ان میں مبارک سماں کو خو دینا ।

8- بہت سے لوگ جن کی رمذان میں ایشان کی
نماز جماعت سے چوتھی جاتی ہے وہ باد میں آتے ہے
تथا تراویہ کی نماز چل رہی ہوتی ہے اور وہ
دوسری جماعت بننا کے پڑنے لگتے ہیں جبکہ اک
مسجد میں اک ہی سماں میں دو جماعت بنانے سے
روکا گیا ہے اسی کی وجہ سے چاہیے کہ ایشان کی نیت سے

تاریخیہ کی نماز میں میل جائے جیتنا امام کے ساتھ پائے پढ़ لئے اور امام کے سلام فرستے سماں سلام نا فرستے اپنی چار رکاًت پُوری کر کے فرستے ।

9- تاریخیہ کوئی نماز بینا خوشبُر و خوبصورت کے لامپر واہی سے پढنا । آپ نے دیکھا ہوگا کہ نماز میں خडے ہیں تथا دل دماغ کہیں اور ہے یا ڈینگ رہے ہیں بس کسی پ्रکار گنٹی پُوری ہو جائے اسی نماز کا کوئی لامپر نا ہوگا ।

9- شربیں کرننا । یہ اللہ کے رسالت سے سائبیت نہیں ہے ।

کورآن کی تلہیت میں لامپر واہی :

کورآن کی اجزاً میں تھا ہنکوک پر دیکھان نہ دینا ، کہ ول جلدی جلدی تلہیت کر کے ختم کر لینا ، یہ کے امر پر دیکھان نہ دینا । یہ یہ کی تلہیت ن کرننا । یہ مسیحیوں میں تے� آواز میں اس پ्रکار تلہیت کرننا کی دوسرے نماز پढنے والے کو پرے شانی ہے ، تلہیت کرتے سماں رُک کر دوسرے کاموں تھا گیر جرحتی باتوں میں لگ جانا ، تلہیت

के आदाब पर ध्यान ना देना ,अपने परिवार को कुरआन की तेलावत पर न उभारना आदि ।

رمज़ाن में औरतों की गलतियाँ :

अल्लाह ने मरदों(पुरुषों) के प्रकार औरतों को भी रमज़ान के महीने को बहुमूल्य तथा गनीमत समझने का हुक्म दिया है प्रन्तु अधिक्तर महिलायें इस महीने को अन्य महीने के प्रकार बिता देती हैं, अतः नाना प्रकार की गलतियाँ भी करती हैं हम चेतावनी के लिए निम्न में उनकी कुछ ग़लतियाँ लिख रहे हैं !

1- नाना प्रकार के पकवान पकाने में बहुमूल्य तथा क़ीमती समय खो देना तथा कुरआन की तेलावत, ज़िक्र व अज़कार और अल्लाह की इबादत में लापरवाही ।

2- कुछ औरतों का जमा हो कर ग़ीबत. चुग़ली. फ़िल्म देखना या अधिक्तर समय सोने में बिता देना या बाज़ारों में घूमना टहलना नेट तथा मुवाइल में बेकार समया बरबाद करना, अन्य महीने के प्रकार रमज़ान को बिताना आदि ।

3- बिना शरई उजुर(कारण) के घर में रोज़ह ना रखने वालों को खाना बना कर देना, तथा अपने बच्चों को रोज़े रखने की आदत न डालना और उन्हें नेकियों पर न उभारना ।

4- माहवारी या निफास(प्रसव रक्तबच्चे की पैदाइश से एक, दोदिन पहले या पैदाइश के बाद लग भग चालीस दिन या उससे कम जो महिला को खून आता है) में ज़िक्र व अज़्कार तथा दुआएँ न करना जबकि इस में केवल नमाज़, रोज़ह, कुरआन की तेलावत, क़अबा का तावफ, हमविस्तरी मना है प्रन्तु दुआएँ जैसे दरूद शरीफ, इस्तिग़फार, ज़बानी कुरआन की तेलावत, दीनी किताबें पढ़ना वगैरह मना नहीं है ।

5- इस्तेहाज़ह : (जिसे माहवारी की खराबी कहा जाता है) में नमाज़ रोज़े न रखना जब कि ऐसी महिला पाक महिला के प्रकार है ।

6- बन सज कर, खुशबू लगा कर बाजार या मस्जिद जाना जबकि किसी प्रकार की खुशबू लगा कर जो दूसरे की नाक तक पहुँचे घर से निकलने वाली औरत को ज़नाकार कहा गया है (मुस्नद

अहमद) या मस्जिद से निकलते समय मरदों तथा औरतों का मेल जोल ।

7- रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में ईद की तयारी में कीमती समय खो कर बाज़ार में या टेलरों के पास घूमना । जबकि यह सब काम पहले ही कर लेना चाहिये ।

8- रमज़ान की रातों में अपने पति के वाजिब हक ना अदा करना ।

अल्लाह पाक से दुआ है कि वह हमें रमज़ान के महीने का आदर तथा इसमें हर वह इबादत करने की तौफीक दे जिन्हें वह पसन्द करता है तथा प्रत्येक छोटे बड़े पाप से बचाए और रमज़ान के रोज़ों का छाप हमारी पूरी जीवन पर बाक़ी रखे , आमीन ।

आपका अपना

अताउर्रहमान पुत्र अबदुल्लाह सईदी

हरहटा, तुलसीपुर, जिला : बलरामपुर, यू.पी. 271208

आवाहक : इस्लामिक सेंटर अहसा, होफूफ

सऊदी अरब

ataurrahmansayeidi@gmail.com

youtube: ata sayeidi

विषय सूची

محتويات الكتاب

1	भूमिका	2	مقدمة المؤلف
2	रमज़ान की प्रमुखतायें	7	فضائل شهر رمضان
3	रोज़े की प्रमुखतायें	15	فضائل الصيام
4	रोज़े के लाभ	26	فوائد الصيام
5	रोज़े का अर्थ व हुक्म (आदेश)	28	مفهوم الصوم حكمه
6	रमज़ान का आरंभ होना	33	ثبوت دخول رمضان
7	रोज़े की شर्तें	36	شروط الصيام
8	रोज़े के आधार	44	أركان الصيام
9	रोज़ तोड़ने वाली चीज़ें	49	مسدلت الصيام
10	रोज़ में जायज़ काम	67	مباحات الصيام
11	रमज़ान में उज़्ज़ वाले	75	أهل الأعذار
12	फर्ज़ रोज़े की क़ज़ा	86	قضاء الصيام
13	रोज़ में हराम काम	90	محرمات في الصيام
14	रोज़े के आदाब	94	آداب الصيام

15	رمजّان مें افک़ज़ل کام	102	الأعمال المفضلة في رمضان
16	نافلی روزے	125	صيام التطوع
17	سادکاں فیض	129	صدقة الفطر
18	ईद کے آداب	134	آداب العيد
19	روزے کی غالتیاں	146	أخطاء في الصيام